ভালোবাসা সবার তরে
ঘৃণা নয়কো কারো 'পরে

The Ahmadi Fortnightly

লা ইলাহা ইল্লাল্লাহু মুহাম্মাদুর রাসুলুল্লাহ্

পাক্ষিক

আহ্‌মদী

নব পর্যায় ৭৫ বর্ষ | ১ম সংখ্যা

রেজি. নং-ডি. এ-১২ | ৩১ আষাঢ়, ১৪১৯ বঙ্গাব্দ | ২৫ শাবান, ১৪৩৩ হিজরি | ১৫ ওয়াফা, ১৩৯১ হি. শা. | ১৫ জুলাই, ২০১২ ঈসাব্দ

এই সংখ্যাতে থাকছে:

- হযরত খলীফাতুল মসীহ্ আল্ খামেস (আই.) প্রদত্ত
  ১ জুন ২০১২-এর জুমুআর খুতবা
  বিষয়: মানবতার অধিকার আদায়ের প্রতি উদাত্ত আহ্বান
- হযরত খলীফাতুল মসীহ্ আল্ খামেস (আই.) প্রদত্ত
  ৮ জুন ২০১২-এর জুমুআর খুতবা
  বিষয়: হল্যান্ড ও জার্মানীতে সাফল্যমন্ডিত সফরের বিবরণ
- শবে বরাত
  ধর্মীয় প্রেক্ষাপটে আদৌ কোন গুরুত্ব রাখে কী?
- কালের যাত্রাধ্বনি শুনিতে কি পাও?
- রোযার নিয়্যত
- স্বাগত পবিত্র মাহে রমযান
- বাংলার কিংবদন্তি
  জার্মানীর প্রথম মিশনারী
  খান সাহেব মৌলভী মোবারক আলী

Luxury Forever...

Bashundhara
Size : 1285-1750 sft

Dhanmondi
Size : 1350 sft

Zigatola
Size : 1285 sft

Nurer Chala
Size : 1210-1215 sft

Mirpur
Size : 1275-1350 sft

Nordha
Size : 1165-1350 sft

Land Wanted

Hot Line : 01817-033388
01819-296797
01817-143100

উত্তম বাসস্থানে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ
কৌণিক প্রপার্টিজ লিঃ

Member | REHAB

Kounik Properties Ltd

Corporate Office : Safwan Road, House # 193, Level # 6, Block # B, Bashundhara, Baridhara, Dhaka-1229, Bangladesh.

LOVE FOR ALL, HATRED FOR NONE

Veronica tours & travels

Travel Agent & Tour Operator

Muhammad Belal Ahmad (Tushar)
CEO

VERONICA TOURS & TRAVELS

207/2, West Kafrul, Begum Rokeya Swarani, Mirpur, Dhaka-1207

Phone: 88 02 9113176, Cell: 01733 004412, 01552 403395, E-mail: veronica@ithbd.com, tusharith@gmail.com

Our Sister Concern:

International Trading House (Garments Accessories Supplier),Hafsa Fashion Ltd. (Readymade Garments Manufacturer)
Awl Fashion (Buying Office), Color Clouds (Arts & Craft House), Bakers Bay (Bakery & Sweets)

Amecon
Since 1983
www.amecon-bd.net

Our Activities

- Crest
- Trophy
- Sign Board
- Metal Sign
- Acrylic Letter
- POP & Interior
- Digital Printing

MEMBER ARA

H-79/3, Block-E, Chairman Bari, Banani, Dhaka-1213
Tel: 8824945, 9895686, 03792003208, Fax: 880-2-8824945
E-mail: amecon2007@yahoo.com, amecon2008@gmail.com

AMECON
NIAZ METALLIC

Meer Hasan Ali Niaz
Founder

Mobile: 01713001536, 01973001536

H - 79, Block # H / 11, Banani Chairman Bari,
Zia Int'l Airport Road, Dhaka Tel : 9861046, 8856075, 8812459, Fax:8856075

Jessore Office	Bogra Office	Chittagong Office
Palbari More, New Khairtola	Kanas Gari, Sherpur Road	205, Baizid Bostami Road
Jessore. Tel : 67284	Bogra. Tel : 73315	Ctg. Tel : 682216

ameconniaz@yahoo.com

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

"আমি তোমার প্রচারকে পৃথিবীর প্রান্তে প্রান্তে পৌঁছাব।"

ইলহাম-হযরত মসীহ্ মাওউদ (আ.)

পৃথিবীর যে কোন প্রান্ত থেকে ইন্টারনেট-এর মাধ্যমে বাংলায়
যুগ-খলীফা (আই.) প্রদত্ত জুমুআর খুতবা ও সময়োপযোগী নির্দেশনাসহ
অমূল্য পুস্তকাদি, প্রবন্ধ, পাক্ষিক আহমদী ও অন্যান্য প্রকাশনা
পড়তে, শুনতে ও দেখতে **log in** করুন:

www.ahmadiyyabangla.org

www.alislam.org
www.mta.tv

আসুন, আমরা নিজে দেখি-পড়ি-শুনি এবং অন্যদেরকে উৎসাহিত করি।

সৌজন্যে:

KENTO ASIA LTD
Garments & Buying House

KENTO STUDIOS
IT & Game Developer

Head Office: House No: 16, Road No: 13, Sector 3, Uttata, Dhaka-1230, Bangladesh.
Tel:+880-2-8912349, 8919547, Fax:+880-2-8913396
Factory: Plot No: B-32, BSCIC Industrial Estate, Tongi, Gazipur, Bangladesh.
Tel: +880-2-9815695, 9815696
E-mail: managing-director@kento.org, info@kento.org
Web: www.kento.org

Right Management Consultants

Software Developer & MIS Solution Provider

Md. Musleh Uddin
CEO & MIS Consultants
BPL Bhaban, Suite # 303, 2nd floor, 89-89/1 Arambag, Motijheel, Dhaka-1000
E-mail: right_mc@yahoo.com, rightmc@gmail.com, web: www.rightmc.org
Cell: 01720 340 030, Land Phone: 7191965

আহমদীয়া মুসলিম জামা'তে বয়'আত গ্রহণের ৫ম ও ৬ষ্ঠ শর্তাবলী

বয়'আত গ্রহণকারী সর্বান্তকরণে অঙ্গীকার করবে

৫। সুখে-দুঃখে, কষ্টে-শান্তিতে, সম্পদে-বিপদে সকল অবস্থায় খোদা তাআলার সাথে বিশ্বস্ততা রক্ষা করবে। সকল অবস্থায় তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট থাকবে। তাঁর পথে প্রত্যেক লাঞ্ছনা-গঞ্জনা ও দুঃখ-কষ্ট বরণ করে নিতে প্রস্তুত থাকবে এবং সকল অবস্থায় তাঁর ফয়সালা মেনে নিবে। কোন বিপদ উপস্থিত হলে পশ্চাদপদ হবে না, বরং সম্মুখে অগ্রসর হবে।

৬। সামাজিক কদাচার পরিহার করবে। কুপ্রবৃত্তির অধীন হবে না। কুরআনের অনুশাসন ষোলআনা শিরোধার্য করবে এবং প্রত্যেক কাজে আল্লাহ্ ও রাসূলে করীম সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের আদেশকে জীবনের প্রতিক্ষেত্রে অনুসরণ করে চলবে।

সৌজন্যে :

ডিলার- জনতা সেনেটারী
হাজী পাড়া, রামপুরা, ঢাকা

গাজী
গুণে মানে সেরা
পানির পাম্প ব্যবহার করুন

COMPLETE VIEW OF
ADVANCED INDOOR
OUTDOOR SIGNAGE
& POP SYSTEMS

BRANCH OFFICE:
104, Chashmapahar
Sholoshahar 2 no gate
Nasirabad R/A Chittagong
Tel: 683555

HEAD OFFICE & FACTORY:
120/32, Shahjahanpur, Dhaka-1217
Tel: 9331306, Fax: 8350262
Mob: 01711344931, 01711-282439
e-mail : arrafi25@yahoo.com

SINCE 1979
AR-RAFI & CO.
Creating Recognition

New Vol. No. 75 | 1st Issue

The Ahmadi
Fortnightly

15th July, 2012 Tk. 15.00
Regd. No. D. A.-12

সেই ১৯৮৮ সাল থেকে

ধানসিড়ি রেস্তোরাঁ

ধানসিড়ি রেস্তোরা-১
নীচ তলা
রোড নং ৪৫, প্লট ৩২/এ, গুলশান- ২, ঢাকা- ১২১২
ফোন: ৯৮৮২১২৫, ৮৮৫০৩২৩,
০১৯১৩৯৪১৩৯২, ০১৯১৯২৭১২৮৬

ধানসিড়ি খাবার
অর্কিড প্লাজা (তৃতীয় তলা)
(রাপা প্লাজার দক্ষিণ পার্শ্বে)
ধানমন্ডি, ঢাকা।
ফোন : ৯১৩৬৭২২, ০১৮১৯০৯৯০৩৫

"এছাড়া আমাদের আর কোথাও কোন শাখা নেই"

মান এবং পরিমাণের নিশ্চয়তায় ধানসিড়ি রেস্তোরা-১, ধানসিড়ি রান্না আপনার ঘরের রান্না

Printed and Published by **Muhammad Nurul Islam Mithu** at Ahmadiyya Art Press, 4 Bakshi Bazar Road
Dhaka-1211 on behalf of Ahmadiyya Muslim Jama'at, Bangladesh
Editor in Charge: **Mohammad Habibullah**
Phone: 7300808, 7300849 Fax: 880-2-7300925, e-mail: pakkhik_ahmadi@yahoo.com

m¤úv`Kxq

mPxcÎ

†Lvk Avg‡``
gv‡n ighvb

mg‡qi AveZ‡b cwZ eQi gnvb mvabvi eZ wb‡q cweÎ gv‡n ighvb Avgv‡`i mvg‡b nwRi nq GK be Avb›` I DÏxcbv wb‡q| G gvm gvbevZvq mviv eQ‡ii cyÄxf~Z cvc-cwº¼jZv‡K a¦sq g‡Q cwii÷ Kivi DËg gvm| gvbyl‡i wPšv-†PZbv I ü`‡q i¨nvbxqvZ I Ava¨vwZ¥KZvi m~²xZj evqyeB‡q †`qvi Rb¨ cweÎ G gvm evi evi Avgv‡`i gv‡S G‡m nwRi nq|

Avi GB cweÎ gv‡n ighvb _cweÎ Kziv‡bi b‡i Av‡jwKZ nevi gvm, †e‡nkZx ¯ú›`‡b Av‡jwoZ n‡q †Lv`vi mšwó A‡šl‡Y be D`¨‡g Suvc‡q covi gvm| gnvb †Lv`v Avgv‡`i‡K Avevi I GKwU cweÎ gv‡n ighvb jvf Kivi †mšfvM¨ `vb K‡i‡Qb, Avjnvg`yjj vn|

†h‡nZzG cweÎ ighvb gvm †Lv`v‡K me‡P‡q Kv‡Q I GKv‡š wb‡Ri gZ K‡i Kv‡Q cvevi gvm, ZvB G gv‡mi Bev`Z †Lv`vi Kv‡Q me‡P‡q †ekx wcq| Avi G gv‡mi Bev`Z †Lv`v ZvAvjvi Kv‡Q GZB wcq †h, ev›`vi G gv‡mi Bev`‡Zi cwZ`vb n‡q hvb †Lv`v ZvAvjv ¯qs| Avi Avgv‡`i bex Kixg (mv.) e‡j‡Qb, gnvb Avjvn ZvAvjv e‡j‡Qb, ÔgvbyI hZ KvR K‡i Zv wb‡Ri Rb¨ Avi †ivhv ivLv nq AvgviB Rb¨| myZivs Awg wb‡RB Gi cyi¯‹viÕ|

ZvB Avgv‡`i ü`q½g Kiv DwPZ †h, †Kvb K‡gi wewbg‡q hw` Avjvn‡K cvIqv hvq Zvn‡j Gi †P‡q eo cyi¯‹vi Avi wK n‡Z cv‡i? Avi GgbB GK gnvb gvm Avgiv jvf Ki‡Z hw”Q| Avgiv Rwb, nhiZ ivmyj Kixg (mv.)I mvevb gv‡mi 15 ZwiL †_‡K igh‡bi c¯wZ †bqv ïiæ Ki‡Zb|

G gvm †h‡nZzcweÎ I gnv eiKZ Ges Kj¨v‡Yi gvm G Kvi‡Y GKRb gvbyl G gnvb gv‡m Zvi bdj Bev`Z¸‡jv hw` my›`i fv‡e cvjb K‡i Avi mg¯ †bK Avgj hw` Av‡iv ewo‡q †`q Zvn‡j AwZ mn‡RB Avgiv Avjvni wcqfvRb n‡Z cwi|

Avgv‡`i wcq bex nhiZ gyn¤§` †gv¯dv (mv.) G mgyhvM‡K LyeB fvjfv‡e Kv‡R jvMv‡Zb| G gv‡m Zui (mv.) Bev`‡Zi MwZ Ab¨ gv‡mi Zzjbvq Av‡iv †eMevb n‡Zv, `v‡bi nvZ S‡ov †e‡M cmwiZ n‡Zv| Avgiv ivmyj Kixg (mv.)-Gi D¤§Z, Zui cKZ.Abymvix| ZvB Avgv‡`i‡KI Zui c`vsK Abymi‡Y AvMZ G cweÎ ighvb gv‡m †bKxi G iv¯vq AMmigvb _vK‡Z n‡e|

15 RyjvB 2012

KziAvb kixd 2
nv`xm kixd 3
AgZ evYx 4
8 Ryb 2012-G c`Ë
RygAvi LyZev
nhiZ Ljxdvzj gmxn Avj Lv‡gm (AvB.)
welq: nj¨vÛ I Rvgvbx‡Z mvdj¨gwÛZ md‡ii weeiY 5
1 Ryb 2012-G c`Ë
RygAvi LyZev
nhiZ Ljxdvzj gmxn Avj Lv‡gm (AvB.)
welq: gvbeZvi AwaKvi Av`v‡qi cwZ D`vË AvnŸvb 13
k‡e eivZ agxq †cÖÿvc‡U
Av‡`k †Kvb ¸iæZ iv‡L Kx?
Avjnv¾ gIjvbv mv‡jn Avng` 21
Kv‡ji hvÎvaŸwb ïwb‡Z wK cvI?
nvwg`yi ingvb 24
†ivhvi wbq¨Z
gIjvbv iBm Avng` 27
¯vMZ cweÎ gv‡n ighvb
gvngy` Avng` mygb 28
evsjvi wKse`wš
Rvgvbxi c_g wgkbvix
Lvb mv‡ne †gŠjfx †gvevivK Avjx
†gvnv¤§` Rvnv½xi eveyj 29
Dwbk kZ‡K Ag„Zi mÜvb
Rvdi Avng` 31
bexb‡`i cvZv 32
msev` 33
বাংলাদেশে আহমদীয়া মুসলিম জামা'ত প্রতিষ্ঠার শতবার্ষিকী জুবিলী ২০১৩ পালনের জন্যে দোয়া ও ইবাদতের আধ্যাত্মিক কর্মসূচী 36

Avjvn ZvAvjv Kiæb, Avgiv mevB †hb myZvi mv‡_ cyiv gvm †ivhv †i‡L, †ekx †ekx bdj Bev`Z K‡i cweÎ G gvm AwZevwnZ Ki‡Z cwi| †mB mv‡_ cweÎ KziAvb cvVmn `vb-LqivZ I mKj †bK Avg‡ji mgš‡q wb‡R‡`i gv‡S GK Awfbe cwieZb mvab Ki‡Z cwi Ges Avjvni mšwó I ˆbK‡U¨i QvqvZ‡j Avkq wb‡q Zui wcqfvRb nevi †mŠfvM¨ jvf Ki‡Z cwi|

cweÎ GB ighvb gvm mevi Rb¨ e‡q Avbyk A‡bK A‡bK Kj¨vY I eiKZ|

KziAvb kix‡d

m~iv evKviv-2

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾

184| †n hviv Cgvb G‡bQ! †Zvgv‡`i Rb¨ †mfv‡e †ivhv ivLv weavae× Kiv n‡jv, †hfv‡e †Zvgv‡`i ceeZx‡`i[206] Rb¨ weavae× Kiv n‡qwQj, †hb †Zvgiv gyËvKx n‡Z cvi|

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾

185| (‡Zvgiv †ivhv ivL‡e) wbw`ó K‡qK w`b gvÎ| Z‡e †Zvgv‡`i g‡a¨ †h Amy¯’ A_ev md‡i Av‡Q, Zvi-†ÿ‡Î Ab¨vb¨ w`‡b (‡ivhvi) msL¨v c~Y© Kiv we‡aq| Avi hviv Gi (A_©vr †ivhv ivLvi) mvg_©¨ iv‡L bv[207] Zv‡`i Rb¨ Ôwdw`qvÕ (i¦‡c) GKRb `wi`ª‡K LvIqv‡bv (evÁZvg~jK Kiv) n‡jv| AZGe, †h †¯^”Qvq fvjKvR K‡i, Zv Aek¨B Zvi Rb¨ DËg| Avi †Zvgiv hw` Rvb‡Z, (Zvn‡j eyS‡Z cvi‡Z) †ivhv ivLvB †Zvgv‡`i Rb¨ DËg|

206| agxq Abykvmb wn‡m‡e †ivhv (Dcevm-eZ) cvjb Kiv †Kvb bv †Kvb AvKv‡i mKj a‡gB cvIqv hvq| ÒAvaKvsk ag¸‡jv‡Z Ges wbg, ga¨ I D”P †kÖYxi Kvói g‡a¨, Dcevm-eZ GKwU mvaviY fv‡e wb‡`©wkZ e¨vcvi| Avi †hL‡b GB ai‡Yi wb‡`©k bvB, †mLv‡b I cvKwZK c‡qvR‡bi ZvwM‡` A‡b‡KB Dcevm K‡i _v‡KbÓ (GbmvB-eªv)|

w`e¨Ávbx I mvaycyiæl‡`i Awf&AZv †_‡K Rvbv hvq, Ava¨vwZ¥K DbwZ I g‡bi cwe&ÎZv mva‡bi Rb¨ kvixwiK-m¤úK mgn~wKQyw`b wQb Kiv Ges mvsmwiK-eÜb †_‡K KZKUv gy³ jvf Kiv GKvšB c‡qvRb| Z‡e, Bmjvg GB Dcevm-e‡Zi g‡a¨ beij¦c, beA_© I beZg Ava¨vwZ¥K Zvrch© Av‡ivc K‡i‡Q| Bmjvg †ivhv‡K (Dcevm cvjb) c~Y©gvÎvi Av‡Zvrm©M g‡b K‡i _v‡K| whwb †ivhv cvjb K‡ib, wZwb †h †Kej kixi-iÿvKvix Lv`¨-cvbxq n‡ZB weiZ _v‡Kb, Zv bq, eis mšÍvbw` Rb¥`vb, Z_v eske„w×i-wµqvKjvc †_‡KI `~‡i _v‡Kb| AZGe, whwb †ivhv iv‡Lb, wZwb AvZ¥Z¨v‡M Zvi c~Y© wZi K_v Rwb‡q †`b| c‡qvRb ‡ev‡a Zvi cfzi mšÍwóKZvi LwZ‡i wZwb Zvi meKQz Ggbwk Zvi Rxeb chš Kziewbx K‡i w`‡Z ØavM¯Í bb|

207| ÔBqyZxKzbvûÔi A_© Kiv n‡q‡Q, Ôhv‡`i c‡ÿ ev hviv AwZ K‡ó GUv (†ivhv) Ki‡Z cv‡iÕ| Ab¨ cvV ÔBqyZvCKzbvûÔ GB A_©‡K mg_©b K‡i (Rixi)| G Avqv‡Z wZb†kÖYxi wekvmx‡K †ivhvi e¨vcv‡i wKQyUv †invB ev myweav †`qv n‡q‡QÑAmy¯’, ågYiZ Ges AwZ `ye©j‡`i‡K| ÔBqyZxKzbvûÔi A_© GLv‡b Òhviv †ivhv ivL‡Z Amg_©Ó n‡Z cv‡i (wjmvb I gyÏiv`vZ)| mg¯— evK¨Ui A_© Gi¦cI Kiv n‡q‡Q, Ô‡ivhv ivLv Qvov I AwZwi³-cÖ‡¨ AR©‡bi Rb¨ mvg_©¨evb I Ae¯’vm¤úbœ e¨w³MY Mixe‡`i‡K LvIqv‡Z cv‡ib|Õ †m‡ÿ‡Î ÔBqyZxKzbvûÔi ÔûÔ mebvgwU GKRb Mixe‡K ÔLvIqv‡bviÕ cwie‡Z e¨eüZ n‡e|

nv`xm kixd

ighvb gv‡mi Bev`Z †Lv`vi Kv‡Q me‡P‡q wcÖq

KziAvb t

Ô†n hviv Cgvb G‡bQ! †Zvgv‡`i Ici †ivhv wewae× Kiv n‡jv, †hfv‡e †Zvgv‡`i c~e©eZx©‡`i Ici Zv wewae× Kiv n‡qwQj, †hb †Zvgiv ZvKIqv Aej¤^b Ki‡Z cviÕ (m~iv evKviv 184)|

nv`xm t

nhiZ Aveyûivqiv (iv.) eY©bv K‡i‡Qb, nhiZ imy‡j Kixg (mv.) e‡j‡Qb, †h e¨w³ wekvm, AvšÍwiKZv I DËg dj jv‡fi Avkvq ighvb gv‡m †ivhv iv‡L, Zvi c~‡e©i mKj cvc ÿgv Kiv n‡e| (eyLvix, gymwjg)

†h e¨w³ wekvm, AvšÍwiKZv I DËg dj jv‡fi Avkvq ighvb gv‡m †ivhv iv‡L, Zvi c~‡e©i mKj cvc ÿgv Kiv n‡e|

e¨vL¨v t

ighvb GKwU cweÎ gvm| G gv‡mi Bev`Z †Lv`vi wbKU me‡P‡q wcÖq| KviY, bvgvh I †ivhvi mgš^q gvbyli g‡a¨ †Lv`vi ˆbKU¨ jv‡fi GK Av‡jvob m„wó K‡i †`q| Zv Gfv‡e †h, bvgvh AvZ¥v‡K cweÎ K‡i Ges †ivhv ü`q‡K Av‡jvwKZ K‡i| djkÖæwZ‡Z wbôvevb e¨w³ †ivhv Øviv Ava¨vwZ¥KZvi GK bZzb iv¯—vq cwiPvwjZ n‡q †Lv`vi mšÍwói Qvqv‡Z‡j P‡j Av‡m| KziAvb e‡j †h, †ivhv †Zvgv‡`i gv‡S ZvKIqv A_©vr †Lv`v-fxwZ m„wó Ki‡e| G ZvKIqv wKfv‡e m„wó n‡e? e¯‘Z †ivhv Ggb Bev`Z, hv gvbyl‡K cÖwZwU Bw›`ª‡qi †Lv`vi mšÍwói Rb¨ wbqšY K‡i| hw` Bw›`ªq‡K wbqšY bv †i‡L †KD †ivhv iv‡L, Z‡e GUv †ivhv bq, eis Ab¨ wKQz| †Lv`v-fxwZ m„wó Gfv‡eB nq †h, gvbyl †Lv`vi mšÍwói Rb¨ wb‡Ri gb-‡gRvR I Aš—t-cÖK…wZ‡K †Lv`vi B”Qvi Ici †Q‡o †`q| d‡j ax‡i ax‡i ‡m Zvi Aeva¨-AvZ¥vi wbqšYvaxb n‡q c‡o| H mKj Kg n‡Z †m `~‡i m‡i c‡o, hv †Lv`vi AmšÍwói KviY nq|

Aci nv`x‡m eY©Z n‡q‡Q, hw` †KD cÖ‡kZvejx mv‡_ †ivhv cvjb K‡i, Z‡e Zvi c~‡e©Kvi mKj cvc ÿgv K‡i †`qv n‡e| Gi A_© n‡jv, ighvb ZvKIqvi m„wó K‡i _v‡K| hw` †KD †ivhv cvj‡bi gva¨‡g wb‡Ri gv‡S ZvKIqv m„wó K‡i ‡bq I ZIevZzb-bvmyn (A_©vr cÖwZÁvb ZIev Øviv wb‡Ri ms‡kvab K‡i †bq, Avi KLbI c~‡ci w`‡K wd‡i bv ZvKvq) K‡i, Zvn‡j Ggb e¨w³i cÖwZ †Lv`v `qvciek n‡q Zvi ¸bvn gvd K‡i †`b| †ivhvi gvm msh‡gi gvm, mvabvi gvm| Avmyb! G †ighv‡b Avgiv †Póv Kwi, mvabv Kwi, †hb Avgv‡`i Aeva¨-AvZ¥v, A_©vr Ôbd‡m Avg¥vivÕ ckvwš—-cÖvß AvZ¥v‡Z A_©vr Ôbd‡m gyZgvBbœv‡Z cwiYZ nq| AvjøvnZvAvjv Avgv‡`i mevB‡K cweÎ ighvb gv‡m G mvabv Kivi †ZŠdxK w`b, Avgxb|

Avjnv¾ gI jvbv mv‡jn Avng`
gymeŸx wmjwmjvn

AgZevYx

†ivhvi gvnvZ¥¨

nhiZ Bgvg gvn`x (Av.)

†ivhvi gvnvZ¥ m¤^‡Ü nhiZ gmxn gvIDˆ` (Av.) wj‡L‡Qb, ÒAíAvnvi Ges ÿzav mn¨KiY AvZ¥ïw×i R‡b¨ Avek¨K| G‡Z wb`e¨-`kb-kw³ (Kvkdx ZvKZ) e„w× cvq| gvbyl ïayLv`¨MnY K‡i euvPv bq| †h e¨w³ Abš Rxe‡bi cwZ jÿ¨ Kiv G‡Kev‡iB cwiZ¨vM K‡i, †m wb‡Ri Ici ÒHkx‡µvaÓ (Kn‡i Bjvnx) Avbqb K‡i| wKš †ivhv`vi‡K jÿ¨ ivL‡Z n‡e †h, †ivhvi A_ ïay GUv bq †h, gvbyl Abvnv‡i _vK‡e; eis †Lv`vi whKi A_vr Zvu ¯§i‡Y gk¸j _vKv DwPZ| Avu nhiZ (mv.) ighvb kix‡d A‡bK †ewk Bev`Z Ki‡Zb| G w`b¸‡jv‡Z cvbvnv‡ii wPšv n‡Z wew”Qbœ n‡q Avjvn ZvAvjvi cwZ g‡bwb‡ek (ZveevËz Bjvjvn) Kiv PvB| `,fvM¨ H e¨w³i, †h ˆ`wnK-c‡qvR‡b Lv`¨ MnY K‡i, wKš AvaïwZ¥K-Lv‡`¨i R‡b¨ cilqv K‡i bv| ewn¨K Lv`¨ Øviv ˆ`wnK-kw³ jvf nq, GKBfv‡e AvaïwZ¥K-Lv`¨ AvZ¥v‡K Kv‡qg i‡L Ges ZØviv AvZ¥vi kw³¸‡jv m‡ZR nq| †Lv`vi wbKU mvdj¨ PvI| KviY, wZwb mvg_¨ w`‡jB mKj `iRv Dbœy³ n‡q hv‡e|Ó

Ò‡Kej Afy³ Ges wccvmvZ _vKvB †ivhvi D‡Ïk¨ bq, eis Gi GKwU Zvrch Ges cfve Av‡Q, hv AwfÁZvi Øviv †evSv hvq| gvbyli cKwZ.i g‡a¨B GUv wbwnZ Av‡Q †h, gvbyl h‡Zv Kg Lvq, ZZB Zvi AvZ¥ïw× Ges Kvkdx ZvKZ ev w`e¨-`kb kw³ e„w× cvq| †Lv`vi AwfcÖvq GUvB †h, GKwU Lv`¨‡K Kg K‡i Aci GKwU Lv`¨‡K evaZ Kiv| †ivhv`v‡ii me`vB Gi cwZ `„wó †`qv KZe¨| †Lv`vZvAvjvi whKi ev ¯§i‡Yi g‡a¨B mgq KvUv‡bv DwPZ, †hb msmv‡ii †gvn `~i nq Ges Avjvni cwZ c~Y g‡bwb‡ek Kiv hvq| AZGe, †ivhvi D‡Ïk¨ n‡jv, gvbyl †hb GK Lv`¨ Z¨vM K‡i Ab¨ Lv`¨ MnY K‡i, hv AvZ¥vi ckwš Ges Zwßi KviY nq| †h-†jvK ïay†Lv`vi Rb¨B †ivhv iv‡L Ges AvPvi-Abyôv‡bi †ivhv iv‡L bv, Zvi DwPZ, †m †hb me`v nvg` (cksmv KxZb), Zmexn (Avjvni cweÎZv I gvnvZ¥¨ †NvlYv) Ges Zvnjx‡ji (Avjvni †ZŠnx` †NvlYv) g‡a¨ wb‡R‡K wb‡qwRZ iv‡L, hv‡Z Zvi wØZxq-Lv‡`¨i (AvaïwZ¥K Lv‡`¨i) †mŠfvM¨ jvf nqÓ (Avj nvKg, 17/1/1907)|

ÒZZxq welq, hv Bmjv‡gi g~j wfwË, Zvnˆj †ivhv| †ivhvi cKZ.Zvrch m¤ú‡K I gvbyl AbewnZ| cKZ.K_v GB †h, †h †`‡k gvbyl hvq bv Ges †h RMr m¤ú‡K †m AewnZ bq, †m Gi Ae¯v Kx eYbv Ki‡e? †ivhv †Kej GUvB bq †h, gvbyl G w`‡b ÿzaZ I wccvmvZ _v‡K| eis Gi GKwU Zvrch I GUvi GKwU cfve Av‡Q, hv AwfÁZvi gva¨‡g Rvbv hvq| gvbyli cKwZ‡Z GUv Av‡Q †h, †m hZ Kg Lvq, ZZB Zvi AvZ¥v cweÎ nq Ges ÔKvkdx kw³Õ (w`e¨-`k‡bi kw³) e„w× jvf K‡i| G‡Z †Lv`vZvAvjvi B”Qv GUvB †h, GKwU Lv`¨ Kg Ki Ges Ab¨wU‡K evovIÓ (gjdhvZ, beg LÛ c„ 123)|

Ò‡ivhv`v‡ii me`v G K_v `„wó‡Z ivLv DwPZ †h, ÿzaZ _vKvB Zvi D‡Ïk¨ bq| eis, Zvi DwPZ, †m †Lv`vZvAvjvi wh Ki-G gM _vK‡e, hv‡Z `ybqv Z¨vM K‡i Avjvn-gLx nIqv hvq| AZGe †ivhvi D‡Ïk¨ GUvB †h gvbyl GKwU iæwU †Q‡o w`‡q hv †Kej †`n-cwZcvjb K‡i, wØZxq iæwU jvf K‡i, hv AvZ¥vi ckwš I cwiZwßi KviY| hviv †Kej †Lv`vi Rb¨ †ivhv iv‡L Ges wbQK iæmg- wn‡m‡e iv‡L bv, Zv‡`i DwPZ, Avjvn ZvAvjvi Ônvgˆ`Õ (cksmv), ÔZmexnÕ (¸Y KxZb Kiv) I Zvnjxj (jv Bjvnv Bjvjvn) cv‡V gM _vKv, hÏiæb Ab¨-Lv`¨I Zviv †c‡q hvqÓ (gjdhvZ, beg LÛ c„ 123)|

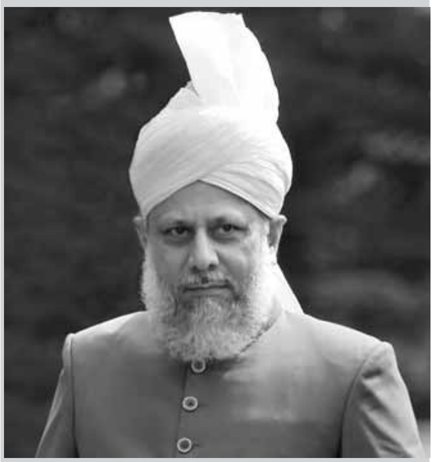

RygyAvi LyZev

‰mq¨`bv nhiZ Avgxiæj gyÕwgbxb LwjdvZzj gmxn Avj Lv‡gm (AvB.) KZ…©K hy³ iv‡R¨i evBZzj dZzn gmwR‡` c`Ë 8 Ryb 2012-Gi (8 Gnmvb, 1391 wnRix kvgmx) RygyAvi LyZev

nj¨vÛ I Rvgvbx‡Z mvdj¨gwÛZ md‡ii weeiY

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ،
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ۞ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۞ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ۞ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۞ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۞
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۞ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۞ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۞

evsjv †W¯‹ wbR `vwq‡Z LyZevi GB e½vbyev` Dc¯'vcb Ki‡Q|

Awg †Zvgvi Abymvix‡`i‡K †Zvgvi we‡ivax‡`i Dci †ivR wKqvgZ chš— Rqhy³ ivLe|

GKw`‡K Avgv‡`i we‡ivaxiv Avgv‡`i wbt‡kl Ki‡i ‡`qvi †Póvq iZ|

Aci w`‡K AvðhRbKfv‡e Avjvn ZvÕjv RvgvZ‡K eyw× Ki‡i P‡j‡Qb| GwU A‡jŠwKK wb`kb bqZ Avi Kx?

Rvgv‡Zi DbœwZ, †h cwZkªæwZ Avjvn ZvÕjv nhiZ gmxn gIDÕ` (Av.)-‡K w`‡q‡Qb, AvR c‡Z¨K Avng`x, Ggb wK Avng`x-we‡ivaxiv I †mB cwZkªæwZ c~Y© n‡Z †`L‡Q|

AvR Avjvn ZvÕjvi Acvi Kcvq cyw_exi †h-†Kvb ‡`‡kB Avcwb hvb bv †Kb, †mLv‡b Avcwb Avng`x‡`i †`L‡Z cv‡eb, msL¨vq Zv Kg †nvK ev †ewk|

nhiZ gmxn gIDÕ` (Av.) e‡j‡Qb, Avjvn ZvÕjv RvgvZ m¤ú‡K cwZkªæZ w`‡q‡Qb,

وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

(A_©vr: ÔAvwg †Zvgvi Abymvix‡`i‡K †Zvgvi we‡ivax‡`i Dci †ivR wKqvgZ chš— Rqhy³ ivLeÕ)| ÔevivnxbÕ Avng`xqvÕ- M‡š' nhiZ gmxn gIDÕ` (Av.)-Gfv‡e G Avqv‡Zi e¨vL¨v K‡i‡Qb, ÔAvqv‡Zi GB As‡ki Ges Bjnv‡gi e¨vL¨v GB †h, hviv †Zvgvi AvbyMZ¨ Ki‡e, A_©vr cKZ-A‡_© Avjvn I im~j (mv.)-Gi Abymvix‡`i Aš—f©³ n‡e, Zv‡`i‡K Zv‡`i A¯^xKvivix, we‡ivax‡`i Dci wKqvgZ chš— weRq `vb KieÕ A_©vr Zviv hy³-cgv‡Yi mvnv‡h¨ we‡ivax‡`i Dci Rqhy³ _vK‡e|

Rvgv‡Zi c‡ÿ Avjvni cwZkªæwZi G Ask D‡jL Kivi ci nhiZ gmxn gIDÕ` (Av.) cybivq e‡jb, ÔAvjvni A½xKvi mZ¨| GLb †Zv exR ecb n‡"Q gvÎ| (GwU 1902 mv‡ji A‡±vei gv‡mi †jLv, wZwb ZLb e‡j‡Qb, GLb exR ecb Kiv n‡"Q) Avgv‡`i we‡ivaxiv Kx-Pvq, Avi Avjvn ZvÕjvi Awfcvq Kx? hw` wPšv K‡i †`‡Lb, Zvn‡j Zv GLbB Rvb‡Z cv‡ib| Avjvn e‡j‡Qb, hw` Zviv wPšv Ki‡i †`‡L, Zvn‡j c‡Z¨‡K Lye kxNB Rvb‡Z cvi‡e|

wZwb e‡j‡Qb, Zviv Zv‡`i mKj cKvi cwiKíbv I `i‡fmwÜ‡Z e¨_© n‡"Q Ôhw` Zviv G m¤ú‡K GKUz wPšv Ki‡i †`L‡Zv!Õ| Zvici nhiZ gmxn gIDÕ` (Av.) e‡j‡Qb, Ôhw` we‡ivaxZv bv _vK‡Zv, Zvn‡j GLv‡b Ggb AmvaviY-AMMwZ Avgv‡`i I nZ bv| A_©vr Avgv‡`i DbwZ‡Z wb`kbg~jK ˆewkó¨ _vKZ bv| KviY, A‡jŠwKKZv Zzbv I cwZ‡hwMZvi d‡j cwi¯‹vi fv‡e cwi`„ó nq|Õ

nhiZ gmxn gIDÕ` (Av.) e‡j‡Qb, ÔGKw`‡K Avgv‡`i we‡ivaxiv Avgv‡`i wbt‡kl Ki‡i ‡`qvi †Póvq iZ| Zviv Avgv‡`i mvjvg chš— ‡bq bv| Avgv‡`i AeZgv‡b NYv-f‡i Avgv‡`i

D‡jL K‡i|ô Avi GLb GB NUbv Pig-chv‡q P‡j †M‡Q| cKv‡k¨ RNY¨-fvlvq Mvwj-MvjvR Kivi †ÿ‡Î I Zviv mg¯ mxgv j•Nb K‡i‡Q| hv‡nvK, G¸‡jv we‡ivax‡`i KvR|

nhiZ gmxn gI D` (Av.) e‡j‡Qb, ôAci w`‡K AvðhRbKfv‡e Avjvn Zvôjv RvgvZ‡K eµ× K‡i P‡j‡Qb| GwU A‡jŠwKK wb`kb bqZ Avi Kx? GwU Kx Avgv‡`i KvR, bv Avgv‡`i RvgvZ‡Zi KvR? Aek¨B bv| GwU wbðq Avjvn Zvôjvi KvRÑ hvi in‡m¨i MfxiZv †KD D`NvUb Ki‡Z cvi‡e bvô|

nhiZ gmxn gI D` (Av.) e‡j‡Qb, GwU Avjvni KvR, Zui KvR we®§qKiB n‡q _v‡K| AZGe Avjvn Zvôjvi we¯§qKi mvnvh¨ I mg_‡bi `„k¨ Avgiv cwZw`b †`LwQ| ïayGwUB bq †h, cweÎ ¯fv‡ei gvbyl RvgvZ‡Z c‡ek Ki‡Q, cwZw`bB RvgvZ‡Zi msL¨v eµ× cv‡”Q| RbmsL¨vi †ÿ‡Î RvgvZ cwZw`b DbwZ Ki‡Q| ab I Rbe‡j DbwZ mwaZ n‡”Q Ges GwU Avng`x-we‡ivax‡`i‡K Av‡iv †ekx wnsmvi Ab‡j `vn Ki‡Q|

cwZw`b cwK¯vb †_‡K G ai‡bi Lei Avm‡Q| NUbv I wnsmv-we‡Øl Zv‡`i‡K Ggbfv‡e AÜ K‡i w`‡q‡Q †h, nhiZ gmxn gI D` (Av.)-Gi Qwe weKZ.K‡i Dc¯vcb Ki‡Q| G‡Z Mvjg›` †jLv nq, G‡K c``wjZ Kiv nq| GK `yfvMv Zvi †`vKv‡bi †PŠKv‡Vi Dci Zui Qwe weQ‡q †i‡LwQj hv‡Z †µZviv Zv gwo‡q †`vKv‡b c‡ek K‡i|

hv‡nvK, G¸‡jv Zv‡`i KvR; wKš Avjvn Zvôjv cKvm‡bi g‡a¨ †_‡K ‡Kvb †Kvb f`gvbyl‡K `vo Kwi‡q †`b, Avi G-†ÿ‡Î I GKRb miKvix KgKZv‡K `vo Kwi‡q‡Qb, whwb `p-c`‡ÿc MnY K‡ib Ges QwewU †mLvb †_‡K DwV‡q w`‡q‡Qb| wKš we‡ivax‡`i‡K g‡b iv‡L‡Z n‡e, GwU Avjvn Zvôjvi KvR, Avjvn Zvôjv Zui †cwg‡Ki mvnvh¨ I mg_b K‡i _v‡Kb Ges Zui Rb¨ AvZ¥fgvbI †cvlY K‡ib| Avjvn Zvôjvi AvZ¥fgvb Zui †cwg‡Ki mv‡_ KZ.wbKó..AvPi‡Yi cwZ‡kva wb‡e Ges Aek¨B wb‡e| Zviv I Zv‡`i †bZviv wbwðZi‡c wkÿYxq wb`k‡b cwiYZ n‡e| Ggb mgq Avm‡e, hLb ïayGme-gvbyli QweB bq, eis Zviv wb‡RivB Gi †P‡q †ewk c``wjZ n‡e|

Avng`xiv †`vqv I ˆa‡hi gva¨‡g KvR K‡i hv‡”Q, Avi GwUB Avgv‡`i wkÿv| Avgv‡`i g‡b Kó w`‡Z Zviv hv-B”Qv Ki‡Z cv‡i, ‡h-c×wZB Aej¤b Ki‡Z Zv‡`i gb Pvq Zv Zviv Ki‡K| wKš Avgiv KL‡bv AvBb‡K nv‡Z Z‡jj †bB wb, Avi wbeI bv| wKš †hfv‡e Avgiv e‡jwQ, Avgiv †`vqv I ˆa‡hi mv‡_ KvR K‡i _wK, Avi Zv Ki‡Z _vKe BbkvAvjvn| Avi GwUB n‡”Q GKRb Avng`xi ‰ewkó¨|

> Bmjv‡gi cwZ hv‡`i mvgvb¨Zg fvjevmv i‡q‡Q, a‡gi mv‡_ hv‡`i mvgvb¨Zg m¤úK I i‡q‡Q Zviv nhiZ gmxn gI D` (Av.)-Gi cwZ AvKó.nq|

AZGe, cµ_exi c‡Z¨K Avng`x, we‡kl K‡i cwK¯v‡bi Avng`x‡`i G ‰ewkó¨‡K µgvMZ D¾j K‡i †h‡Z n‡e| Avcbviv †`vqvq mekw³ wb‡qvM Ki‡b, †Kbbv, GwUB Avgv‡`i GKgvÎ A¯| GQvov Ab¨ †Kvb A¯ Avgv‡`i Kv‡R jvM‡Z cv‡i bv| ‡KD †KD e‡j _v‡K, GwU I †hb Kiv nqÑ IwU I †hb Kiv nq| (Avwg ewj) c_‡g †`vqvq cÿiv †Rvi jvwM‡q w`b|

hv‡nvK, Avwg RvgvZ‡Zi DbwZi K_v ejwQjvg †h, Avjvn Zvôjv Kxfv‡e mvnvh¨-mg_b Ki‡Qb Ges Kxfv‡e mr-cKwZi ‡jvK‡`i gv‡S GK ai‡bi wece mwó n‡”Q! Bmjv‡gi cwZ hv‡`i mvgvb¨Zg fvjevmv i‡q‡Q, a‡gi mv‡_ hv‡`i mvgvb¨Zg m¤úK I i‡q‡Q Zviv nhiZ gmxn gI D` (Av.)-Gi cwZ AvKó..nq| Avjvn Zvôjv Zv‡`i c_ wb‡`k K‡ib| wKš e¯ev`x gvbyl, hviv a‡gi cwZ †Kvb AvMn iv‡L bv, hv‡`i A‡b‡K Avjvn Zvôjvi cwZ I Cgvb iv‡L bv, Zviv I G K_v ej‡Z eva¨ †h, GwU Ggb GKwU RvgvZ, hvi c`‡ÿc me`vB DbwZi cv‡b avweZ n‡”Q| Zviv G K_v ej‡Z eva¨, †Zvgiv Bmjv‡gi †h wkÿv Dc¯vcb KiQ, Zv GKw`b we‡k Rqhy³ n‡e|

AZGe nhiZ gmxn gI D` (Av.) †hfv‡e e‡j‡Qb, GwU Avjvni KvR Ges we¯§qKi welqv`x †h cKvk cvq †mwUI ZuiB KvR| RvgvZ‡Zi m`m¨iv hw` Avjvni LwZ‡i RvgvZ‡Zi Kv‡R †Kej Zv‡`i nvZ jvMvq, Avi Avjvn Zvôjv Zv‡Z nvRvi nvRvi nv‡Zi KZ. Kv‡Ri mgcwigvY dj cKvk K‡ib| G wRwbmB kÎ‡`i‡K wnsmvi Av¸‡Z Av‡iv AwaK cÖv‡q QviLvi K‡i| AZGe, Zv‡`i GB wnsmv Avgv‡`i cwZ bq, eis Avjvni Ab¨‡ni cwZ, whwb Avcb-Ab¨‡n Ggb djvdj mwó K‡ib, hv RvgvZ‡Zi cwZ Avjvn Zvôjvi mg_‡bi mÿúó I mgy¾j cgvY enb K‡i|

AZGe, Avwg Gme we‡ivax‡`i‡K ejwQ, †Zvgv‡`i cwZØ›ØZv Avjvn Zvôjvi mv‡_, Avi Avjvn Zvôjvi mv‡_ †KD cwZ‡hwMZv Ki‡Z cv‡i bv| Kv‡RB fxZ nI Ges Avjvn‡K fq Ki| Ab¨_vq Avjvn Zvôjvi mv‡_ hviv cwZ‡hwMZvq wjß nq Zv‡`i wPýI Aewkó _v‡K bv| kÎ‡`i Ggb wnsmv-we‡Ø‡li d‡j Avgiv me`vB Kcvewi ewlZ n‡Z †`wL| Giv gmwjgvb nevi `vex`vi nIqv m‡Ë¡I wPšv K‡i †`‡L bv †h, RvgvZ Avng`xqvi †h-†Kvb Kv‡Ri dj weagx‡`i Kv‡Q Bmjv‡gi my›`i wkÿvi‡c cKvkZ n‡”Q| AZGe, bvg-me¯ Gme Av‡jg Bmjvg-‡cgx bq| Zviv ïayb‡R‡`i c`‡K fvjev‡m Ges ¯v_-DØ‡ii d›`‡Z Av‡Q| Avwg

†hfv‡e e‡jwQ, Ab¨‡`i Dci Avjvn ZvÕjv Avgv‡`i K_vi cwe©-cfve mµó K‡ib| Avi Zviv Avgv‡`i Abyôvbw`‡Z AskMnY K‡i cKv‡k¨ Gme K_v ¯xKvi K‡i _v‡Kb|

Avjvn ZvÕjvi AbyMÖ‡n Avwg hLb wewfbœ †`‡k ev wewfbœ RvqMvZ md‡i hvB, ZLb nhiZ gmxn gIDD` (Av.)-Gi evYx †cŠuQv‡bvi Kj¨v‡Y Bmjv‡gi GK bZzb i/c Ab¨‡`i mvg‡b cKvk cvq| Avcbviv AevnZ Av‡Qb, K‡qK w`b c‡e Avwg nj¨vÛ I RvgŸvbxi Rjmvq †hvM`v‡bi Rb¨ wM‡qwQjvg| Gme Rjmvq †hvM`vb K‡i †hLv‡b,

> **we‡ivax‡`i‡K ejwQ, †Zvgv‡`i cwZØw›ØZv Avjvn ZvÕjvi mv‡_, Avi Avjvn ZvÕjvi mv‡_ †KD cwZ‡hvwMZv Ki‡Z cv‡i bv| Kv‡RB fxZ nI Ges Avjvn‡K fq Ki| Ab¨_vq Avjvn ZvÕjvi mv‡_ hviv cwZ‡hvwMZvq wjß nq Zv‡`i wPýI Aewkó _v‡K bv|**

Rvgv‡Zi m`‡m¨i mv‡_ mv¶v‡Zi I wKQz ejvi my‡hvM n‡q‡Q, †mLv‡bB A-Avng`x eÜz‡`i AskMn‡Y I wewfbœ Abyôvb n‡q‡Q| Gme Abyôv‡bi GKwU cwe©-cfve Zv‡`i Dci c‡o‡Q| G Qvov, ‡hme A-Avng`x Zv‡`i eÜz‡`i Avgš¿‡Y Rjmvq AskMnY K‡i, Zv‡`i Dci Rvgv‡Zi wk¶v I e¨e¯'vcbvi A‡bK fvj cfve c‡o| mvaviYZ md‡i †_‡K wd‡i G‡m Avgvi iwZ Abyfwq md‡ii msw¶ß eY©bv Dc¯'vcb Kwi Ges Rjmv I Gi e¨e¯'vcbv-m¤ú‡K© wKQz e‡j _vwK|

AvR Avwg A-Avng`x‡`i mv‡_ †hme Abyôvb n‡q‡Q, Zv w`‡q Avgvi e³e¨ ïiæ KiwQ| Avgvi md‡i Avjvn ZvÕjvi Awk‡mi †h ewiavivi eI©Y n‡Z Avwg cZ¨¶ K‡iwQ, Zv n‡Z KZK D‡jL KiwQ| Avwg nj¨vÛ Rjmvq †hvM`v‡bi K_v e‡jwQ| A‡bK eQi ci Avwg Zv‡`i Rjmvq AskMnY K‡iwQ| hvÎvi Av‡M Avwg nj¨v‡Ûi Avgxi mv‡n‡ei wPwV †cjvg, Zv‡Z wZwb wj‡Lb, ÔAvcwb Avgv‡`i Rjmvq Avm‡Qb, Avgv‡`i ¯'vbxq WvP‡`i wb‡q GKwU Abyôvb Kivi B"Qv| Avwg c_‡g bv e‡j †`BÑ fvejvg c‡qvRb †bB| KviY Avgvi aviYv wQj, GLvbKvi wkw¶Z I myÿx-mgv‡Ri mv‡_ Rvgv‡Zi m`m¨‡`i nqZ †Zgb †hvMv‡hvM †bB| K‡qKw`b ci Avgvi wb‡RiB g‡b nj, ‡hLv‡b Avgv‡`i Rjmv n‡"Q, Ges †hLv‡b Avgv‡`i †K›`, Zv Bmjv‡gi †mB kµi emevm¯'j, hviv cvqkvB Bmjvg I gnvbex (mv.)-Gi weiæ‡× Acjvc K‡i _v‡K| fvejvg Avgv‡`i Abyôv‡b GLvbKvi KZK ivRbxwZwe`, wkw¶Z gvbyl Ges mvsevw`K Avm‡j Zv‡`i mv‡_ K_v ejvi my‡hvM n‡e| Avgvi aviYv wQj, GLvbKvi RvgvZ †QvÆ, ZvB nqZ c‡bi wek R‡bi g‡Zv gvbyl Avgv‡`i Abyôv‡b Avb‡Z cvi‡e| wKš' GKkZ cuPk R‡bi AwaK-AwZw_ Avgv‡`i Abyôv‡b †hvM †`b| G‡`i g‡a¨ D³ GjvKvi mvsm`, kn‡ii †gqi, ivRbxwZwe` I wkw¶Z e¨w³eM© wQ‡jb, Ges AvðhRbK fv‡e ¯'vbxq-cwÎKvi mvsevw`K QvovI RvZxq msev`c‡Îi cwZwbwaivI Dcw¯'Z wQj| Zv‡`i mvg‡b Bmjv‡gi KwZcq my›`i w`K Ges gnvbex (mv.)-Gi DËg Rxebv`k Ges KziAv‡bi wk¶v Dc¯'vcb Kwi, †Kbbv, Gme-welq m¤ú‡KB ILvbKvi ivRbxwZwe`iv AvcwË K‡i _v‡K| †mLvbKvi †gqi Ges mvsm` agxq-m¤úxwZ I mnbkxjZv m¤ú‡K e³e¨ iv‡Lb| Bmjv‡gi Awb›`¨-my›`i wk¶v Ges gnvbex (mv.)-Gi Rxebv`‡ki welq Avgvi e³e¨ ï‡bb, Avi cieZx‡Z ¯'vbxq-mvsm‡`i AvjvcPwiZv †_‡K eySv hvq, wZwb fvj cfve MnY K‡i‡Qb Avi Zv D‡jL I K‡i‡Qb| Avwg e‡jwQjvg, Avgvi aviYv †mLvbKvi ivRbxwZwe`‡`i mv‡_ nj¨vÛ Rvgv‡Zi fv‡jv †hvMv‡hvM †bB, mvsm‡`i e³‡e¨I Zv cKvk †c‡q‡Q Ges Avgvi aviYvi mZ¨vqbI n‡q‡Q|

wZwb e‡j‡Qb, ivRbxwZwe` I wkw¶Z-mgv‡Ri mv‡_ Avcbv‡`i †ewk †ewk †hvMv‡hvM ivL‡eb| Bmjv‡gi Abyœg wkÿv m¤ú‡K© Zv‡`i‡K AevnZ Ki‡b, Avi Gici cÎ-cwÎKv Ges I‡qe mvB‡UI G¸‡jv Zz‡j ai‡b| Gfv‡e Zviv bvg D‡jL bv K‡i Gw`‡K Bw½Z K‡i‡Q †h, Avcbviv Ggb Kvhµg Pvjv‡j DBì‡ii gZ Bmjvg-we‡ØlI‡`i gyL eÜ n‡q hv‡e, Avi memvaviY Bmjv‡gi Abyœg-wkÿv m¤ú‡K© AevnZ n‡e| AZGe †`Lyb! GLv‡bI nhiZ gmxn gIDD` (Av.)-Gi K_v Ô†Lv`vi KvR I A™Z n‡q _v‡KÕ-Kxfv‡e cÖ n‡"Q| GKRb wL÷vb, †m Bmjv‡gi AZz‡bxq my›`i-wkÿv ¯‡`kx‡`i Kv‡Q †cŠuQv‡bvi Dcvq evZ‡j w`‡"Qb, GwU †Lv`v ZvÕjvi KvR|

Gici GB f`-mvsm`, whwb cexb I SvbyivRbxwZwe`, whwb `xNw`b †_‡K mvsm` wbewPZ n‡q Avm‡Qb, Zvi I‡qemvB‡UI Avgvi Ges Zvi _Qwei mv‡_ †mB Abyôvb I mfvi we¯wiZ eYbv w`‡q‡Qb| Abyôv‡bi ci Zvimv‡_ GKvš— mv¶v‡Zi we¯—wiZ weeiY w`‡q‡Qb| G e¨vcv‡i wZwb Avgv‡K e‡jI wM‡qwQ‡jb, Avwg G¸‡jv meB I‡qemvB‡U w`e, †hb Bmjvg-m¤ú‡K Avgv‡`i ¯‡`kx‡`i aviYv `‚i nq| Avi G‡`‡k Ggb wKQz¯v_ev`x †jvK, ivRbxwZwe` Ges Bmjvg we‡ØlI †h me

N„Yv Qov‡”Q, Zv †hb `~ixfƒZ nq|

Gici cÎ-cwÎKvi GB Abyôv‡bi we¯—wiZ msev` †Q‡c‡Q Ges Awg hv e‡jwQjvg, Zv Ly mybi fv‡e Dc¯vcb K‡i‡Q| ‡mLvbKvi `yUI bvgKiv RvZxq-cwÎKvi mvsevw`Kiv G‡mwQj| Gi gv‡S GKRb Avgvi K‡qK wgwb‡Ui mvÿvZKviI wb‡q‡Q| mvsevw`K hLb Zvi ck †kl Kij, ZLb Awg ejjvg, Avgvi I GKwU ck Av‡Q ev Avgvi ck nj, GB AÂ‡j ev bby¯úxUÔG †hLv‡b Avgv‡`i ‡K›` Ae¯—Z, nj¨v‡Û GB AÂjwU ÔevB‡ej-†eëÕ bv‡g cwiwPZ| Giv a‡gi we‡kl h‡_ó Ávb iv‡L| nj¨v‡Ûi Ab¨vb¨ AÂ‡ji Zzjbvq Pv‡P hvZvqvZ G-AÂ‡ji †jvK‡`i ‡ekx| †Zvgiv nhiZ Cmv (Av.)-Gi wØZxq AvMg‡bi A‡cÿvq AvQ| ‡Zvgv‡`i K_v Abyhvqx Gi jÿY I wKQzbv wKQz cKvk cv‡”Q Ges †Zvgv‡`i K_v bmyv‡i †mB cwZkªZ mgq G‡m †M‡Q, eis MZ n‡q †M‡Q| nhiZ Cmv (Av.) Avm‡jb bv| whwb G‡m‡QbÑ wZwb n‡jb, Avgiv hv‡K gmxn gIDD` (Av.) wnmv‡e †g‡bwQ, wZwb; GLb GB e¨w³i AvMgb m¤ú‡K Mfxifv‡e wPšÍv K‡i †`L|

Avgvi G K_vq Zvi †Pnviv wKQzUv jvj n‡q hvq, wKš‘ ‡m wKQzbv e‡j gyPwK †n‡m Pzc K‡i _v‡K| G NUbvi ci Avgvi aviYv n‡qwQj, ‡m nqZ Avgv‡`i Abyôvb m¤ú‡K msev` Qvc‡e bv, Avi Qvc‡jI mwVK Z_¨ Dc¯vcb Ki‡e bv| wKš‘ ci¨w`b Avgvi Rb¨ Ges Rvgv‡Zi Ab¨‡`i Rb¨I G- welqwU AevK Kivi gZ wQj, †m ‡Kej msev` Qv‡cB wb, eis cwÎKvi c_g cvZvq Avgvi QweI †Q‡c‡Q Ges ‡fZ‡ii cvZvq cvq †`o cô̂v Rý‡o GB Abyôv‡bi mwPÎ msev` cKvk K‡i‡Q, Rjmvi e¨vcv‡i we¯—wiZ wj‡L‡Q, Bmjvgx-wkÿv m¤ú‡KI msev` †Q‡c‡Q| GwU †mLvbKvi RvZxq cwÎKv, hvi cvVK-msL¨v jÿ jÿ| hv‡nvK, Gi gva¨‡g Bmjv‡gi Abycg-wkÿv G‡`‡ki gvbyl‡i Kv‡Q †cŠu‡Q‡Q|

Awg Av‡iKwU RvZxq-cwÎKvi K_v e‡jwQjvg, ‡mB cwÎKvI msev` †Q‡c‡Q| ¯vbxq- cwÎKv¸‡jvI †ek fvj Kfv‡iR w`‡q‡Q| Gi wKQzw`b ci Awg Dc¯vcb K‡iwQ| Gi gv‡S c_gwU nj¨v‡Ûi RvZxq cwÎKv, hvi bvg Ô`vMevW (Dagblad)Õ| GB cwÎKv c_g †h-msev` †Q‡c‡Q, Zv n‡jv, ÔkwŠi-`Ž LjxdvÕ| Gici Avgvi D×wZ.w`‡q wj‡L‡Q, nhiZ Cmv (Av.)-Gi cyivMg‡bi e¨vcv‡i G Rvgv‡Zi wekvm nj, ÔwZwb gZ‚ÿ eiY K‡i‡QbÑ wZwb Avi wd‡i Avm‡eb bv| nhiZ wghv †Mvjvg Avng` mv‡n‡ei AvMgbB n‡”Q Cmv (Av.)-Gi wØZxq AvMgbÕ| Gici i‡q‡Q we¯—wiZ msev`| Awg msw¯ÿß K‡qKwU evK¨ c‡o w`w”Q| Zviv wj‡L‡Q, Zej‡Mi gva¨‡g Avng`xqv RvgvZ RMZ-Rý‡o cmvi jvf K‡i‡Q| Avng`xiv KL‡bv †Kvb DMevK¨ e¨envi K‡i bv| †Kej gyw`jM‡`i gva¨‡g cwðgv †`k mg‡n RvgvZ cwZôZ nqwb, eis ¯—‡`‡k we‡iwaZvI Gi KviY| Gici wZwb cwK¯—vb †_‡K wnRiZ K‡i AvMgbKvix Avng`x‡`i K_vI D‡jL K‡ib|

AZtci wj‡L, Rvgv‡Zi mv‡_ G-Rvgv‡Zi m`m¨‡`i ci¯ú‡ii gv‡S AZ¨š— Mfxi mym¤úK i‡q‡Q| Gici djvI K‡i Rjmvi msev` †Q‡c‡Q| Avgvi eivZ Awg hv e‡jwQ, Zv wj‡L‡Q, ÒwZwb Avš—wiKfv‡e Dcw¯—Z-AwZw_‡`i KZÁZv cKvk K‡ib| wZwb GwUI e‡jb, hw` I nj¨v‡Ûi GKwU ‡kYx Ggb Av‡Q, hviv Bmjv‡gi e¨vcv‡i Pig A‡kvfbxq K_vevZv e‡j ev AccPvi K‡i, wKš‘ GiciI Avcbviv ¯—ki‡i GLv‡b Bmjvg m¤ú‡K Rvb‡Z G‡m‡Qb| cKZ.welq nj, m¤§vb c`kb I kwš— cwZôv Kiv| AZtci Avgvi eivZ w`‡q wj‡L, wZwb (AvB.) e‡j‡Qb, Awg wbwðZfv‡e ej‡Z cwi, Avgiv KL‡bv cwZ‡kva †bqvi gbgvbwmKZv jvjb Kwi bv| nü! gymjgvb‡`i gv‡S KwZcq `j i‡q‡Q, hviv DMcš'x | G e¨vcv‡i Ljxdvi m-² `„p„ó i‡q‡Q| Hme (DMcš'x) gymjgvb‡`i Gi/c KgKvÛ m¤ú¥©fzÑ, gyw¤§` (mv.)-Gi Av`‡ki m¤ú¥©-we‡ivax| AZtci wj‡L, Ljxdv e‡j‡Qb, nj¨v‡Û cvi¯úwiK k×v‡ev‡ai †ÿ‡Î `ygjZv cwijwÿZ n‡”Q, Avi G Kvi‡Y wZwb wPwšZ| we‡klZt hw` Gi/c gbgvbwmKZvi AwaKvix-e¨w³ kvmb ÿgZvq AwawôZ nq, hviv ci¯ú‡ii cwZ m¤§vb c`kb K‡i bv, Zvn‡j mgm¨vi my„ó n‡e| GwU wQj GKwU cwÎKvq cPwiZ msev`|

wØZxqwU, †mLvbKvi RvZxq cwÎKv Trouw| †mwUI Abyi/c wk‡ivbvg w`‡q‡Q, ÔLjxdvi ïfvMgb n‡q‡Q Ges wZwb DMZvi mgv‡jvPb K‡i‡QbÕ| Gici Avgvi eiv‡Z †gvUv Aÿ‡i wj‡L‡Q, ÒGB mšvm I KÆiZvi Rb¨ gnvbex (mv.)-‡K †`vlv‡ivc Ki‡eb bv| Gici Avng`xqv Rvgv‡Zi wekv‡mi Av‡jv‡K wj‡Lb, nhiZ wghv ‡Mvjvg Avng`Ñ gmxn gIDD`| Zuv Abymvixiv Zuv mËvq Cmv (Av.)-Gi wØZxq-Awefve e‡j wekvm K‡i| Avng`xiv e‡jb, Cmv (Av.)-Gi ¸‡Y ¸YwšZ n‡q wZwb AvMgb K‡i‡Qb| Gfv‡e Bmjv‡gi evYx Ges gmxn gIDD` (Av.)-Gi AvMg‡bi D‡Ï‡k¨I ‡mme gvbyl‡i m¤§yL AZ¨š— ¯úó I cvÄjfv‡e ewYZ n‡q‡Q|

†`Lyb! GwU n‡”Q Avjvn Zv'Ôjvi KvR| GKw`‡K Bmjv‡gi we‡iwaZvq wg: I‡qì¨vi mxgv Qwo‡q †M‡Q| †m Bmjvgx-wkÿv I nhiZ gyn¤§` (mv.)-Gi weiæ‡× cÖ_ex‡Z wb‡Ri cÿ‡Ki †gvoK D‡b¥vPb-Abyôvb K‡i †eov‡”Q| Ab¨w`‡K †Kej Zvi †`‡kB bq eis Zvi wbevPbx GjvKv †hLvb †_‡K †m mvsm` wbevwPZ n‡q‡Q †mLvb †_‡K Avng`xqv Rvgv‡Zi gva¨‡g Bmjvg I nhiZ gyn¤§` (mv.)-Gi Awb›`¨ my›`i I kwš— wcq wkÿv eYbvi gva¨‡g åvš— aviYv `~ixf‚Z n‡”Q| Awg hZUKz Rvb‡Z †c‡iwQ, Zvi cÿK ‡Zgb GKUv MnY‡hvM¨Zv jvf K‡i wb| wKš‘ Zvi †`‡ki msev`cÎ Ges Gg.wc.Ôi I‡qe mvB‡Ui gva¨‡g jÿ jÿ gvbyl‡i wbKU Bmjv‡gi Awb›`¨my›`i wkÿv I cKZ-Bmjv‡gi evYx †cŠu‡Q‡Q| †hfv‡e Awg e‡jwQ, nj¨vÛ RvgvZ Gi/c Kfv‡i‡Ri K_v fve‡ZI cviZ bv| hv‡nvK, GwU Avjvn Zv'Ôjvi KvR| wKš‘ KZÁZv

Avgv‡`i Avmj KvR nj, Bmjv‡gi mỳi-wk¶v‡K RMØvmxi mvg‡b Dc¯'vcb Kiv, RMØvmx‡K m‡Z¨i cv‡b Avnevb Kiv| gmwR` wbgv‡Yi mv_©‡` Zejx‡Mi KvR e¨vcKZi n‡"Q| Avwg Rvgv‡Zi m`m¨‡`i me`v GwU e‡j _vwK †h, GB cwiwPwZ Ges Zejx‡Mi my‡hvM m"ó nevi Kvi‡Y Zv‡`i `vwqZI †e‡o hvq| wb‡R‡`i e¨enviK Rxeb‡K Bmjvg-m¤§Z Kiv Avek¨K|

¯'i/c Avgv‡`i‡K I KvR Ki‡Z n‡e| GLb nj¨vÛ Rvgv‡Z‡K we‡kl fv‡e wb‡R‡`i MYms‡hvM‡K e¨× Ki‡Z n‡e, eis e¨vcKZi Ki‡Z n‡e| Bmjvg m¤ú‡K †hme fz¨-avi Yv m„ó Kiv n‡q‡Q, †m¸‡jv `~i Kivi Rb¨ †Póv Kiv DwPZ, Avi I‡qì‡ii wg_¨vPvi I we‡Ø‡li NY¨i/c ¯úófv‡e Zvi ¯'‡`kevmxi mvg‡b Zz‡j aiv DwPZ|

AvR Bmjv‡gi mỳ¶v Ges Avµ gbKvix‡`i mvg‡b hy³-cgvY Gi gva¨‡g ‡Rvi‡jv cwZDËi †Kej Avng`xqv gymwjg RvgvÔZB w`‡Z cv‡i| GB Abỳv‡b †hvM`vbKvix AwaKvsk AwZw_i mwweK cwZwµqv LyeB fv‡jv wQj| Avgv‡`i GKRb gymwjg, whwb bil‡q †_‡K lLv‡b wM‡qwQ‡jb, Zvi cv‡k emv GKRb Zv‡K e‡jb, Bmjvg m¤ú‡K Ggb K_v Avgiv Av‡iv ïb‡Z PvBÑ Avcbv‡`i Ljxdvi e³Zv. LyeB msw¶ß wQj| GKRb e‡qve„× e¨w³ e‡jb, ‡h wkÿv Avcbviv w`‡"QbÑ wL÷vb‡`i Ggb wkÿv †`qvi †Lqvj A‡bK †`ix‡Z G‡mwQj| wZwb e‡jb, eis `ỳfvRvi eQi ci g‡b c‡owQj| Zvi G K_vi D‡Ïk¨ GB wQj †h, wL÷vbiv GK `xN mgq chš wb‡R‡`i g‡a¨ SMov-weev`, wdKvevwR I hy×weM‡n wjß _v‡K, GLb Aek¨B wewfb wdKvi Ges †`‡ki g‡a¨ kvwš cwZwôZ n‡q‡Q| wKš Avcbviv BwZg‡a¨B kvwš cwZôvi †Póv ïiæ K‡i w`‡q‡Qb Ges RMØvmx‡K Rvbv‡bv Avi¤ K‡i w`‡q‡Qb| wZwb e¨w³MZ `„ó‡Kvb †_‡K welqwU †`L‡Qb| Zvi aviYv †bB †h, Avgiv AvR‡K ïiæ Kwiwb, eis GB wkÿv †PŠÏkÔ eQi c‡e gnvbex (mv.) wb‡q G‡mwQ‡jb, Avi †m mgqB Gi fxZ cwZwôZ n‡qwQj|

hv‡nvK, Bmjv‡gi †h fỳ-wPÎ Gme †jv‡Ki mvg‡b Dc¯'vcb Kiv nq, Zvi †bwZevPK cfve GB Abỳv‡bi gva¨‡g `~i n‡q‡Q| Avjvn ZvÔjv AvMvgx‡Z I Gi mỳj cKvk Ae¨vnZ ivLyb Ges GB RwZ Bmjvg MnY K‡i gnvbex (mv.)-Gi cZvKvZ‡j Avkq wbK| wKš †hfv‡e Avwg e‡jwQ, Gi Rb¨ Rvgv‡Zi m`m¨‡`i A‡bK †Póv-c‡Póv Kiv DwPZ|

nj¨v‡Ûi ci Rvgvbx‡Z Rjmv n‡q‡Q| Avi GwU I Avcbviv GgwUGÔ‡Z mivmwi †`‡L‡Qb| Rvgvbx‡Z †hLv‡b Rjmvi Kge¨¯Zv _v‡K, †mLv‡b GKB mv‡_ RvgvZ c‡Z¨K md‡i gmwR‡`i D‡Øvab A_ev gmwR‡`i wfwËc¯'i ¯'vc‡bi KvR I Avgv‡K w`‡q Kwi‡q _v‡K| Gev‡ii md‡i I GKwU gmwR‡`i D‡Øvab Kiv n‡q‡Q Ges wZbÔwUi wfwË ivLv n‡q‡Q|

mvaviYZ, wfwË-c¯'i ¯'vc‡bi ci GK eQ‡ii g‡a¨ wbgvY m¤úb n‡q hvq| Avjvn ZvÔjv Rvgvbx Rvgv‡Zi GB ‡mŠfvM¨ DË‡ivËi e„× Ki‡b| B`wbs gmwR` D‡Øvab I wfwËc¯'i ivLvi mgq GKwU fvj welq `„ó‡MvPi n‡"Q, Avi ZvnÔj, Abỳv‡b ¯'vbxq †jvK‡`i AvgšY Rvbv‡bv nq, hv‡`i g‡a¨ mgv‡Ri wkw¶Z †kYx, †gqi, mnKvix †gqi A_ev ivRbxwZwe` Ges D"Pc`¯' KgKZviv I Aš f,³ _v‡Kb|

GLv‡b †h-gmwR`B wbwgZ nq, GgbwU Kiv nq| wKš Rvgvbx‡Z B‡Zvc‡e GgbwU wQj bv| hv‡nvK, GLb Zv‡`i g‡bv‡hvM AvKó.. n‡q‡Q| Avi Avng`xqv Rvgv‡Zi cwiwPwZ Zz‡j aivi Rb¨, Bmjv‡gi AvKlYxq-wkÿv m¤ú‡K AewnZ Kiv I Zejx‡Mi Rb¨ GwU LyeB ¸iæZc~Y welq| Avgv‡`i Avmj KvR nj, Bmjv‡gi mỳi-wk¶v‡K RMØvmxi mvg‡b Dc¯'vcb Kiv, RMØvmx‡K m‡Z¨i cv‡b Avnevb Kiv| gmwR` wbgv‡Yi mv_©‡` Zejx‡Mi KvR e¨vcKZi n‡"Q| Avwg Rvgv‡Zi m`m¨‡`i me`v GwU e‡j _vwK †h, GB cwiwPwZ Ges Zejx‡Mi my‡hvM m"ó nevi Kvi‡Y Zv‡`i `vwqZI †e‡o hvq| wb‡R‡`i e¨enviK Rxeb‡K Bmjvg-m¤§Z Kiv Avek¨K| Rvgv‡Zi cwiwPwZ e„×i Kvi‡Y Gevi GKwU cwZôv‡b hvevi my‡hvM n‡qwQj| †mLv‡b †mbv KgKZv‡`i PvwiwÎK, ivR‰bwZK I AvBbMZ cwkÿ‡Yi e¨e¯'v Kiv nq| Rvgvb-mgv‡R Zv‡`i fygKv wK nIqv DwPZ, G wb‡q Av‡jvPbv nq, we‡kl wewfb welq m¤ú‡K I Zviv Z_¨ msMn K‡i| AvšRwZK ms¯'vi.Z. Ges agxq

wel‡qI †mLv‡b e³Z…v nq, †mwgbvi Kiv nq| Gfv‡e ‡emvgwiK KgKZv Ges ckvmbI Ab¨vb¨‡b Ask MnY K‡i _v‡K| †hfv‡e c‡e_ e‡jwQ, †mLv‡b GKwU Ab¨vb¨‡bi e¨e¯'v Kiv n‡qwQj, hv‡Z Avgvi AskMn‡Yi mgq hvwM N‡U| †mLv‡b e³e¨ ivLvi Rb¨ evB‡ii †jvK‡`i‡K AvgšÎY Rvbv‡bv nq| AvBbÁivI G‡m _v‡Kb, wewfbœ a‡gi cwZwbwaivI Av‡mb, Avi wewfbœ-wel‡q AwfÁ e¨w³eMI G‡m _v‡Kb|

Rvgvb-gmwjgvb‡`i †K›`ªxq-msMV‡bi cavb Cgvb gv‡RK mv‡ne‡KI †mLv‡b WvKv n‡qwQj, wZwb †mLv‡b e³Zv K‡iwQ‡jb| Avgv‡KI Zviv msw¶ß e³Zv Kivi Rb¨ AvnŸvb Rvbvq| Avwg iv‡ói cwZ wek¯ÍZvi ‡cÖwc‡U Bmjvgx-wkÿv m¤ú‡K GKwU msw¶ß e³Zv K‡iwQ| Gici `k-c‡bi wgwb‡Ui c‡kvËi Abyôvb n‡qwQj| D"P chv‡qi †mbv KgKZvi QvovI †mLv‡b kn‡ii †gqi Ges wkwÿZ wL÷vb-cv`ª I Bû`xivI Dcw¯'Z wQj| Avjvn ZvÔjvi Kcvq †mB e³Zvi GKwU fvj cfve c‡o‡Q| Bmjv‡gi AvKlYxq-wkÿv Zv‡`i KY‡MvPi n‡q‡Q| Avgv‡`i Rvgvbx Rvgv‡Zi †m‡µUvix Dgyi L‡iRv Rbve `vD` gvRyKv mv‡ne, cieZx‡Z Avgv‡K `y'GKwU gše¨ cwV‡q‡Qb| GKRb e‡j‡Qb, Avwg AevK! cy‡_ex †h mgm¨vq RRwiZ, †Kvb gvby GZ mnR fvlvq Zvi mgvavb Zz‡j ai‡Z cv‡ib! AZGe G nj, Bmjv‡gi PgrKvi wkÿv, hv mwVK-fv‡e Dc¯'vcb Ki‡Z cvi‡j mevB Zv eyS‡Z mÿg n‡e| Avi GKRb e‡j‡Qb, Avcbv‡`i Ljxdvi e³Zv A‡bK wKQz¯úó K‡i w`‡q‡Q| Bmjv‡gi e¨vcv‡i Avcbv‡`i †h aviYv, D³ aviYv Abyhvqx‡i gymwjgvb‡`i GB mgv‡R Bw›U‡Mkb (mgv‡Ri g‡a¨ AvZ¥xi Ask nIqv) Aek¨B m¤¢e| AvRKvj BD‡iv‡c G-ckwU meÎ D‡V _v‡K †h, gymwjgvbiv Avgv‡`i mgv‡R wgk‡Z cvi‡e bv ev cv‡i bvÑ Zviv wfbœ-ai‡bi gvbyl| e³Zv †kvbvi ci e‡j, cvðv‡Z¨ gvbyl‡i ‡fZi G-wel‡q fzj-aviYv myó n‡q‡Q| A‡b‡K Bmjv‡gi PgrKvi

wkÿvi K_v ï‡b nZevK nq|

AZGe G hyM Bmjv‡gi cKZ.I PgrKvi wkÿv RM‡Zi mvg‡b Dc¯'vcb Kiv Ges Bmjv‡gi wei‡× AvcwËKvix‡`i gyL eÜ Kivi e¨e¯'v ‡bqv gnvbex (mv.)-Gi mwZ¨Kvi †cwgK‡K gvb¨Kvix‡`i-B KvR| AwaKvsk ‡mbv Awdmvi Avgv‡K Ges Avgvi mdi-m½x‡`i‡K e‡j‡Qb, D³ e³Zv Avgv‡`i‡K wjwLZ AvKv‡i w`‡eb| Rvgvbx RvgvZÑ Rvgvb fvlvq Gi Abyev` Ki‡Q, c‡i Zv‡`i‡K cwV‡q †`qv n‡e|

Gici Rvgvbxi Rjmvi GKwU ¯'vqx-ˆewkó¨ nj, Rvgvb A_ev A-Avng`x I A-gymwjgvb AwZw_‡`i mv‡_ GKwU Abyôvb nq, †hLv‡b cvq cÖP-QqÔk bvix-cyi‚l GKwÎZ nb| †mLv‡b AvgviI wKQzejvi mgq hvwM nq| GeviI Bmjvgx-wkÿv, nhiZ gmxn gIDm (Av.)-Gi AvMg‡bi D‡Ïk¨, eZgvb Ae¯'v, Ges cy‡_ex †h †Lv`v‡K fz‡j †h‡Z e‡m‡Q, Avi G-Kvi‡Y aŸsmi w`‡K aweZ n‡"Q, G welq K_v ejv Ges mveavb Kivi mgq hvwM n‡q‡Q| D³ aŸsm †_‡K iÿv †c‡Z wK Ki‡Z n‡e, c‡Z¨K gvbyl‡i wK-fzwgKv cvjb Kiv DwPZ, †m e¨vcv‡iI e‡jwQ| G e³Zv GgwUGÔ‡Z cPvi n‡q‡Q; Avcbviv nqZ ï‡b _vK‡eb| G Abyôv‡bI †hfv‡e Avwg e‡jwQ cÖPkÔi AwaK Rvgvb Agymwjg I Ab¨vb¨ A-Avng`x eÜziv †hvM w`‡qwQ‡jb, Avi Zv‡`i Dci Gi GKwU fvj cfve c‡o‡Q|

GQvov wewfbœ †`k †_‡K AvMZ Agymwjgvb e¨w³e‡Mi mv‡_I Avgvi mvÿvZ n‡q‡Q| Zv‡`i ga¨ †_‡K me‡P‡q eo cwZwbwa`j G‡mwQj eyj‡Mwiqv †_‡K| cyi‚l-gwnjv wgwj‡q Zviv cvq AwkRb wQj| Zv‡`i g‡S gvÎ †Zi A_ev †PŠÏRb Avng`x wQ‡jb, Ab¨iv wQj A-Avng`x| Zv‡`i g‡S KZK wL÷vbI wQj| Rjmvi Kvhµg, e³Zvw`, k„Ljv, cfvZ †`‡L mevB LyeB Awffz— nq| cwZ eQi wewfbœ †`k †_‡K eû msL¨K bZzb gvbyl Rjmvq AvMgb K‡ib| eyj‡Mwiqv †_‡KI Av‡mb Ges mvaviYZ Rjmv

†`‡L Awffz— nb| Kv‡iv Kv‡iv Rb¨ G Rjmv (Avng`xqv‡Zi cwZ) ü`q Db¥y³ nevi KviY nq| eyj‡Mwiqv †_‡K AvMZ cwZwbwa‡`i mv‡_ K_veveZv nw"Qj, ZLb Zv‡`i ga¨ †_‡K GKRb hyeK ejj, Avcbviv e‡jb †h, Avgiv Aš‡i †Lv`vfxwZ iwL Ges Z`byhvqx‡i KvR Kwi| Avjvn ZvÔjvi mšvó AR‡bi Rb¨ KvR Kiv c‡qvRb Ges GRb¨B Avgiv KvR K‡i _vwK| Avcbvi Kv‡Q Gi Kx cgvY Av‡Q? ZLb Avwg ejjvg, ÔevKx K_v GK w`‡K _vK, Avgiv †h AvwdKvi wewfbœ ‡`‡k Ges cZ¨š AÂ‡j wM‡q RwZ-ag wbwe‡k‡l †mLvbKvi †jvK‡`i †mev KiwQ (Zv-B †`L)| G m¤ú‡K mgM cy‡_exi gvby AewnZ| Zvwg Rvb‡Z PvB‡j Rvb‡Z cvi| GwUB cgvY wn‡m‡e h‡_ó| Avgiv wewbg‡q Zv‡`i KvQ †_‡K wKQzB †bB bv| n¨vu Gme gvby‡K GK-†Lv`vi mwZ¨Kvi-Bev`ZKvix-ev›`vq cwiYZ Kivi c‡Póv Avgv‡`i Rvix _vK‡e| Avgv‡`i c‡Póv G D‡Ï‡k¨B Ges Avgiv G Rb¨B KvR KiwQ|

eyj‡Mwiqv †mB †`k, †hLv‡b K‡qK eQi hveZ Rvgv‡Zi ZejxM Ges me ai‡bi Kvhµ‡gi Dci wewa-wb‡la i‡q‡Q| †mLv‡b RvgvZ †iwRóvW© bq| miKvi †gvjv‡`i cfveavxb| A_P GB ARyvZ †`Lvb nq, AkvwšÍ I wek"Ljv Gov‡bvi Rb¨ GLv‡b meÎ GKB Lyeev cvV Kiv nq Ges mevB GK wdKvi †jvK| A_P †mLv‡b KvhZt Ae¯'v Gi/c bq| Avmj K_v nj, Zviv KwZcq Avie-†`k †_‡K mvnvh¨ wb‡q _v‡K| Avng`xiv ZejxM mgq hvwM cv‡e, GwU Zv‡`i mn¨ bq, G‡Z Zv‡`i KZZ.ûgwKM¯ nq| wKš' Zv m‡ËI †mLv‡b cwZeQi eqAvZ n‡"Q| Abyic fv‡e gvëv, †¯'ub, Zzi¯‹, emwbqv, cfwZ †`k †_‡K AvMZ Avng`x I A-Avng`x eÜz‡`i mv‡_I mvÿvZ n‡q‡Q| Avjvn ZvÔjvi Acvi Kcvq Zv‡`i Dci Rjmvi mKj fxi-cfve c‡o‡Q| Gevi Avwg eo nji‡g be`xwÿZ‡`i eqAvZ wb‡qwQjvg| cwZ eQi †mLv‡b be`xwÿZiv Av‡mb Ges eqAvZ K‡ib| mvaviYZ Zv‡`i mv‡_

hLb c„K wgwUs nZ, ZLb †mLv‡b eqAvZ ‡bqv nZ|

G eQi Awg ejjvg, eo nj N‡i eqAvZ bvI, †hb Ab¨ivI Zv‡Z AskMnY Ki‡Z cv‡i| Avjvn Zvôjvi Kcvq G eqAv‡Zi `k¨I Lye Cgvb-DÏxcK wQj| GK f`‡jvK †mLv‡b e‡m wQ‡jb, `xNw`b hveZ Zvi Rvgv‡Zi mv‡_ †hvMv‡hvM wQj, m¤eZ Biv‡bi Awaevmx| me wgwUs‡q Ask †bb| Zvi eqAvZ Kivi B”Qv wQj bv| wKš‘ hLb eqAvZ Abyôvb Avi¤ nq, wZwb e‡jb, A`k¨ †Kvb kw³ Avgvi nvZ m¤§yL GwM‡q w`j Ges Avwg mvg‡b AMmi n‡q nvZ evovjvg Ges eqAvZ Kijvg| Gici wZwb e‡jb, GwU mvgwqK Av‡eM e‡k wQj bv| GLb Avwg cvKv Avng`x Ges BbkvAvjvn eqAv‡Zi A½xKv‡i AUj _vKe Ges GwU‡K cvjb Kie| wZwb e‡jb, Avgvi †fZi GK bZzb DÏxcbv I Av‡eM mÂvi n‡q‡Q| Avjvn Zvôjv G‡`i mevi Cgvb I wekv‡m DbwZ `vb Ki"b Ges c‡Z¨‡K Rjmvi †h Kj¨vY ARb K‡i‡Q Zv †hb wPi¯vqx nq|

hv‡nvK, mwweKfv‡e Rvgvbxi Rjmv LyeB fvj n‡q‡Q| Avwg gv‡S gv‡S GgwUG‡Z †hme e³Zw` ï‡bwQ, Zv †_‡K ej‡Z cvwi, e³Zv mg‡ni gvbI Lye fvj wQj| G Rjmv gnv Kj¨vYgq Ges Kj¨vY-we¯viKvix wQj| KZcÿ mviv eQi Rjmvi c¯wZi Kv‡R e¨¯ wQj| Rvgvbx Rjmvi me Av‡qvRb †gvUvgywU GK Qv‡`i bx‡P nIqv m‡Ë¡I Kv‡i-Avgj Ges Av‡iv wKQzbv wKQzKvR Ki‡ZB nq| G eQi cwiK¯vb †_‡K bZzb AvMZ Avkq-cv_xiv cig DÏxcbvi mv‡_ KvR K‡i‡Q| KZcÿ e‡j‡Q, `ykZ †¯”Qv‡mex‡i c‡qvRb n‡j PvikZ †¯”Qv‡meK KvR Kivi Rb¨ G‡m †hZ| Zv‡`i Av‡e`b MÖnY Zevi cii Zv‡`i Drmvn-DÏxcbv ejer _vK‡e, Avjvni Kv‡Q GwUB Avgvi cZ¨vkv| cwiK¯v‡bi eZgvb Ae¯v Ges `xNw`‡bi eÂbvi I GKwU cfve ü`‡q i‡q‡Q, wKš‘ Avk‡qi Av‡e`b MÖnZ nevi ci I †Lv`v Zvôjvi cwZ cKZ-KZÁZv n‡e c_gZt Avjvn Zvôjvi Bev`‡Z D`vmxb bv nIqv, Avi wØZxqZt RvMwZK Kv‡Ri Rb¨ Rvgv‡Zi KvR †_‡K wcQ-cv bv nIqv| wLjvd‡Zi mv‡_ wek¯Zv Ges fvjevmvi m¤úK eRvq ivLv| GiI cwZ eQiB bZzb AwfÁZv nq| Avjvn Zvôjv G m¤úK‡K DË‡ivË‡i `p Ki"b| e¨e¯vcbv m¤ú‡KI wKQzK_v e‡j †`B, †Kbbv, †mLv‡b Zv ejvi mye‡hvM cvB wb, Avi ej‡j mviv cy_exi Rvgv‡Zi G‡Z DcKvi nq| ckvmwbK w`K †_‡K ‡gv‡Ui Dci cyiv e¨e¯vcbv fvjB wQj| wKš‘ eo Av‡qvR‡b e¨e¯vcbv- m¤ú‡K wKQz Awf‡hvM ‡`Lv w`‡qB _v‡K| Avwg Rvgvbx‡Z Avgvi Rjmvi LvZevqI e‡jwQ, A_vr Rjmvi Av‡M RvgvAv‡Z Avwg e‡jwQ| ‡Kvb †Kvb wefvM m¤ú‡K A‡bK †ewk Awf‡hvM G‡m‡Q, hvi ga¨ †_‡K GKwU nj, AwZw_‡mev wefvM Avi GwU LyeB ¸i"Z¡c~Y© wefvM| Lvevi Kg wQj A_ev Lvevi LvIqv‡bvi e¨e¯v mwVK wQj bv| gvby‡K `xNÿY A‡cÿv Ki‡Z n‡q‡Q, Avevi A‡b‡K wei³ n‡q j¤v jvB‡b `vwo‡q A‡cÿv Kivi cwie‡Z evRvi †_‡KB †L‡q wb‡Zb| gwnjv‡`i I GKB Ae¯v wQj| G-Kvi‡Y ev”Pv‡`i I nqivwb n‡Z n‡q‡Q| cyi"l Ges gwnjv-Kgxiv I A‡bK mgq Lvevi cvb wb| gwnjv‡`i wb‡R‡`i e¨e¯v wb‡RivB K‡i‡Q| c_g w`b A_ev GK‡ejv G Ae¯v mÂó nevi ci Awdmvi Rjmv Ges Zvi e¨e¯vcbvi DwPZ wQj, Zvrÿ wYK c`‡ÿc †bqv, KviY LyR †ei Kiv †h, wK-Kvi‡Y Ggb n‡”Q| nqZ Zviv G wel‡q †Póvi K‡iwQ‡jb| wKš‘ cwi‡k‡l Gi DËg djvdj mvg‡b Av‡mwb Ges †kl w`b chš‘ G Îæw †_‡KB †M‡Q|

> **AvR Bmjv‡gi mi¶v Ges AvµgbKvix‡`i mvg‡b hw³-cgvY Gi gva¨‡g ‡Rvi‡jv cwZDËi †Kej Avng`xqv gmwjg RvgvÕZB w`‡Z cv‡i|**

KZc‡ÿi me`v GUv ¯§iY ivLv DwPZ Ges me`v G-ixwZ P‡j Avm‡Q| cwiK¯v‡bi Gfv‡e nZ| cwZw`b iv‡Z Awdmvi Rjmv mvjvbv me bv‡qe Awdmvi Ges bv‡hg‡`i mv‡_ wgwUs Ki‡Zb Avi †mLv‡b mg¯ wefv‡Mi †Kv_vq †Kv_vq NvUwZ i‡q‡Q, Avi cieZx w`b Kxfv‡e Zvi mgvavb m¤e, Zv wb‡q chv‡jvPbv Kiv nZ| j½iLvbvi wnmve †bqv nZ, Lvevi KZUzKz ivbv Kiv n‡q‡Q Ges KZRb AwZw_ †L‡q‡Qb| Lvev‡i Uvb c‡o‡Q Kx? AwZwi³ ivbv Ki‡Z n‡q‡Q Kx? bvwK Lvevi †eu‡P †M‡Q Avi †m-†gvZv‡eK c‡ii w`‡bi wnmve †bqv nZ| AwZw_‡mev wefv‡Mi KvR n‡”Q, Awf‡hvM‡K D‡cÿv bv K‡i Awdmvi Rjmv mvjvbv‡K AewnZ Kiv, AvR‡K GZRb AwZw_ A_ev GZRb Kgx Lvevi †L‡q‡Q Ges GZRb Lvevi cvqwb? Lvevi bv cvevi KviY Kx, Zv wZwb wbYq Ki‡eb? Z‡e wbqwgZ Gi †iKW ivLv DwPZ| G chv‡jvPbv †_‡K cÖvq cieZx w`b A_ev cieZx mgq Lvev‡ii DËg-e¨e¯v Kiv m¤e nZ| hw` G wel‡q wbqwgZ wgwUs Ges c‡ii w`‡bi cwiKíbv Kiv nZ, ZvnÕ‡j Zvrÿ wYKfv‡e DËg-mgvavb n‡Z cviZ| Gfv‡e GKwU cwi`kb wefvMI _v‡K Ges Awdmvi Rjmv mvjvbvi GKwU wefvM †_‡K _v‡K, Zviv wewfbœ mnKvix _v‡Kb, hviv wewfbœ-RvqMvq wM‡q mwVKfv‡e KvR n‡”Q wK-bv, Zv cwi`kb Ges chv‡eÿY K‡ib?

Ri#ix-Ae¯v n‡j ZLbB ms‡kva‡bi †Póv Kiv nq| hv‡nvK, GB wefvM‡K Av‡iv kw³kvjx Kiv c‡qvRb|

GKBfv‡e Rjmv-Mvn, †MvmjLvbv Ges Uq‡j‡Ui NvUwZ †`Lv w`‡q‡Q, A_P G-Kg‡c‡·i ‡fZ‡i AMwYZ †MvmjLvbv evbv‡bv Av‡Q; nqZ †Kvb Kvi‡Y Zv †Lvjv nqwb| G Kvi‡Y wKQzeq¯‹-bvix-cyiæ‡li Kó Ki‡Z n‡q‡Q| A_P Amy¯’ Avi Aÿg‡`i Rb¨ c„_K Ges DbZgv‡bi e¨e¯’v n‡Z cviZ Ges nIqv DwPZ wQj| Avi mvaviYZ Gme †`‡k‡Zv n‡qB _v‡K| we‡kl K‡i wbqgbxwZi †ÿ‡Î cyiæl I gwnjv-Kgx‡`i GZUv K‡Vvi nIqv DwPZ bq| Avcbv‡`i KvR nj, c‡Z¨‡Ki ¯^v”Q‡›`¨i weavb Kiv| c_‡g hw` †MvmjLvbv †Lvjvi Abygw`Z bv †bqv n‡q _v‡K, Zvn‡j e¨e¯’vcK‡`i DwPZ wQj we‡kl Ae¯’vi cwi‡cÖwÿ‡Z `#Z Abygw`Z wb‡q Zv Ly‡j †`qv| hw` fvovi ck _v‡K, Avi mvk‡qi wPšv _v‡K, wVK Av‡Q, A_ mvkq Kiv A‡bK fvj K_v wKš Avgv‡`i‡K me`v ¯§iY ivL‡Z n‡e, AwZw_‡`i AwZ‡_qZvi g‡j¨ Avgiv A_ evPv‡Z cwi bv| AwZw_‡mevq Î#wU K‡i A_ evPv‡bvi ceYZv wVK bq| AwZ_¨ me wKQzi Dci cvavb¨ iv‡L Avi c‡Z¨K wel‡qi Dci G‡K AMwaKvi w`‡Z n‡e|

Awdmvi Rjmv ev Rjmvi m‡ev”P KgKZvi GKwU we‡kl Uxg hw` G e¨vcv‡i bhi`vix KiZ, Zvn‡j †h NvUwZ¸‡jv wewfb ¯'v‡b †`Lv w`‡q‡Q ev †h mgm¨v †`Lv †M‡Q, Zv ‡`Lv w`Z bv| Gfv‡e †Kvb †Kvb we‡`kx AwZw_i cÿ †_‡KI Awf‡hvM D‡V‡Q| BD‡ivc ev Ab¨vb¨ †`k †_‡K ‡hme bI‡gvevCb ev bevMZ Avng`x G‡mwQ‡jb, Zv‡`i †`Lvïbv Kivi gZ †KD wQj bv, hvi Kvi‡Y `ywGKRb Amšó n‡q wd‡iI †M‡Qb| c_gZt †h-†`k †_‡K Zviv G‡m‡Qb, †m †`‡ki Avgxi I gyieŸx ev ZËveavqK †h‡nZzZv‡`i‡K mv‡_ K‡i G‡bwQ‡jb, ZvB Zv‡`i †`Lvïbv Kiv Ges c‡qvRbxq mKj mvnvh¨ Kiv DwPZ wQj| Avi hw` Zv‡`i mv‡_ †KD bv G‡m _v‡Kb Zvn‡j mvÿv‡Zi ¯’vb Ges e¨e¯’vcbv m¤úK© cÖ`vb- Z_¨w` Zv‡`i mieivn Kiv DwPZ wQj| GQvov Af¨_bv, AwZ‡_qZv, Avevmb I cwKsmn cwZwU wefv‡Mi KvR nj, cÖwZwU †hvMv‡hvM ivLv Ges Zv‡`i‡K mwVK w`K- wb‡`kbv c`v‡bi e¨e¯’v Kiv|

GKBfv‡e bI‡gvevCb ev AwZw_ wn‡m‡e hv‡`i‡K wb‡q Avmv n‡q‡Q, Rjmvi ci Zv‡`i wdiwZ cwien‡bil †Zgb e¨e¯’v wQj bv| A‡bK‡K ivZ 10Uv chš A‡cÿv Ki‡Z n‡q‡Q| A_P Af¨_bv-wefv‡Mi DwPZ wQj, wdiwZ-cwien‡bi mgÿe¨e¯’v Kiv| K‡qKRb‡KI hw` GB e¨e¯’vcK‡`i `gyjZvi Kvi‡Y †Kvb K‡ói m¤§yxb n‡Z nq, Zvn‡j GwU `yó-AvKI‡Yi `vex iv‡L| AvMvgx‡Z Gi ms‡kva‡bi †Póv Kiv DwPZ|

nhiZ gmxn gID` (Av.)-Gi AwZw_‡`i AwZ‡_¨i NUbv Avgiv Anin ïwb‡q _wK| ‡hgb, gwbcyi †_‡K AwZw_ Av‡mb, Avi j½iLvbvi mvg‡b G°v Mwo †_‡K bv‡gb, Avi j½iLvbvi †meKiv Zv‡`i gvjvgvj mwVKfv‡e bv bwg‡q e‡jb, wb‡RivB gvjvgvj bvgvI ev Ab¨‡Kvb K_v nqZ e‡j _vK‡eb| Zv‡`i AvPi‡Y Amšó n‡q AwZw_iv wd‡i hvq| nhiZ gmxn gID` (Av.)-Gi Kv‡Q GB Lei hLb †cŠQj, wZwb ZrÿYvr `#ZZvi mv‡_ Zv‡`i wcQ‡b wcQ‡b †M‡jb| Zviv †Nvovi Mwo‡Z K‡i wd‡i hw”Q‡jb, nhiZ gmxn gID` (Av.) b`xi cv‡o wM‡q Zv‡`i‡K _vg‡jb Ges ‡mLvb †_‡K Avevi Kw`qvb wb‡q Av‡mb| Avi G‡m wZwb (Av.) wb‡RB Zv‡`i gvjvgvj bvgv‡bv Avi¤¢ K‡ib| Kv‡RB GB nj AwZ‡_qZvi DËg-`„óvšÍ, hv Avgv‡`i mvg‡b i‡q‡Q| GwU me`v Rvgv‡Zi wefvM¸‡jv‡K, e¨e¯’vcbv‡K Ges c‡Z¨K Avng`x‡K mvg‡b ivLv DwPZ|

AZGe, Avgv‡`i gvb‡K Av‡iv DbZZi Kiv DwPZ| Rvgvbx‡Z c`Ë Avgvi c_g Lyzev‡ZI G welq¸‡jvi cwZ `„ó AvKlY K‡iwQjvg| wKQzbvI hw` Gi cwZ g‡bv‡hvM †`qv nZ, Zvn‡j wewfb †ÿ‡Î †h mgm¨v †`Lv w`‡q‡Q ev Kv‡iv Kv‡iv †h Kó n‡q‡Q, Zv nZ bv| Gi Kvi‡Y e¨e¯’vcK‡`i Ab¨ fvj Kv‡Ri djvdjI bó n‡q hvq| mg¯ cÖw_ex‡Z Rjmv n‡q _v‡K| GLv‡bI, A_vr BD‡K‡ZI BbkvAvjvn Zvôjv Rjmv n‡e, hv‡K mvaviYZ †K›`xq-Rjmv ejv n‡q _v‡K| AZGe Zv‡`i‡K Ges cÖw_exi me †`‡ki Rjmvi e¨e¯’vcK‡`i‡K Mfxifv‡e GB K_v¸‡jv chv‡jvPbv Ki‡Z n‡e| GwU g‡b Ki‡eb bv †h, GKwU †`‡k Ggb NUbv N‡U‡QÑ Avgv‡`i Rb¨ bq| ‡h †h ¯'v‡b `gyjZv Ges NvUwZ i‡q‡Q, Avi †h †h wefv‡M Î#wU i‡q‡Q †mLv‡b Zv `~i Kiv DwPZ, †hb Rjmvi cweÎ-cfve meÎ weivRgvb _v‡K|

gwnjv‡`i m¤ú‡K© ejwQ, †gv‡Ui Dci cavb-n‡j AwaKvsk mgq wbieZv eRvq wQj, wKš wkïi‡`i nj m¤ú‡K GB wi‡cvUB cvIqv hvq, wkïi‡`i †kvi‡Mv‡ji Ahyw‡Z gwnjviv wb‡RivB A‡bK †ewk K_v-evZvq wjß nb, hv nIqv DwPZ wQj bv Avi G m¤ú‡K Awg †mLv‡bB e‡jwQ| AvMvgx‡Z GB wel‡q mveavb _vK‡Z n‡e|

hv‡nvK, G mewKQzm‡Ë¡I †hfv‡e Awg Lyzevi ïi#Z e‡jwQjvg, Rjmv †gv‡Ui Dci AZ¨š fvj n‡q‡Q| Abyôvbgvjv fvj wQj, e³Zv¸‡jvI fvj n‡q‡Q| †jvK‡`i Drmvn-DÏxcbv wQj DbZ- gv‡bi| Avjvn Zvôjv Gi Kj¨vYiwR ¯'vqx Ki#b| Rjmvq AskMnYKvix mevi †mBme Kgx‡`i cwZI KZÁZv cKvk Kiv DwPZ, hviv Zv‡`i Rb¨ KZe¨ cvjb K‡i‡Qb, mgq w`‡q‡Qb, kg w`‡q‡Qb| Avjvn Zvôjv G‡`i mevB‡K Gi DËg cwZ`vb w`b| Avi bvix-cyiæl mKj-Kgx‡K †Lv`v Zvôjvi cwZ KZÁZv cKvk Kiv DwPZ G Kvi‡Y †h, Avjvn Zvôjv Zv‡`i‡K nhiZ gmxn gID` (Av.)-Gi AwZw_‡`i †mev Kivi mylhvM w`‡q‡Qb| Avjvn Zvôjv me`v G‡`i mevB‡K Ges c‡Z¨K Avng`x‡K ci¯ú‡ii Rb¨ mnvbyfwZ I †mevi †ciYvq DÏxß ivLyb|

(Rv‡gqv Avng`xqv evsjv‡`k I evsjv †W‡¯‹i †hš_ c‡Póvq Abyw`Z)

RygyAvi LyZev

‰mq¨`bv nhiZ Avgxiæj gy'wgbxb LwjxdvZzj gmxn Avj Lv‡gm (AvB.) KZ©„K Rvgvbxi Kvjmiæ‡ni Rjmv Mv‡n c`Ë 1 Ryb 2012-Gi (1 Gnmvb, 1391 wnRix kvgwm) RygyAvi LyZev

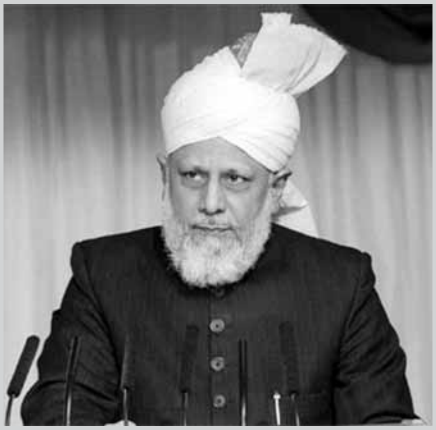

gvbeZvi AwaKvi Av`v‡qi cwZ D`vË AvnŸvb

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۞ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۞
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۞ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۞

evsjv †W¯‹ wbR `vwq‡Z LyZevi GB e½vbyev` Dc¯'vcb Ki‡Q|

AvR Avng`xqv gymwjg RvgvZ, Rvgvbxi evwl©K Rjmv Avi¤¢ n‡”Q, Avjnvg`ywjjvn| Rjmvi e¨e¯'vcKiv MZev‡ii mgm¨v¸‡jv mvg‡b †i‡L Gevi gv‡bvbœq‡bi †Póv K‡i‡Qb| Gi gv‡S mev‡M wQj kã¸vb_ ev e³Zv` mwVKfv‡e †kvbvi e¨e¯'v Kiv| AvR †evSv hv‡e †h, G †¶‡Î KZUv DbœwZ n‡q‡Q|

MZev‡ii Rjmv GLv‡b GB n‡j ev Kvjmiæ‡n‡ZB Abyôvb n‡qwQj Ges †mwU c_g Rjmv wQj| ZvB Rvbv K_v, bZzb ¯'v‡b wewfbœ mgm¨v ev Î"wU-wePy¨wZ †`Lv w`‡ZB cv‡i| GwU Ggb ‡Kvb welq bq, hvi Rb¨ e¨e¯'vcK‡`i Ac‡qvRbxq mgv‡jvPbv Kiv †h‡Z cv‡i ev AvcwË Kiv †h‡Z cv‡i| n¨vu ‡`vlv‡ivc Kiv hy³hy³ nZ, hw` Zviv wb‡R‡`i fyj-åvwšÍi cwZ `„wó bv w`Z, Avi mgvav‡bi †Póv bv KiZ|

wKš' Avwg †hgb e‡jwQ, e¨e¯'vcKiv wb‡R‡`i `ye©jZvi cwZ mZK `„wó †i‡L `ye©jZv `~i Kivi AvcÖvY †Póv K‡i‡Qb| Abyiƒcfv‡e, MZevi bZzb RvqMv nevi Kvi‡Y e¨‡qi Abygvb fzj wQj, d‡j LiP wKQzUv †e‡o wM‡qwQj, Gevi e¨q ms‡KvP‡bi †Póv Kiv n‡q‡Q| wKš' Zey GwU wbwðZ, GL‡bv Av‡iv DbœwZi my‡hvM _vK‡e| G w`‡K e¨e¯'vcbv‡K `„wó w`‡Z n‡e| Dbœqbkxj RvwZ cÖ‡Z¨K AwfÁZv‡K Kv‡R jvMvq Ges mvg‡b AMÖmi nq, DbœwZ Ki‡Z _v‡K| A‡bK mgq wb‡R‡`i AwfÁZv‡K Kv‡R jvwM‡q, Avevi KL‡bv A‡b¨i AwfÁZv‡K Kv‡R jvwM‡q| cÖwZwU fvj cÖvgk Ges cÖwZwU fvj wRwbm‡K Kv‡R jvMv‡Z †Póv K‡i| G K_vwUB Avgv‡`i wcÖq bex ûhyi (mv.) Avgv‡`i‡K e‡j‡Qb, ÔcÖwZwU fvj K_v Ges cÖÁvc~Y© K_v gy'wg‡bi nvwiv‡bv m¤ú`, Zv †hLv‡bB cvI, Kzwo‡q bvI, †Kbbv GiB gv‡S Ava¨wZ¥K Ges Bn RvMwZK DbœwZi inm¨ wbwnZ Av‡QÕ|

MZeQi Avwg hLb Rvgvbx‡Z G‡mwQjvg, ZLb ‡mLvbKvi cv‡`ikK-Mfb©‡ii ghv©`vq AwaôZ jW© †gqi ev †gq‡ii mvg‡b GB nv`xmwUB D‡jøL K‡iwQjvg| wZwb ï‡b e‡jwQ‡jb, Ôhw` GwUB †Zvgv‡`i wkÿv nq Ges GgbB †Zvgv‡`i KvR n‡q _v‡K, Zvn‡j ‡Zvgiv AwP‡iB RMØvmx‡K Rq K‡i †b‡e ev Zviv †Zvgv‡`i mv‡_ †hvM †`‡eÕ| Kg‡ewk cvq Ggb K_vB wZwb e‡jwQ‡jb, GwU‡Zv n‡eBÑ BbkvAvjvn|

Avgiv hw` ÔDbœwZi c‡_ avegvb-RvwZÕ nB‡Z hvB Aek¨B, Zvn‡j Avgiv ‡Kvb `ye©jZv †`‡L †PvL eyR e‡m _vK‡Z cvwi bv| Avgv‡`i Ae¯'vi DbœwZi w`‡K bhi w`‡ZB n‡e| ms‡kvab‡i †Póv K‡ZB n‡e| ‡Kej ïayGwUB bq †h, Avgiv RvMwZK-`„wó‡Z ‡`Le| eis Avgv‡`i `vex n‡”Q, Avgiv nhiZ gmxn gID` (Av.)-‡K ‡g‡bwQ, whwb we‡k¦i eyh©yK nhiZ gyvv¤§` (mv.)-Gi me‡P‡q eo wbôvevb †cwgK, wZwb Avgv‡`i‡K Avjvni cÖvc¨ AwaKvi Avjvn‡K c`v‡bi wkÿv w`‡Z G‡m‡Qb| wZwb Avgv‡`i‡K gvbyl‡li AwaKvi c`v‡bi K_v ej‡Z G‡mwQ‡jb| Gme Kvi‡Y Avgv‡`i DwPZ, Avgiv †hb c‡Z¨K-wel‡q c‡Z¨K K_vq, ZvKIqvi Dci cÖwZwôZ _wK, ZvKIqvi cÖwZ bRi ivwL| Avjvni fq Avgv‡`i Aš‡i RvMiæK ivL‡Z n‡e| GQvov, Avgiv nhiZ gmxn gID` (Av.)-Gi mv‡_ †h A½xKvi K‡iwQ, Zv Avgv‡`i cvjb Ki‡ZB n‡e|

AZGe, Gme welq `„wó‡Z †i‡L Avgv‡`i‡K Avgv‡`i me ai‡bi `ye©jZv `~i Ki‡Z n‡e Ges Gi Rb¨ mva¨gZ †Póv Ki‡Z n‡e| ïaycÖkvmwbK-`ye©jZv bq, eis e¨w³MZ `ye©jZvI `~i Ki‡Z n‡e| Avi Rjmvq AskMÖYKvix cÖ‡Z¨K e¨w³ hLb G wPšÍv-‡PZbvi mv‡_ Rjmvq Avm‡e, cÖwZwU bi-bvix hLb Zv‡`i wPšÍv-fvebvq Ggb DbœZ mvab Ki‡e Ges e¨e¯'vcbvI G welq¸‡jv mvg‡b †i‡L, ev Gfv‡e ejv †h‡Z cv‡i †h, ZvKIqvi wbwi‡L KvR Ki‡e Ki‡e, ZLb AskMÖYKvix I Kgx mK‡jB Rjmvi Kj¨v‡Y fyÏZ n‡e, Avi †gv‡Ui Dci, RvgvZ DbœwZi ‡mvcvb µgkt gvov‡Z _vK‡e, BbkvAvjvn|

me`v g‡b ivL‡eb! Rjmvi D‡Ïk¨ eYbv Ki‡Z wM‡q nhiZ gmxn gID` (Av.) †hLv‡b Bev`Z, Zejxm, ZvKIqv Ges Ab¨vb¨ wKQz D‡Ï‡k¨i cÖwZ `„wó-AvKlY

Avgv‡`i `ve¨ n‡"Q, Avgiv nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.)-‡K ‡g‡bwQ, wh‡bw we‡ki e¨vK nhiZ gmxn¤§` (mv.)-Gi me‡P‡q eo wbôvevb †cwgK, wZwb Avgv‡`i‡K Avjvni cvc¨ AwaKvi Avjvn‡K c`v‡bi wkÿv w`‡Z G‡m‡Qb| wZwb Avgv‡`i‡K gvbyli AwaKvi c`v‡bi K_v ej‡Z G‡mwQ‡jb|

Gme Kvi‡Y Avgv‡`i DwPZ, Avgiv †hb c‡Z¨K-wel‡q c‡Z¨K K_vq, ZvKIqvi Dci cwZwôZ _wK, ZvKIqvi cwZ bRi iwL|

Avjvni fq Avgv‡`i Aš‡i RvMiæK ivL‡Z n‡e| GQvov, Avgiv nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.)-Gi mv‡_ †h A½xKvi K‡iwQ, Zv Avgv‡`i cvjb Ki‡ZB n‡e|

K‡i‡Qb, †mLv‡b we‡kl fv‡e ev›`vi cvc¨-AwaKvi I mƒói cwZ mngwgZvi wel‡q A‡bK wKQze‡j‡Qb| Avm‡j gvbyli g‡S hw` mƒói cwZ mngwgZvi h_vh_ ‡PZbv R‡b¥, Z‡e ev›`vi cvc¨-AwaKvi Ggwb‡ZB msiwÿZ n‡e| AZGe c‡Z¨K Avng`x‡K G-w`‡K g‡bv‡hvMx n‡Z n‡e|

nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.) Rjmvi wel‡q hLbB weÁvcb w`‡q‡Qb ev †NvlYv w`‡q‡Qb, ZLbB G wel‡qwU we‡kl fv‡e Av‡jvPbv K‡i‡Qb| wZwb †hLv‡b Avjvn Zvôjvi fq-fxwZ, ZvKIqv, mvaÿZv, BZ¨w`i cwZ `„ó AvKlY K‡i‡Qb, †mLv‡b bgbxqZv, cvi¯úwiK fvjevmv, fvZZ¡-eÜb, webq I b¤ZvI cwZI `„ó AvKlY K‡i‡Qb| wZwb e‡j‡Qb, wbQK Bev`‡Zi bvgB ZvKIqv bq, ïayRvgv‡Zi †mev Kivi bvg ZvKIqv bq, ïayAvjvn I Zvu im‡~ji cwZ fvjevmvi ewntcKvk Kivi bvg ZvKIqv bq, †Kejgvî gmxn gIDˆ` (Av.) I wLjvd‡Z Avng`xqvi mv‡_ m¤úK ¯vc‡bi bvg ZvKIqv bq, eis ZvKIqv ZLbB c¥Zv_c‡e, hLb wcZvgvZv, ¯x-mšvb, ¯vgx-mšvb, AvZ¥xq ¯Rb, eÜzevÜe, cwZ‡ekx, fvB-†evb, Rvgv‡Zi m`‡m¨i, GgbwK hLb kÎæi cvc¨ AwaKvi I c`vb Kiv n‡e| Avi Gme wkÿv cweÎ KzAv‡b i‡q‡Q|

Avgiv Rjmvq AskMnY K‡iwQ, †hb Avgiv Avgv‡`i Ava¨wZ¥K-DbwZi DcKiY mƒó Ki‡Z cvwi| Kv‡RB, Rjmvq AwMZiv †hLv‡b Zv‡`i Bev`Z I Avjvn Zvôjvi weæa-weavb cvj‡bi cwZ `„ó w`‡eb, A_vr †hLv‡b Avcbviv Bev`Z, bvgvh, †`vqv I whK‡i-Bjvnxi cwZ g‡bv‡hvMx n‡eb, †mLv‡b cvi¯úwiK AvšwiKZv I mngwgZvi wel‡q AvZ¥we‡klY Kiæb| Ab¨_vq G-K_v mZ¨ †h, Avcbviv Ggb GK ¯v‡b DcwZ n‡q‡Qb, wewfb-ai‡bi gvbyli mgvMg n‡q‡Q, Ggb GK ¯v‡b G‡m †M‡Qb, †hLv‡b AvZ¥xq-¯Rb Ges wKQz mggbv gvbyl G‡m‡Q, Ggb GK ¯v‡b G‡m G‡m‡Qb, †hLv‡b wKQzÁvbMf I wkÿvg~jK e³Zv. nqZ Avcbviv Dc‡fvM Ki‡eb, wKš cKZ-D‡Ïk¨ mvab n‡e bv|

†Kbbv, nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.) gvbewaKvi I we‡kl K‡i fvB‡qi cwZ mngwgZvi wel‡q `„ó AvKlY K‡i‡Qb| (G chv‡q ûhi- e‡jb, cwZaŸb n‡"Q, e¨e¯vcK‡`i Kv‡Q Awg RvbZ PvB; gvbyl ïb‡Z cv‡"Q wKbv?) GKevi ‡Kvb we‡kl Ae¯v I Rvgv‡Zi KwZcq †jv‡Ki AvPi‡Yi Kvi‡Y nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.) ôRjmv mvjvbvô ¯wMZ †NvlYv Ki‡Z wM‡q e‡jwQ‡jb, ôAwg Rvb‡Z †c‡iwQ, ‡Kvb †Kvb eÜz RvgvZfz³ n‡q Ges G Aa‡gi nv‡Z eqAvZ K‡i weï× ZIevi A½xKvi Kiv m‡Ë¡I Ggb eµ-ü`‡qi AwaKvix †h, Rvgv‡Zi `wi`-fvB‡`i‡K †bK‡oi `„ó‡Z †`‡L| AnsKv‡ii Kvi‡Y fv‡jv e¨envi I mnvbyfwZ c`kb †Zv `‡ii K_v, mvjvgI w`‡Z Pvq bvô| wZwb (Av.) e‡jb, ôAwg Zv‡`i‡K nxb I ¯v_ci g‡b Kwi| KviY, Zviv ZZ¡Q-¯v‡_ weev‡` wjß nq| A‡b¨i mv‡_ SMov euavq Ges Ab_K A‡b¨i Dci Avµgb K‡i e‡m| cvqkt weev` Mvjg›` chš Movq Ges ü`‡q we‡Øl jvjb K‡iô| wZwb (Av.) e‡jb, ôAwg Avðhw̃šZ nB, †n Avjvn, G wK Ae¯vÑ G †Kvb RvgvZÑ hviv Avgvi mv‡_ Av‡Q? Aeva¨-ce„Ëi `vmZ Zviv †Kb K‡i, †Kb GK fvB Ab¨ fvB‡K Kó †`q, Ges †Kb GKRb Ac‡ii PvB‡Z Dc‡i _vK‡Z Pvq? Awg mZ¨ mZ¨ ejwQ, A‡b¨i Avivg‡K wb‡Ri Avivg‡gi Dci h_vmva¨ cvavb¨ bv †`qv chš Kv‡iv Cgvb cwic¥Zv jvf Ki‡Z cv‡i bvô|

wZwb (Av.) e‡jb, ôhZw`b Avgvi Rvgv‡Zi m`m¨‡`i g‡a¨ Avjvni Zvôjv Avcb-Abyf‡n `qvgvqv, b¤Zv, mnvbyfwZ I kgmvabvi Af¨vm mƒó bv Ki‡eb, ZZw`b chš Rjmv Kiv Awg mgxPxb e‡j g‡b Kwi bvô|

AZGe †`Lyb! Rvgv‡Zi m`m¨‡`i ci¯ú‡ii g‡S †cg-cxwZ, fvjevmv, mnvbyfwZ Ges A‡b¨i cwZ Z¨v‡Mi gvbwmKZv bv _vKvi `iæb nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.) KZ `yL-Kó I gb‡e`bvi ewntcKvk K‡i‡Qb, GgbwK, kw¯-¯i¦c Rjmv I ¯wMZ K‡i‡Qb| A‡b‡K g‡b K‡ib, e¨e¯vcbv I DcKiYw`i AcZzjZvi Kvi‡Y wZwb (Av.) Rjmv n‡Z †`b wb| A_P, Gi KviY wQj

ci¯'ú‡ii cwZ mnvbyf~wZi Afve Ges wKQz‡jv‡Ki AnsKvi ev AnwgKv c`kb, hv nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.)-†K cPÛ e¨w_Z K‡i‡Q| Avgvi g‡b Av‡Q, K‡qK eQi c‡e Rvgvbx‡Z Avwg GK Ri‡ix kiv †W‡KwQjvg| †mLv‡b Rjmv-m¤ú‡K Av‡jvPbvi mgq GK GKR‡bi K_vq Avgvi g‡b nj, Zvi ev Kv‡iv Kv‡iv g‡Z GK eQi Rjmv bv nIqv DcKiYw`i NvUwZi Kvi‡Y wQj| Avm‡j DcKiYw`i NvUwZ GKwU Avbyl½K-KviY wQj gvÎ, Z‡e ci¯'ú‡ii cwZ mnvbyf~wZi Afv‡ei Kvi‡Y nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.)-Gi †h gbtKó n‡qwQj, †mwUB Rjmv ¯'wMZ nevi g~j KviY wQj| ZvB me`v g‡b ivL‡eb, ci¯'ú‡ii cwZ mnvbyf~wZ c`kb bv Kiv Ges G‡K Ac‡ii mb¥vb bv Kiv †Kvb mvaviY welq bq| c‡Z¨K Ggb Avng`x, †h A‡b¨i-AwaKvi c`vb K‡i bv Ges A‡b¨i cwZ mnvbyf~wZ iv‡L bv, ‡m †hb nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.)-Gi GB evK¨wU me`v wb‡Ri mvg‡b iv‡L, ÔAvwg eoB Avð‡hwšZ nB, ‡n Avjvn, G wK Ae¯'v! G †Kvb RvgvZ, hv Avgvq m½ w`‡"Q?Õ

Avwg †hfv‡e e‡jwQ, G Rjmvi D‡Ïk¨ ïaygvÎ Avjvn Zvqvjvi AwaKvi mgn c`v‡bi g‡a¨B mxgve× bq, eis ev›`vi-AwaKvi c`v‡bi cvkcvwk wb‡R‡`i g‡a¨ cwieZ©b Avb‡Z n‡e, Avi GwU AZ¨vek¨Kxq| wZwb (Av.) Pig Av‡ÿ‡ci mv‡_ ej‡Qb, Zviv bvgvh c‡o wVKB, wKš' bvgvh Kx-Zv Zviv Rv‡b bv| hZÿY chš' Aš'i webq I Avbyl‡Z¨i wmR`v bv Ki‡e, ZZÿY chš' ‡Kej ewn¨K-wmR`vi Dci fimv Kiv `ÿwkv gvÎ|

AZGe webq, b¤ZZv Ges wbR fvB‡qi cwZ mnvbyf~wZi g‡bvfve mu„ó bv-nIqv chš' †KD †hb Zvi bvgvh, RvgvZx †mev, †Kvb c` jvf Ges Avw_K Kzievbxi Kvi‡Y Avbw›`Z I Zß bv nq| Avjvni I ev›`vi cvc¨-AwaKvi c`v‡bi g‡bvevmbv hvi g‡a¨ we`¨gvb, †m cKZc‡ÿ ZvKIqvi c‡_ Pj‡Z Avi¤¢ K‡i| ZvKIqvi Dci cwiPwjZ e¨w³ cÿ¨-Kg K‡i KL‡bv Zß nq bv, Ges Zvi g‡a¨ AnsKvi _v‡K bv| eis, Zvi g‡S †Lv`v-fxwZ DË‡ivËi e"w× †c‡Z _v‡K| eis cwZwU mrK‡gi ci Zvi g‡b GB mskq `vbv evu‡a †h, Rwb bv, Avgvi GB Kg †Lv`vi-mwbav‡b MÖnxZ n‡q‡Q wK-bv? AZGe cKZ-cÿ¨ ZvKIqvi Rb¨ †`q Ges ZvKIqv gvbyl‡K i gv‡S webq I b¤ZZv mu„ó K‡i, Avi nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.) G-welqwUB Avgv‡`i gv‡S mu„ó Ki‡Z G‡m‡Qb| A‡b¨i cwZ mngwgZvi †PZbv RvMZ ivLvi ¸iæZ G-†_‡K Abygvb K‡i wbb, eqAv‡Zi kZvejx, hv GKRb Avng`xi Rb¨, cKZ-Avng`x gyjgvb e‡j AvL¨wqZ nevi †gŠwjK welq, Gi PZz_© k‡Z wZwb (Av.) e‡jb, ÔcewË D‡ËRbvi e‡k Avjvni †Kvb mu„ó Rxe‡K, we‡kl Zt †Kvb gymjgvb‡K nvZ, wRnŸv ev Ab¨ †Kvb Dcv‡q †Kvb cKvi Ab¨vq Kó w`‡e bvÕ|

AZGe GK Avng`x gymjgv‡bi cÿ †_‡K, ïayAvng`x-gymjgvbB bq eis c‡Z¨K gymjgvb mKj-cKvi Ab¨vq- Kó †_‡K wbivc‡` _vKv DwPZ| Avi, †Kej mKj gymjgvbB bq, eis Avjvn Zvqvjvi mu„ó mKj Rxe wbivc‡` _vKv Avek¨K| A‡b‡K Ggb Av‡Qb, hviv KvD‡K Kó †`q bv, wb‡Ri Kv‡RB e¨¯Í _v‡K, Kó †`qvi †bvsivgx †_‡K cwieZ© _v‡K G ‡_‡K †m †hb g‡b bv K‡i †h, †m cÿY¨i DbZ-wkL‡i c`vcY K‡i †d‡j‡Q| gÂyg‡bi c‡Z¨K c`‡ÿc mvg‡bi w`‡K AMmigvb _v‡K| ZvB Zv‡K Av‡iv mvg‡b AMmi n‡Z n‡e, Ggb bv n‡j ZvKIqv I Cgv‡b DbwZ m¤¢e bq| GRb¨B nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.) eqv‡Zi kZvejxi gv‡S beg k‡Z e‡j‡Qb, ÔAvjvn Zvqvjvi cwZ jv‡fi D‡Ï‡k¨ Zvu mu„-Rx‡ei †mevq hZevb _vK‡e Ges †Lv`vi-†`qv wbR k³ I m¤ú` h_vmva¨ gvbe-Kj¨v‡Y wb‡qwRZ Ki‡eÕ|

AZGe, Avjvn Zvqvjvi mš'ó AR‡bi j‡ÿ¨ KZ.cÿ¨KgB ÔcKZ.cÿ¨Õ e‡j AvL¨wqZ n‡e| Avi GB mš'ó jv‡fi Rb¨ GK e¨w³ Zvi mKj k³-mvg_ I ab-m¤ú` Avjvn Zvqvjvi mu„-Rx‡ei †mevq wb‡qwRZ K‡i| Avjvn Zvqvjvi mu„ Rx‡ei gv‡S me‡P‡q †miv n‡jv gvbyl, hv ÔAvkivdzj gvLjyKvZÕ| AZGe cKZ-gvbyl ZLbB nIqv hvq, hLb gvbewaKvi wbwðZ Kivi cwZ `„p _v‡K, A‡b¨i DcKvi mva‡bi cwZ g‡bv‡hvM wbe× nq| Avwg c‡e I K‡qKevi e‡jwQ, Agymjgvbiv, hviv gvbyl‡i-AwaKv‡ii K_v e‡j, Avwg Zv‡`i mvg‡b Bmjv‡gi GB †mŠ›`h Dc¯'vcb K‡i _wK, †Zvgv‡`i RvMwZK-e¨e¯'vcbv wbQK KZK AwaKvi wbw`ó K‡i e‡j, G¸‡jv Avgv‡`i AwaKvi| AZGe Avgv‡`i‡K GB AwaKvi `vI, bB‡j ej c‡qvM Kiv n‡e| Aciw`‡K, Bmjv‡gi wkÿv nj, †Zvgiv Avjvn Zvqvjvi mš'wói cZ¨vkx n‡q _vK‡j ci¯'ú‡ii AwaKvi c`vb Ki|

gvbyl‡i ci¯'ú‡ii-cwZ †h `wqZ Av‡Q, Zv Avjvn Zvqvjv cwieZ© KziAv‡b e‡j w`‡q‡Qb| Kv‡RB RvMwZK- e¨e¯'vcbv Avi †Lv`v Zvqvjvi e¨e¯'vcbvi gv‡S GwU nj †gŠwjK cv_K¨| RvMwZK-e¨e¯'vcbv AwaKvsk mgqB ïay wb‡R‡`i AwaKvi ev cvc¨ Av`v‡qi K_v e‡j, Avi GiRb¨ KL‡bv KL‡bv Am`yvqI Aej¤b Kiv nq| Avi ‡Lv`v Zvqvjv gÂyg‡bi D‡Ïk¨ K‡i e‡jb, ‡Zvgiv mwZ¨Kv‡ii gÂyg‡b n‡q _vK‡j, Avgvi mš'wói cZ¨vkx n‡q _vK‡j, AwaKvi c`vb Ki| ïayAwaKvi PvB‡jB AwaKvi ‡`‡e, Zv ‡hb bv nq eis cvc¨-c`v‡bi cwZ `„p †i‡L mKj AwaKvi `vI Ges b¨v‡qi Dci cwZwôZ †_‡K cvc¨ c`vb Ki| gvbyl‡i cwZ mngwgZv I †mevi-g‡bvfve †i‡L Gme AwaKvi `vI| GLb †`L! Avng`x‡`i gv‡S hw` GB †PZbvi mu„ó nq, Avi GB g‡bvfve mvg‡b †i‡L hw` AwaKvi c`v‡bi †Póv K‡i, Zvn‡j RvgvZ‡Z I e¨e¯'vcbvi mvg‡b G-ai‡bi SMov-weev` Ges mgm¨vejxi ckB D‡V bv| hyM-LjxdvI A‡bKUv mgq Ggb mgm¨vi mgvavb ev AšZc‡ÿ gv‡m G-ai‡bi kZkZ wPwV c‡o Reve w`‡Z A_ev wb‡`bc‡ÿ mswkó `ßi‡K gvK Ki‡Z e¨q nq, hv RvgvZ‡Zi Rb¨ Kj¨vYKi †Kvb MVbg~jK Kv‡R e¨q n‡Z cv‡i|

hyM-LjxdvI wbKU hLb G-ai‡bi welq Dc¯'wcZ nq, ZLb ZvuK Zv †`L‡ZB nq| ZvuK †`L‡Z nq cmvkwbK-mg~e¨e¯'vi Rb¨, ms‡kva‡bi D‡Ï‡k¨ Ges mnvbyf~wZc~Y-‡PZbvi ekeZx n‡q, †hb †Kv_vI †Kvb Avng`x ¯'v_vÜ n‡q wb‡Ri AwaKv‡ii K_v †f‡e A‡b¨i AwaKvi Le K‡i wb‡R‡K cixÿvq wbcwZZ bv K‡iv Avi Avjvn Zvqvjvi Amš'wói j‡ÿ¨ cwiYZ bv nq| A_ev †Kvb wbixn-gvbyl

†hb wbhvZb I AZ¨vPv‡ii jÿ¨-e¯‘‡Z cwiYZ bv nq| A‡bK mgq gvbyl RvgvZ ev hyM-Ljxdvi wm×vš‡K †g‡b †bq bv| ciegk gvbvi K_v, wKš A‡bK eS‡bvi cil Zvi gvb¨ Ki‡Z m¤§Z nq bv, eis nVKwiZv I bv‡Qvo-ev›`vi gZ AvPiY c`kb K‡i| G-ai‡bi gvby‡K ZLb k³-Reve w`‡Z nq| A‡bK mgq Awg Ggb †jvK‡`i e‡j †`B, wVK Av‡Q, hw` Zzg G-wm×vš gvb‡Z c¯Z bv nI, Zvn‡j RvgvZI †Zvgvi wel‡q gv_v Nvgv‡ebv| Aevi A‡bK mgq K‡VviZv c`kb K‡i Zv‡`i‡K kw¯I †`qv nq| wKš Av‡eM-Abyf~wZi Kvi‡Y Gme †jv‡Ki Rb¨ †`vqv Ki‡ZI eva¨ nB, †hb Avjvn Zv‡jv Zv‡`i wn`vqvZ `vb K‡ib| Avi RvMwZK †Kvb-wel‡qi Kvi‡Y Zviv †hb ag‡K ZÜQ Ávb K‡i wb‡R‡`i ciKvj‡K aŸsm K‡i bv †`q|

nhiZ gmxn gID` (Av.) e‡jb, ÔAb¨vq Kó w`‡e bvÕ Gi D‡Ïk¨ n‡”Q, A‡bK mgq wKQzwelq Ab¨iv Kó †c‡q _v‡K, Avi Zv h_v_I e‡U| †hgb wKbv Awg e‡jwQ, †R‡b eyS cwiKwíZfv‡e KvD‡K `yL-Kó w`‡e bv| gỳg‡bi ˆewkó¨ n‡”Q, †m KL‡bv †R‡b-eyS Kv‡iv K‡ói KviY nb bv| Avi KL‡bv nIqvI DwPZ bv| wØZxq n‡”Q, A‡bK mgq †Kvb †Kvb †ÿ‡Î eva¨ n‡q RvgvZ I Ljxdv‡K KwZcq c`‡ÿc wb‡Z nq, hv A‡b¨i Rb¨ K‡ói KviY nq| wKš G Kó ms‡kva‡bi D‡Ï‡k¨ †`qv nq| wKš G‡nb Ae¯vqI hw` †KD kw¯ ev K‡ói ‡fZi w`‡q w`bwZcvZ K‡i, Zvn‡j mnvbyf~wZi ‡ciYv wb‡q Zvi Rb¨ †`vqv Kiv Avek¨K| Gi¦c cwiw¯wZ‡Z Ljxdv‡K me‡P‡q †ewk Kó`vqK cwiw¯wZi ‡fZi mgq AwZewnZ Ki‡Z nq| fwe †h, †Kv_vI Awg Kv‡iv K‡ói KviY nw”Q bv ‡Zv? Avjvn Zv‡jv c`Ë ÿgZvi Ab¨vq-e¨envi KiwQ bv †Zv? Avgvi †Kvb K‡gi Kvi‡Y Kv‡iv N‡ii

mỳ-kvwš webó n‡”Q bv ‡Zv? †Kej GwUB bq, eis Ggb c×wZ Aej¤b Kiv DwPZ, hv‡Z K‡i mnvbyf~wZi ewntcKvk N‡U| Ggb e¨e¯v Kiv DwPZ hv‡Z Zvi DcKvi nq Ges Zvi ms‡kva‡bi weavb nq| Ggb myePvi I mnvbyf~wZi `vex Abyhvi hyM-Ljxdv‡K KvR Ki‡Z nq| ewn¨K Dcvq-DcKiY‡K mvg‡b †i‡L hyM- Ljxdvi KvR n‡”Q, Gme `wqZ m¤úb Kiv| wbhv‡g RvgvZ, KgKZve„›` Ges hv‡`i‡K hyM-Ljxdvi cÿ †_‡K `wqZ †`qv nqÑ Zv‡`i DwPZ, GKB b¨vqcivqYZv I mnvbyf~wZi ‡PZbvq mg„× †_‡K wb‡R‡`i `wqZ cvjb Kiv|

hv‡Z ÿgZv ev Gi D‡Ïk¨ m¤ú‡K© Avgiv AeMZ nB, Zv‡`i we‡eP¨ Ki‡Z nq|

hviv †R‡bï‡b wb‡R‡`i `wqZ-cvj‡b Ae‡nj v K‡i, Zviv †LqvbZKvix| Aek¨B Zv‡`i‡K †Lv`v Zv‡jvi wbKU Reve`wn Ki‡Z n‡e|

AZGe, KgKZv‡`i Rb¨ GwU mwZ¨B fvevi wel q| Rvgv‡Zi c`¸‡jv evbv‡bvi wcQ‡b RvMwZK D‡Ï‡k¨ ‡bB, eis GB Dcjä _vKv DwPZ †h, Avgiv GKwU c‡` wbhy³ n‡q c‡ei Zzjbvq †ewk Rvgv‡Zi m`m¨‡`i †mev Kie Ges Zv‡`i cwZ mnvbyfwZv ivLe, Avi Zv‡`i Kj¨v‡Yi Rb¨ DËg-c_ mÜvb Kie, Avi Zv‡`i‡K mv‡_ wb‡q AMmi ne, hv‡ZK‡i Rvgv‡Zi m`m¨‡`i m¤úK `p

Ges Rvgv‡Zi DbœwZ `„Z †_‡K `„ZZi nq| Kv‡RB, GB mngwgZvi ‡PZbv c‡Z¨K KgKZvi g‡a¨ myó nIqv DwPZ, Rvgv‡Zi c‡Z¨K Kgxi g‡S myó nIqv DwPZ| KgKZvMY hw` `ó›vš ¯vcb K‡ib, Zvn‡j GKB KgKZviv †mevi `wqZI cvjb Ki‡eb| nhiZ gmxn gIDʼ (Av.) e‡j‡Qb, ÔRwZi †meK nIqv ‡bZv nIqvi jÿY|

A_vr, RwZi †meK n‡j Avjvn ZvqvjvI cÿ †_‡K m¤§vb I †bZZ.jvf n‡e Ges GwU Avjvn Zv‡jvi cÿ †_‡KB wg‡j _v‡K| gnvbex (mv.) G-I e‡j‡Qb, ÔmvB‡q¨`yj Kl‡g Lv‡`gỳgÕ A_vr- RwZi ‡bZv RwZi †meK n‡q _v‡K Ges nIqv DwPZ| nv`xm cov, †kvbv‡bv I †kvbvi Kj¨vY ZLbB jvf n‡e, hw` Zv K‡g-i¦cvš‡ii cÿvcwi †Póv Kiv nq| KgKZv‡`i wb‡R‡`i AvPvi-AvPiY A‡bK DbZ Kiv DwPZ| †jv‡Kiv wewfb-ai‡bi K_v e‡j _v‡K, wKš GKRb KgKZvi KvR nj, mrmvnm I ˆa‡hi mv‡_ KvR K‡i hvIqv| G-ai‡bi †jvK‡`i R‡b¨I †Kvb mgq wb‡Ri mnvbyf~wZ-mngwgZv‡K gi‡Z ‡`Iqv DwPZ bq| nhiZ gmxn gIDʼ (Av.) e‡j‡Qb, ÔivM ev †µva mseiY Ges wZ³-K_v mn¨ Kiv A‡bK eo exi‡Zi KvR|

Avi GwU gnvbex (mv.)-Gi Dw³ Ôexi †m bq ‡h Ab¨‡K aivkvqx K‡i eis cKZ. exi †m-B †h iv‡Mi mgq wb‡Ri ivM‡K `gb K‡iÕ-Gi e¨vL¨v| ivM‡K hLb `gb Ki‡eb, †Kej ZLbB b¨vq wePv‡ii `vex cÿ n‡e, Avi ZLbB mngwgZvi mv‡_ wm×vš n‡e| AZGe Avgv‡`i KgKZv‡`i GB gv‡b AwawôZ n‡Z n‡e| G K_v¸‡jv Awg †Kej gvÎ RvgvbZxi KgKZv‡`i Rb¨ ejwQ bv, eis mviv-cw„_exi mg¯-Rvgv‡Zi KgKZv‡`i Awg m‡¤vab KiwQ| Bsj¨vÛ, cwK¯vb, wn›`y¯vb, Av‡gwiKv, KvbvWv, A‡÷wjqv, B‡›`v‡bkxqv Ges AwdKv‡KI| G-e¨vL¨v

Awg GB Rb¨ KiwQ, KviY gvbyl g‡b K‡i, †hLv‡b LZ©ev c`vb Kiv n‡q _v‡K, †mLvbKvi †jvK‡`i Ae¯v GBiƒc, †hfv‡e mvaviYZ LZ©ev Rvgv‡Zi mKj-m`m¨‡K D‡Ï¨ K‡i n‡q _v‡K, †mfv‡eB hw` †Kvb wbw`ó ‡kYx-m¤ú‡K K_v nq, ¯§iY iv‡L‡Z n‡e, ‡m-†kYxi gvbyl c„_exi †hLv‡bB _vKzb bv †Kb, Zv‡`i mevB‡K D‡Ï¨ K‡i Ggb K_v ejv n‡q _v‡K|

†Kbbv, eZgv‡b Avjvn ZvÔjv GgwUGÔi Kj¨v‡Y hyM-Lj‡dvi K_v mnRfv‡e mevi Kv‡Q †cŠQv‡bvi GKwU gva¨g ˆZwi K‡i w`‡q‡Qb, GKwU myhvM K‡i w`‡q‡Qb| GRb¨ wewfb RvqMvq wewfb ai‡bi K_v n‡q _v‡K, Zv we‡ki mKj RvgvZ‡K D‡Ï¨ K‡iB ejv n‡q _v‡K| Aek¨ ‡m-†`‡ki GwU †mŠfvM¨| hw` Avwg Rvgvbx‡K m‡¤^vab Kwi, Zvn‡j Rvgvbxi †jv‡Kiv †mŠfvM¨kvjx| Hme gvbyl †mŠfvM¨kvjx, hviv Avgvi mvg‡b e‡m Av‡Qb Ges Avgvi K_v gb‡hvM w`‡q ïb‡Qb| Zvi wb‡R‡K mec_g m‡¤^vaZ e‡j g‡b Kiv DwPZ| wKš' me`v ¯§iY iv‡L‡eb, eqAv‡Zi ‡h kZ Avwg c‡owQ, Zv †Kvb wbw`ó ‡kYxi Rb¨ bq, A_ev we‡kl †jvK‡`i Rb¨ bq, eis c‡Z¨K Avng`x-B Gi D‡Ï¨| c‡Z¨K †mB e¨w³ m‡¤^vaZ, †h wb‡R‡K Rvgv‡Zi e¨e¯vcbvi mv‡_ m¤ú„³ g‡b K‡i|

¯úó Kivi Rb¨ Avwg KgKZv‡`i e¨vcv‡i e‡jwQ, †Kbbv, Zv‡`i‡K Rvgv‡Zi mvg‡b Av`k nIqv DwPZ| GRb¨ Ab¨‡`i Zzjbvq wb‡R‡K AwaK we‡klY Ki‡Z n‡e| AZGe, GB wb‡`k ev kZ †Kvb we‡kl-†kYxi Rb¨ bq, eis mevi Rb¨ Avek¨K| ZvB me`v Gi kZ¸‡jvi evK¨ wb‡q wPšv Kiæb, G¸‡jv †g‡b Pjvi †Póv Kiæb| GwUi gvb †Kgb nIqv DwPZÑ Avwg Zvi Av‡iv weeiY w`w"Q| Avwg GLbB †hfv‡e PZz_ k‡Z e‡jwQ, GKRb Avng`xi Rb¨ nhiZ gmxn gIÏ` (Av.) GwU Avek¨K AvL¨v w`‡q‡Qb †h, KL‡bv KvD‡K wb‡Ri nvZ ev gyL w`‡q Kó w`‡e bv| G c`gh©v`v gvbyl ZLbB jvf Ki‡Z cv‡i, hLb ZvKIqvi kZvbyhvqx †Lv`vfxwZi mv‡_ Rxeb hvcb Ki‡e, ü`q ZLb Avjvn ZvÔjvi fq Ges fxwZ‡Z cY© n‡e| GKwU nv`x‡m G‡m‡Q, gnvbex (mv.) e‡j‡Qb, nhiZ Aveyûivqivn (iv.) †_‡K ewYZ, Ôci¯úi we‡Øl-civqY n‡e bv, ci¯úi SMov I wnsmv-we‡Øl iv‡L‡e bv| G‡K A‡b¨i mv‡_ kµZv †cvlY K‡iv bv| Avi †Zvgv‡`i g‡a¨ n‡Z †KD †hb G‡K A‡b¨i `iv`wi‡Z n¯‡ÿc bv K‡i| †n Avjvni ev›`vMY! ci¯úi fvB fvB n‡q hvI, gywgb‡`i fvB †m, †h Zvi cwZ Ab¨vq K‡i bv, Zv‡K jvÃZ K‡i bv, Avi Zv‡K wbKó.Ávb K‡i bv| Gici gnvbex (mv.) wZb evi wb‡Ri ü`‡qi w`‡K Bw½Z K‡i e‡jb, ZvKIqv GLv‡b Av‡Q, ZvKIqv GLv‡b Av‡Q, ZvKIqv GLv‡b Av‡Q| wZwb e‡jb, †Kvb e¨w³ `y®K…wZciqY wK-bv, Zvi cgv‡Yi Rb¨ GwU †`L‡jB Pj‡e †h, †m wb‡Ri gywgb fvB‡K wbKó..Ávb K‡i wK-bv? c‡Z¨K gywgb‡`i Rb¨ Aci gywgb‡`i i³, m¤ú` Ges m¤§vb nvivgÔ|

eZgv‡b c„_exi cwZ `„ócvZ K‡i †`Lyb! †h-Ab¨vq n‡"Q, †hfv‡e AwaKvi Le Kiv n‡"Q, gywjgvb gywjgvb‡K nZ¨v Ki‡Q, me w`‡K Avgiv †h Ab¨vq I AbvPvi‡ii ‡`ŠivZ¥ †`LwQ, G¸‡jvi g‡a¨B n‡"Q wnsmv-we‡Øl Ges ZvKIqvi Afve| Avgiv †mŠfvM¨kvjx! KviY Avgiv hyM-Cgvg‡K †g‡bwQ, Avi mšvmx-KgKvÛ †_‡K †eu‡P AvwQ| Z‡e ÿz`ª-cwim‡i n‡jI Avgv‡`i Ni Ges cwi‡e‡kI GB e¨wa we`¨gvb, hvi eYbv (GB) nv`x‡m G‡m‡Q| Avgv‡`i ga¨†_‡K c‡Z¨‡KB hw` ev¯eZvi wbwi‡L Avi wbi‡cÿ fv‡e hvPvB K‡i, Zvn‡j †`L‡Z cv‡e, Avwg Avcbv‡`i‡K G¸‡jv fz-K_v ejwQ bv| fvB‡qi cwZ fvB‡qi wnsmv-we‡Ø‡li Kvi‡Y g‡bvgvwjb¨ i‡q‡Q, Rvgv‡Zi m`m¨‡`i gv‡S wnsmv-we‡Ø‡li Kvi‡Y g‡bvgvwjb¨ i‡q‡Q, gwnjv‡`i gv‡S wnsmv-we‡Ø‡li Kvi‡Y g‡bvgvwjb¨ i‡q‡Q| G wel‡q wnsmv-we‡Øl ïiæ n‡q hvq †h, Igyk Igyk `wqZ †Kb Ab¨‡`i †`qv n‡q‡Q? Avgv‡K †Kb `wqZ †`qv nq bvB? Avgv‡`i ga¨ †_‡K c‡Z¨‡KB hw` G wel‡q `„p wekvm iv‡L †h, Avng`xqv RvgvZ GKwU Hkx-RvgvZ| Zvn‡j c‡`i AvKv•Lvi cwie‡Z B‡¯Mdv‡ii cwZ `„ó †`Iqv DwPZ| fvev DwPZ, †Kvb mgq hw` Avgvi Dci `wqZ Av‡m, Zvn‡j Avwg †hb G‡K DËgfv‡e m¤úv`b Ki‡Z cvwi|

c`wjáv hviv iv‡L, Zv‡`i m¤ú‡K gnvbex (mv.) e‡jb, Ggb e¨w³‡K KL‡bv †Kvb c` w`‡e bv| AZtci Avjvn ZvÔjv e‡jb, †Zvgiv Avgvb‡Zi myÿyv Ki‡e †Kbbv †Zvgiv G m¤ú‡K wRÁvwmZ n‡e| c` Avi RvgwZ-`wqZ Avgvb‡Z ¯iƒc, hw` gvbyl‡li ü`‡q ZvKIqv _v‡K Zvn‡j memgq G-f‡q fxZ I mš¿¯ _vKvi K_v †h, Avgvi Dci †h-`wqZ i‡q‡Q, Zv hw` h_vh_fv‡e cvjb Ki‡Z bv cvwi, Zvn‡j Avgv‡K wRÁvmvev` Kiv n‡e Avi wRÁvmvev` †Kvb ev›`vi m¤§yL n‡e bv, hv‡K K_vi gvi-c¨v‡P †auKv †`qv †h‡Z cv‡i eis †mB A`„k¨ÁvZv, meÁvbx I mg¨K AeMZ †Lv`vi m¤§yL Reveew`wnZv n‡e, hvi wbKU †Kvb wKQz †Mvcb †bB, hv‡K †auKv †`qv hvq bv|

Kv‡RB G wel‡q¸wj hw` mKj KgKZvB m¤§yL iv‡Lb, Avi c‡`i AvKv•Lv ‡cvlYKvixiv I mvg‡b iv‡Lb, Zvn‡j ce©Ëi-`vmZ Kivi cwie‡Z ZvKIqvi cv‡b AMmi n‡eb| GB ZvKIqvi Afv‡eB mvgvb¨-Kvi‡Y g‡bvgvwjb¨‡K ewo‡q †`q, Avi Ae¯v Mov‡Z Mov‡Z Ggb chv‡q †cŠ‡Q ‡h, gvbyl I‡ohš¿ Kiv Avi¤¢ K‡i †h, Igyk‡K Kxfv‡e Kó †`qv hvq? Igyk‡K wbhv‡g RvgvZ Ges hyM Lj‡dvi mvg‡b Kxfv‡e bxP I ‡nq cZxqgvb Kiv hvq A_ev Zv‡Q cgvY Kiv hvq, A_ev Zvi †Kvb `yejZv Zvi mvg‡b Kxfv‡e Zz‡j aiv hvq| Ggb wK, ‰eV‡K Zvi ¯x-mšvb‡`i jwÂZ Kivi I nxb-†Póv Kiv nq| A‡bK mgq ‡MvUv esk G‡Z Rwo‡q hvq|

AZGe ‡Kv_vq G-k‡Z eqAvZ Kiv n‡"Q †h, KvD‡K Kó w`e bv, eis mngwgZv cKv‡ki c_ A‡šlY Kie, DcKvi Kivi Dcvq mÜvb Kie, Avi †Kv_vq GB NƒY¨-AvPiY| AZGe, Avwg †hfv‡e e‡jwQ, G gv‡b AwaôZ nevi Rb¨ AvZ¥we‡klY Kiv c‡qvRb| G w`b¸‡jv‡Z Avcbviv AvZ¥wRÁvmv Kiæb, Avjvn ZvÔjv Avcbv‡`i‡K G w`b †Kvb D‡Ï¨‡k¨ `vb K‡i‡Qb| Gme K_v †Kvb KvíwbK-wel‡qi Dci wfwË K‡i Avwg ejwQ bv, eis cKZc‡ÿ Ggb wel‡q`x

‡MvPixfž nq, hv Avgvi Rb¨ `yðšvi KviY nq, AwZ j¾vi KviY nq| GKw`‡K RMØvmx‡K Avwg ewj †h, Rvgv‡Z Avng`xqv †mB RvgvZ, hv AwaKvi-c`v‡bi mshvM LyR, Rvgv‡Z Avng`xqv ‡mB gmxn gIDˆ` (Av.)-Gi gvb¨Kvix, whwb ZvKIqvi m~² wZm~² c‡_ cwiPwjZ Kivi j‡ÿ¨ G hyM †Lv`v ZvÕjvi cÿ †_‡K Avwefž n‡q‡Qb| wKš‘ nvq! Avgv‡`i KwZcq m`‡m¨i Ae¯v wKiƒc? Zv‡`i‡K †`‡L Ab¨iv Kx ej‡e? (Zviv ej‡e) ‡Zvgv‡`i `vex Kx, Avi †Zvgv‡`i KgB ev Kx! AZGe, Avgv‡`i‡K hw` RM‡Z wece Avbq‡bi KviY n‡Z nq, ZvnÕ‡j wb‡R‡`i Rxe‡b, wb‡R‡`i Ae¯vi gv‡S †mB wece Avb‡Z n‡e, hv hyM-Bgvg Bmjv‡gi AwZ PgrKvi wkÿvi Av‡jv‡K Avgv‡`i Kv‡Q cZ¨vkv K‡i‡Qb|

Gici G-nv`x‡m nhiZ gymv¤§` (mv.) Avgv‡`i‡K GKwU ¸iæZc~Y© bmxnZ (Ab¨¸‡jv Avwg ev` w`w”Q) GwU K‡i‡Qb †h, GKR‡bi `i-KlvKwli mgq Ab¨Rb ‡hb n¯‡ÿc bv K‡i| Gi A_© †Kej GZUzKzB bq †h, e¨emv bó Kivi Rb¨, wbR ü`‡qi wnsmv-we‡Øl PwiZv_© Kivi gvb‡m e¨emv bó Kivi †Póv Ki‡e bv| wb‡R‡`i mv”Q‡›`¨i Kvi‡Y, e¨emv bó Kivi D‡Ï‡k¨ †Kvb wRwb‡mi AwaK-g~j¨ nuvKv I, eis G-wb‡`‡ki gv‡S A‡bK MfxiZv i‡q‡Q| A‡bK mgq †`Lv hvq, GKRb ‡Kvb ¯'v‡b AvZ¥xqZvi D‡Ï‡k¨ c¯ve †`q, wKš‘ K_v PjvKv‡jB Avevi Ab¨ c¯ve wb‡q †Kvb `j G‡m hvq| c_gZt, hw` Rvbv _v‡K, Z‡e †g‡q ev †Q‡j c‡ÿi KvD‡K GKwU c¯ve m¤ú‡K K_v PjvKv‡j Ab¨ c¯ve ‡`qv DwPZ bq| GQvov ‡h-†Q‡j I †g‡qi we‡qi K_v n‡”Q, Zv‡`i Ges Zv‡`i cwievie‡Mi c_‡g-cvß c¯ve m¤‡Ü †`vqv K‡i wm×vš— †bqv DwPZ Avi ‡m‡ÿ‡Î c‡i Avmv c¯v‡ei e¨vcv‡i wPšvI Kiv DwPZ bq| nü! hw` †`vqv Kivi cil c_g c¯v‡ei e¨vcv‡i gb mvq bv †`q, Zvn‡j wVK Av‡Q| GQvov A‡bK mgq cwiw¯wZ hv `uvovq, GK †Q‡ji cÿ †_‡K †Kvb ‡g‡q‡K we‡qi c¯ve †`qv nq, ZLb †Q‡j ev †m †g‡qi cwiev‡ii mv‡_ ZZxq †Kvb e¨w³ g‡bvgwj‡b¨i Kvi‡Y †g‡qi cwiev‡ii Kv‡Q †cŠ‡Q hvq †h, H †Q‡ji gv‡S Igyk Igyk †`vl i‡q‡Q Avi Gi †P‡q fvj cwiev‡ii mÜvb Avwg †Zvgv‡K e‡j w`w”Q, Zv‡K ÔbvÕ e‡j `vI|

A_P †mB fvj-m¤‡Üi K_v Avi KL‡bv Zv‡K ejvB nq bv wKš‘ wnsmv, we‡ØlemZt Ges ZvKIqvq NvUwZi Kvi‡Y `yÕwU cwievi‡K aŸsm K‡i †`qv nq| Avevi A‡bK mgq †g‡q-cÿ Ges †g‡qi `yvg iUv‡bvi Rb¨ eo NU¨-cšv e¨envi Kiv nq, Avi wb‡`vI-†g‡qi Dci Kj¼ †jc‡bi †Póv Kiv nq, Avi G me wKQz wnsmvi-B cwiYvg| ‡gvUK_v, GK cvc †_‡K Ab¨ Ab¨ cv‡ci m„ó n‡Z _v‡K| †g‡q‡`i †`vlv‡ivc Kiv nq| AZGe Avjvn ZvÕjvi im‡~ji D³ wb‡`k ‡g‡b Pjy, A_vrÑ wb‡R‡`i ü`q‡K ZvKIqv Øviv cÖ Kiæb| c‡Z¨K wel‡q ZvKIqvi ewntcKvk NUvI Avi ZvKIqvi wfwË‡Z KvR Ki| †Zvgv‡`i Rb¨ ZvKIqvi gvcKwV nj, †mB DËg-Av`k, hv m¤ú‡K cweÎ KzAv‡b †Lv`v ZvÕjv †Zvgv‡`i‡K e‡j w`‡q‡Qb,

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

(mi~v Avj Avnhve:22)|

wbðqB †Zvgv‡`i Rb¨ Avjvni im‡~ji gv‡S DËg-Rxebv`k i‡q‡Q| wZwb gyÕwg‡bi cwiPq †Kej GwU-B †`b wb †h, Zvi Awbó †_‡K gymjgvbiv wbivc` _v‡K| eis e‡j‡QbÑgyÕwgb ‡m, hvi nvZ †_‡K mgM gvbeZv wbivc` _vK‡e| Avi wZwb (mv.) wQ‡jb H mËv, whwb m„wói cwZ mngwgZv c`k‡bi †ÿ‡Î I me‡P‡q gnvb `„óvš— ¯'vcb K‡i‡Qb| ‡¯n I `qv c`k‡bi ‡ÿ‡Î wZwb Pigvš— gv‡M DcbxZ wQ‡jb| Ggb †Kvb gvbexq ˆewkó¨ †bB, hvi cig-mxgvq wZwb DcbxZ wQ‡jb bv| Kv‡RB AvR hLb Avgiv wb‡R‡`i gv‡S GKwU cweÎ cwieZb m„wói j‡ÿ¨ GKwÎZ n‡qwQ, ZLb mKj Av`k m¤ú‡K ¯§Z-†ivgšb Avek¨K| ‡mme Dc‡`k †kvbv Avek¨K, hv gnvbex (m.)-Gi cweÎ Av`k Ges Zuvi eiv‡Z Avgv‡`i wbK‡U G‡m †cŠ‡Q‡Q| wZwb (mv.) e‡j‡Qb, Ôag n‡jv A‡b¨i wnZvKv•LxZvi bvg| hLb wb‡e`b Kiv n‡jv, wK‡mi wnZvKv•Lx ne? ZLb wZwb ej‡jb, Avjvn, Zvui im~‡ji, gymjgvb Bgvg I Rbmvavi‡Yi wnZvKv•Lx nIqvÕ|

AZGe GKRb mwZ¨Kvi gyÕwg‡bi Rb¨ cvjv‡bvi †Kvb c_ †bB| Rbmvavi‡Yi wnZvKv•Lv‡K Ggb chv‡q †cŠ‡Q w`‡q‡Qb, hv c~Y bv K‡i †KD bv Avjvni cvc¨ w`‡Z cv‡i, cvi‡e, Avi bv Zvui wKZv‡ei cwZ `wqZ-cvjb Ki‡Z cvi‡e, bv- Zvui im~‡ji AwaKvi w`‡Z cvi‡e| G welqwU nhiZ gmxn gIDˆ` (Av.)-I eYbv K‡i‡Qb, hvi mvigg nj, cKZ.ZvKIqv ïaygvÎ GK cKvi cÿ¨ †_‡K AwRZ n‡Z cv‡i bv, hZÿY bv me cKvi cÿ¨KvR Kivi †Póv Kiv nq| Avi Avgv‡`i †bZv I AbyKiYxq Av`k (mv.)-Gi mygnvb PwiwÎK-¸Yvejx Aej¤‡bi Rb¨ cig-webq I AvKzwZi mv‡_ †`vqv Kiæb| ‡mB bex, whwb wb‡Ri cvY‡K kÎæ‡`i Rb¨ mnvbyf~wZi †ciYvq ûgwKM¯ Kiw‡jb, wZwbI AZ¨š webq I AvKzwZi mv‡_ wb‡Ri cfzi mgx‡c †`vqv Ki‡Zb, Ô‡n Avgvi Avjvn! Avwg g›`¯fve, g›` Kg Ges g›` Awfcvq †_‡K †Zvgvi Avkq hvPbv KwiÕ| AZGe GwU nj, H ZvKIqv hvi wel‡q gnvbex (m.) wb‡Ri ü`‡qi cwZ Bw½Z K‡i e‡j‡Qb, ZvKIqv GLv‡b| Avi GwU †mB m‡evËg Av`k, hvui Abymi‡Yi wb‡`k Avjvn ZvÕjv Avgv‡`i‡K w`‡q‡Qb| Kv‡RB Avgv‡`i KZB-bv GB †`vqvi c‡qvRb! AvZ¥-we‡kl‡Yi KZB-bv c‡qvRb| Avi KZB-bv wbR ü`‡q DuwK †g‡i j¾vZ nIqv c‡qvRb|

Avevi wZwb ej‡Qb, †h e¨w³ †Kvb gymjgv‡bi RvMwZK D‡ØM I Kó `~i Ki‡e, Avjvn ZvÕjv wKqvg‡Zi w`b Zvi D‡ØM I Kó‡K `~i K‡i w`‡eb| Avi †h-e¨w³ †Kvb K‡ó-RRwiZ e¨w³‡K Avivg w`‡e, Zvi Rb¨ ¯'v”Q‡›`¨i e¨e¯v Ki‡e, Avjvn ZvÕjv wKqvgZ-w`e‡m ZviRb¨ ¯'v”Q‡›`¨i e¨e¯v Ki‡eb| †h-e¨w³ †Kvb gymjgv‡bi †`vlÎæwU †X‡K ivL‡e, Avjvn ZvÕjv ciKv‡j Zvi †`vlÎæwU mgn †X‡K ivL‡eb| Avjvn ZvÕjv †mB ev›`vi mvnv‡h¨i Rb¨ c¯Z _v‡Kb, †h wb‡Ri fvB‡qi mvnv‡h¨i Rb¨ †mv”Pvi| AZGe, †K Av‡Q! †h G-`vex Ki‡Z cv‡i, Avwg wKqvg‡Zi w`b me-ai‡bi DrKÚv †_‡K gy³ _vKe? †K Av‡Q ‡h wbR Kg m¤ú‡K Me K‡i ej‡Z cv‡i, Avwg A‡bK cÿ¨ K‡iwQ| Kv‡RB G-RMZ eoB f‡qi

¯vb| Avjvn Zvôjvi ‡`Lv‡bv-iv¯vq P‡j cÿ¨Kg Kivi †ZŠwdK jv‡f i wPšvq cwZwU gyn~Z©, cwZwU ÿY gy°gb‡K KvUv‡bv DwPZ| Rwb bv, †Kvb wRwbm Avgv‡K †Lv`v Zvôjvi ˆbKU¨ cvB‡q w`‡e, Avgvi ÿgvi weavb Ki‡e| KZB-bv wcq Avgv‡`i †Lv`v, KZB-bv wcq Avgv‡`i im~j, whwb c‡Z¨K Kg m¤úú‡K wel`fv‡e Avgv‡`i eyS‡q w`‡q‡Qb|‡Kvb Kg‡KB Kg ¸iæZ †`bwb| AZGe KZB-bv †mŠfvM¨evb †m, †h wb‡Ri †Lv`v‡K mšó Kiv Ges wb‡Ri ïf-cwiYv‡gi ‡Póvq iZ _v‡K| G-†Póvq iZ _v‡K, †hb †Lv`v Zvôjv Zv‡`i Aw¯iZv mgn~ `~i K‡ib, †hb Avjvn Zvôjv Zv‡`i Rb¨ ¯v"Q›`¨ mwó K‡ib| nhiZ gmxn gIDÕ (Av.) G‡K A‡b¨i cwZ mnvbyf~wZ I fvjevmv m¤úú‡K GK¯v‡b e‡jb, Ôgvbe RwZi cwZ mnvbyf~wZ I fvjevmv c`kb Kiv A‡bK eo Bev`Z Ges Avjvn Zvôjvi mšó AR‡bi GKwU eo gva¨g| wKš Avwg jÿ¨ K‡iwQ, G wel‡q Ly~eB `ye©jZv ‡`Lv‡bv nq| Ab¨‡K ZzQ Ávb Kiv nq| Zv‡`i‡K VvÆv-we`ªæc Kiv nq| Zv‡`i †`Lvïbv Kiv Ges wec`vc` I KwVb cwiw¯‡Z mvnvh¨ Kiv‡Zv `‡ii K_vÔ|

Gici wZwb (Av.) e‡jb, ÔAZGe, mwói cwZ mnvbyf~wZ Ggb welq †h, gvbyl hw` GwU‡K RjvÄwj †`q Ges cwiZ¨vM K‡i, Zvn‡j a‡i a‡i †m wns¯cvYx n‡q hvq| gvbyl‡i gbyl¨‡Zi `vex I GwUB, Avi ZZÿY †m gvbyl bv‡gi †hvM¨ n‡Z cv‡i bv, hZÿY chš wb‡Ri fvB‡`i mv‡_ gnË, D`viZv I m`q AvPiY Ki‡e bv, Ges †Kvb cKvi ˆelg¨ ivL‡e bv|Ô

nhiZ gmxn gIDÕ (Av.) Ab¨vb¨ a‡gi wecix‡Z Bmjv‡gi ‡mŠ›`h I gvnvZ¡ c‡`i †kôZ eYbv K‡i e‡jb, ÔcweÎ Kziv‡b wcZvgvZv, mšvb-mšwZ I Ab¨vb¨ wbKUvZ¥xq I `wi‡`¨i ‡hi¦c AwaKvi ebbv K‡i‡Q, Awg g‡b Kwi bv †h Ab¨ †Kvb agM‡š ZZUv`Kze©wYZ n‡q‡Q| †hgb Avjvn Zvôjv e‡j‡Qb,

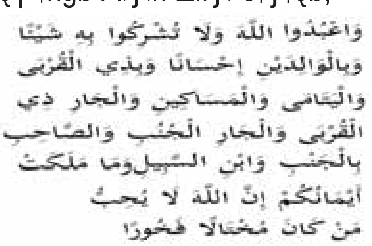
وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا

A_©vr †Zvgiv †Lv`vi Bev`Z Ki Ges Zvi mv‡_ Ab¨ KvD‡K kixK K‡iv bv| wbR wcZv-gvZvi mv‡_ m`q AvPiY Ki Ges †Zvgv‡`i wbKUvZ¥xq‡`i cwZI Ab~iƒc Ki| (mi~v Avb wbmv: 37) G ev‡K¨ mšvb-mšwZ, fvB Ges `~i I wbK‡Ui me AvZ¥xq‡`i D‡jL G‡m‡Q| AZtci e‡jb, GZxg‡`i cwZ Ab~iƒc Ki Ges `wi‡`¨i cwZI `qv` nI Ges AvZ¥xq-AbvZ¥xq GgbwK cwZ‡ekx‡`i cwZI m`q nI| Avi Ggb eÜz ‡h mnKgx ev †Kvb mdim½x ev bvgv‡hi mv_x ev agxq Ávbv‡bi †ÿ‡Î mnchvMx, gymvwdi Ges †Zvgv‡`i Aaxb¯, me cvYxi cwZI m`q nI| †Lv`v Ggb-e¨w³‡K eÜzevbvb bv †h AnsKvi K‡i, J×Z¨ †`Lvq Ges A‡b¨i cwZ `qv c`kb K‡i bvÔ|

Aci GK¯v‡b wZwb (Av.) e‡jb, ÔZzwi ev›`v‡`i cwZ Kiæ Ki Ges Zv‡`i cwZ gyLI nvZ Øviv ev Ab¨ †Kvb Dcv‡q AZ¨vPvi K‡iv bv, Ges mwói Kj¨vY‡_ †Póv K‡i hvI| Avi Kv‡iv cwZ AnsKvi K‡iv bv, GgbwK †Zvgvi Aaxb¯ n‡jI| ‡KD Mvwj w`‡jI Zv‡K Mvwj w`I bv| bgbxq, mwnòz, my¯wPšvkxj Avi mwói cwZ mnvbyf~wZkxj nI, †hb MªnxZ n‡Z cvi| eo n‡q †QvU‡`i cwZ `qv KiÑ Zz"Q Zw"Qj¨ bq, Ávbx n‡q Ávbnxb‡`i ïfvKv•Lx nI, AnsKviekZt ‡nq cwZcb Ki‡e bv, abx n‡q `wi‡`‡i †mev Ki, AvZ¥¤ix n‡q AnsKvi c`kb Ki‡e bv| aŸs‡mi c_‡K fq KiÔ|

AZGe G nj, nhiZ gmxn gIDÕ (Av.)-Gi Rvgv‡Zi m`m¨‡`i Rb¨ wkÿv Ges Zzwi ü`‡qi wPÎ; cwj_evewmxi mvg‡b cweÎ Av`k cwZôvB bq eis Avjvn Zvôjvi Kc~vfvRb nIqvI Gi D‡Ïk¨| GKwU nv`x‡m G‡m‡Q, gnvbex (mv.) e‡j‡Qb, Ôhviv `qv Ki‡e, ingvb ev `qvjy †Lv`vI Zv‡`i cwZ `qv c`kb Ki‡eb| †Zvgiv RMØvmxi cwZ `qv` nI, ¯‡Mi AwacwZ †Zvgv‡`i cwZ `qv` n‡ebÔ|

> **RvMwZK-e¨e¯vcbv AwaKvsk mgqB ïay wb‡R‡`i AwaKvi ev cvc¨ Av`v‡qi K_v e‡j, Avi GiRb¨ KL‡bv KL‡bv Am`yc~vqI Aej¤b Kiv nq| Avi ‡Lv`v Zvôjv gy°gb‡`i D‡Ïk¨ K‡i e‡jb, ‡Zvgiv mwZ¨Kv‡ii gy°gb n‡q _vK‡j, Avgvi mšwói cZ¨vkx n‡q _vK‡j, AwaKvi c`vb Ki|**
>
> **ïay AwaKvi PvB‡jB AwaKvi ‡`‡e, Zv ‡hb bv nq eis cvc¨-c`v‡bi cwZ `wó †i‡L mKj AwaKvi `vI Ges b¨v‡qi Dci cwZwôZ †_‡K cvc¨ c`vb Ki| gvbyli cwZ mngwgZv I †mevi-g‡bvfve †i‡L Gme AwaKvi `vI|**

AZGe Avgiv †h‡nZz Avjvn Zvôjvi wbKU Kiæ Y hvPbv Kwi, Zvü me e¨vcx-Kiæ Yvi ‡`vnvB w`‡q Zvü Kv‡Q ‡`vqv Kwi, ZvB Avgv‡`iI DwPZ, mwói cwZ mnvbyf~Zi ‡PZbvq c‡ei Zz~bvq AwaK mg~x nIqv| Avi G‡KI DËi‡Ëi evov‡Z n‡e|

Kv‡RB GB w`b¸wj‡Z †hLv‡b Avng`x‡`i‡K wbR-Bev`Z Ges whK‡i Bjvnxi gva¨‡g †Lv`v Zvôjvi mv‡_ m¤úúK `p Kivi †Póv Ki‡Z n‡e, †mLv‡b mwói-cwZ mnvbyf~wZ Ges g‡bvgwjb¨‡K `~i Kiv, Avi DbœZ ˆbwZK-gv‡b AwaôZ nevi cwZI g‡bv‡hvMx nIqv DwPZ| we‡klfv‡e, †Lv`v Zvôjvi mšwó AR‡bi Rb¨ G‡K Ac‡ii AwaKvi c`v‡bi cwZ g‡bv‡hvM †`qv DwPZ| Avi ü`‡qi eµZv Ges g‡bvgwjb¨ `~i bv nIqv chš GwU m¤e bq| mwói cwZ cKZ-mnvbyf~Zi Av‡eM ZLbB cKvk cvq, hLb ‰elg¨gy³ n‡q ‡Kvb cv_K¨ bv K‡i, mevi cwZ mnvbyf~Z cKvk Kiv n‡e| Avi GB mnvbyf~Zi Av‡eMB cieZx‡Z

একে অপরের জন্য দোয়ার প্রতি মনোযোগী করে। অতঃপর পরস্পরের জন্য দোয়ার মাধ্যমেই হৃদয়ে তাক্বওয়া সৃষ্টি হয়, অন্তরাত্মার পবিত্রতা বিধান হয়, বান্দার প্রাপ্য-অধিকার প্রদানের নতুন মানদন্ড প্রতিষ্ঠিত হয়।

e¨i †m bq ‡h Ab¨‡K aivkvqx K‡i eis cKZ. e¨i †m-B †h iv‡Mi mgq wb‡Ri ivM‡K `gb K‡i|

অতএব, যে-বিষয়ে হযরত মসীহ্ মওউদ (আ.) আমাদের কাছ থেকে বয়আতের অঙ্গীকার নিয়েছেন, সেটি কোন সাধারণ বিষয় নয়। এটি আমাদের অবস্থার মাঝে বিপ্লব সৃষ্টি করার জন্য আবশ্যকীয়। আর আল্লাহ্ তা'লার সন্তুষ্টি অর্জনের জন্যও আবশ্যকীয়। আর, সমাজের মধ্যে ইসলামের অনিন্দ্য-সুন্দর শিক্ষার বিস্তার ঘটানোর জন্য এবং এক বিপ্লব আনয়নের জন্য আবশ্যকীয়। অতএব, এই দিনগুলোতে এই চেতনাকে বৃদ্ধি করার চেষ্টা করুন। আর দোয়াও করুন, আল্লাহ্ তা'লা যেন সবাইকে তৌফিক দান করেন। আল্লাহ্ তা'লা সবাইকে হযরত মসীহ্ মওউদ (আ.)-এর দোয়ার উত্তরাধিকারী করুন। আমাদের সবাই যেন জলসার কল্যাণরাজি অর্জনকারী হয়। আর আমাদের বংশধররাও যেন আহমদীয়াতের সাথে দৃঢ়ভাবে সম্পৃক্ত থাকে এবং নিজেদের অবস্থার মাঝে এক বৈপ্লবিক পরিবর্তন সাধন করে। আল্লাহ্ তা'লা এই দিনগুলোতে এবং আগামীতেও সর্বদা জামাতকে, জামাতের সদস্যদেরকে, শত্রুর সব-ধরনের অনিষ্ট থেকে নিরাপদ রাখেন। সহানুভূতির আবেগ নিয়ে এ দোয়াও করুন, খোদা তা'লা যেন সে-ধ্বংসের হাত থেকে জগতকে রক্ষা করেন যার দিকে তারা দ্রুত অগ্রসর হচ্ছে। মুসলিম উম্মাহ্ এবং মুসলমান দেশগুলোর জন্যও দোয়া করুন, বর্তমানে এরা ভয়াবহ পরীক্ষায় নিপতিত। কেন-যে তারা পরীক্ষায় নিপতিত, সেই আত্ম-জিজ্ঞসা তারা করে না। আল্লাহ্ তা'লা তাদেরকে যুগ-ইমামকে মানার তৌফিক দান করুন।

এভাবে আরো দু'একটি কথার প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করতে চাচ্ছি। এ দিনগুলোতে বিশেষভাবে নামাযের প্রতি মনোযোগ দিন। ভোরে ফজরের নামাযের সময় আমি দেখেছি, এখানে হলে মানুষ ঘুমিয়ে আছে। নামায শেষ হবার পরও তারা ঘুমিয়েই ছিল। অথচ, এখানে তাহাজ্জুদও হয়েছিল, এরপর ফজরের নামাযও পড়া হয়েছে। যারা শুয়ে ছিলেন, তাদের অধিকাংশই নয় বরং কতক যুবকও ছিল। যদি কেউ অসুস্থও থেকে থাকে, তবুও নামায পড়া আবশ্যক। উঠে নামায পড়ার পর আবার ঘুমাতে পারে। কিন্তু এই দৃষ্টান্ত আগামীতে এই হলে যেন সামনে না আসে, ব্যবস্থাপকদেরও এই বিষয়টি স্মরণ রাখা প্রয়োজন। তরবীয়ত-বিভাগের সবার উচিত, প্রত্যেককে জাগানো।

একইভাবে আমি গতকাল কর্মীদের বলেছিলাম, আজ সবাইকে বলছি, নিরাপত্তার প্রতি সতর্ক-দৃষ্টি রাখবেন। এটি মনে করবেন না যে, আমরা একটি হলের মধ্যে সুরক্ষিত আছি, তাই খুব ভালো নিরাপত্তার ব্যবস্থা আছে। এতে সন্দেহ নেই, তারপরও প্রত্যেককে নিজের চতুপার্শ্বে ডানে ও বামে দৃষ্টি রাখা প্রয়োজন। মহান আল্লাহ্ তা'লা প্রত্যেককে যে-কোন ধরনের অনিষ্ট থেকে নিরাপদ রাখুন।

খুতবা ও নামাযের পর আমি একটি গায়েবানা জানাযা পড়াব, যা শ্রদ্ধেয়া সৈয়দা আমাতুল্লাহ্ বেগম সাহেবার। যিনি হযরত ডাক্তার মীর মুহাম্মদ ইসমাঈল সাহেবের কন্যা ছিলেন। তিনি গতকাল মৃত্যু বরণ করেছেন, মৃত্যুকালে তাঁর বয়স ছিল ৯২ বছর। তিনি হযরত 'ছোটি আপা' উম্মে মতীন সাহেবার ছোট বোন ছিলেন। মাধ্যমিক পর্যন্ত শিক্ষা অর্জনের পর ইসলামী শিক্ষার ক্লাশ পাস করেছেন। তিনি জনাব পীর সালাহ্ উদ্দীন মরহুমের স্ত্রী ছিলেন, যিনি সরকারের উচ্চপদস্থ কর্মকর্তা হিসেবে অবসর গ্রহণ করেন।

মরহুমা ১৯৪৩ সাল থেকে ১৯৪৪ সাল পর্যন্ত লাজনা ইমাইল্লাহ্, মুলতানের প্রেসিডেন্ট হিসেবে সেবা করার সৌভাগ্য লাভ করেছেন। দেশ-বিভাগের পর পরই রাওয়ালপিন্ডিতে সেক্রেটারী মাল এবং জামাতের বিভিন্ন পদে থেকে সফলভাবে দায়িত্ব পালন করেছেন। ১৯৭১ সালে তিনি তার স্বামীর সাথে হজ্বব্রত পালন করারও সৌভাগ্য লাভ করেন। তার একটি বৈশিষ্ট্যের কথা সবাই লিখেছেন। যদিও তিনি জীবনে অনেক দুর্ঘটনা দেখেছেন, তাঁর একজন যুবক-ছেলে মারা যায়। স্বামীর মৃত্যুর পর যে-যুবক ছেলের সাথে তিনি ছিলেন, হঠাৎ করে তিনি ইন্তেকাল করেন। কিন্তু তিনি সর্বদা ধৈর্যের সাথে জীবন কাটিয়েছেন, কখনো ধৈর্য হারান নি। দোয়ার গভীর অভ্যাস ছিল এবং ইবাদতগুজার ছিলেন। সন্তানদেরকে অধিকাংশ সময় এ উপদেশই দিতেন যে, ইবাদতের প্রতি দৃষ্টি নিবদ্ধ রাখ, নামাযকে কখনো পরিত্যাগ করবে না। সদকা ও খয়রাত অনেক বেশি করতেন। কতক মহিলার জন্য নিয়মিত ভাতারও ব্যবস্থা করে রেখেছিলেন। একইভাবে, পড়াশুনার প্রতিও তার গভীর আগ্রহ ছিল। আত্মীয়তার সম্পর্ক রক্ষা করা এবং আত্মীয়-স্বজনের সাথে উত্তম-সম্পর্ক বজায় রাখার ক্ষেত্রে তাঁর জুড়ি ছিল না। নিজের পরিবার এবং শ্বশুড়-বাড়ীর লোকদের প্রতিও সন্মানজনক-ব্যবহার করতেন, যাদের মধ্যে অনেকেই অ-আহমদী। শ্বশুড়-বাড়ীর লোকজনও তাঁর নসীহত এবং কথাকে গভীর শ্রদ্ধার দৃষ্টিতে দেখতেন।

একইভাবে পবিত্র কুরআন পড়ানোর প্রতিও তার গভীর আকর্ষণ ছিল। যে যে স্থানে তিনি থেকেছেন, সেখানকার শিশুদেরকে কুরআন শরীফ পড়াতেন। কুরআন পড়ানোর জন্য পুরো-প্রস্তুতি নিয়ে যেতেন এবং নোট্সও নিতেন। অধিকাংশ সময় নিজের সন্তানদেরকে অহংকার থেকে বাঁচার জন্য হিতোপদেশ দিতেন। যেসব আত্মীয় অল্প-শিক্ষিত, তাদের সম্পর্কে বলতেন, তাদের সাথে কখনো অহংকারপূর্ণ-আচরণ করবে না। আর বলতেন, অসৎসঙ্গ সর্বনাশ ডেকে আনে। আল্লাহ্ তা'লা মরহুমার পদমর্যাদা উন্নীত করুন। তাঁর সন্তানদেরকে খিলাফত ও জামাতের সাথে সম্পৃক্ত রাখুন আর তাদেরকে সৎকর্মের তৌফিক দান করুন, আমীন।

আমীর সাহেবের রিপোর্ট অনুযায়ী এখানে সাউন্ড সিস্টেম ভালো রয়েছে, লাজনাদের অংশেও ভালো রয়েছে, আর পুরুষদের অংশেও অনেক ভালো রয়েছে। কিন্তু বুঝতে পারছি না, ইকো কেন হচ্ছে, বা প্রতিধ্বনি কেন শোনা যাচ্ছে? সার্বিকভাবে যদি ভালো থাকে তাহ'লে 'আলহামদুলিল্লাহ্'। আর যদি আরো উন্নত করা প্রয়োজন হয়, তাহ'লে সর্বাধিক ভালো করার সর্বাত্মক-চেষ্টা করুন।

(জামেয়া আহমদীয়া বাংলাদেশ ও বাংলা ডেস্কের যৌথ প্রচেষ্টায় অনুদিত)

k‡e eivZ

agxq †cÿvc‡U Av‡`Š †Kvb ¸iæZ iv‡L Kx?

Avjnv¾ gI jvbv mv‡jn Avng`
gyiæeŸx wmjwmjvn

KziAvb I nv`x‡mi Av‡jv‡K chv‡jvPbv Ki‡j G iv‡Zi †Kvb Aw¯Z LyR cvIqv hvq bv| Avi G-ivZ m¤ú‡K †h a¨vb-aviYv A‡bK gymjgvb‡`i g‡a¨ i‡q‡Q, Gi †Kvb cgvY KziAvb, mybœvn I nv`x‡m cvIqv hvq bv| nhiZ im‚‡j Kixg (mv.)-Gi hy‡M †Zv bqB, eis Zv‡eCb‡`i hy‡MI Gi †Kvb bvgMÜ cvIqv hvq bv|

AvdMvwb¯vb, cvwK¯vb, Bivb, fviZ I evsjv‡`‡k Ôk‡e eivZÕ AZ¨š RgK‡jvfv‡e cvjb Kiv nq| A_P Avð‡hi welq n‡jv mDw` Avi‡e Ôk‡e eivZÕ ej‡Z †Kvb Abyôvb D`hvcb Kiv nq bv|

15B kvevb n‡jv Ôk‡e eiv‡ZÕi w`b I ivZ n‡jv k‡e eivZ| G-ivZ m¤ú‡K ej nq, G iv‡Z c‡Z¨K gvbyl‡i fvM¨ wj‡L †`qv nq| ZvB G iv‡Z A‡bK †ekx bvgvh c‡o †Lv`v‡K mš‘ó Ki‡Z nq| GQvov ejv nq, 15B kvevb im‚j Kixg (mv.) †ivhv iv‡Lb Ges iv‡Z Kei wRqviZ Ki‡Zb I †ekx bIqv‡dj co‡Zb| ZvB w`‡b ‡ivhv iv‡Z n‡e Ges iv‡Z bIqv‡dj co‡Z n‡e Ges Kei wRqviZ Ki‡Z n‡e|

ejv nq, G iv‡Z gZ- AvZ¥vi cyY¨e‡Z wd‡i Av‡m Ges Zv‡`i AvZ¥xq-¯Rb‡`i‡K †`‡L hvq| A‡b‡K e‡jb, Rvbv‡Z GKwU MvQ Av‡Q, hvi cvZv¸‡jv‡Z cyY¨e‡Z emevmKvix gvbyl‡i bvg †jLv Av‡Q| †h cvZv¸‡jv G iv‡Z c‡o hvq, †m cvZv‡Z †h-me gvbyl‡i bvg †jLv _v‡K, Zviv G-eQi gviv hv‡e|

A‡b‡Ki g‡Z G iv‡Z gvbyl‡i Rxeb I g„Zy¨ m¤ú‡K wm×vš nq| ejv nq, G iv‡Z Avjvn ZvÕjv cyY¨e‡Z ‡b‡g Av‡mb Ges e‡jb, †K Av‡Q †h, ÿgv PvB‡e Avi Avwg ÿgv Ki‡ev| †K Av‡Q, †h PvB‡e Avi Avwg Zv‡K w`e|

k‡e eiv‡Z nvjyqv-iæwU evbv‡bv nq Ges AvZkevRx †cvov‡bv nq| G wb‡q gymwjg D¤§‡Z A‡bK gZ‡fa Av‡Q| AwaKvsk‡ki g‡Z GwU we`vÕZ I KziAvb I mybœv‡Z Gi †Kvb wfwË ‡bB| hvi k‡e eivZ D`hvcb K‡i, Zv‡`i g‡Z KziAv‡b Gi `jxj Av‡Q| Avi Zv n‡jv

mi~v `yLv‡bi Pvi, cvuP I Qq b¤i Avqv‡Z †hLv‡b ejv n‡q‡Q-

A_©r Avgiv G‡K wbðq GK AwZkjcY© iv‡Z AeZxY© K‡iwQ| Avgiv (we‡k_Mvgx‡`i) mZK K‡i _vwK| Avgv‡`i cÿ †_‡K Av‡`kµ‡g (G iv‡Z) c‡Z¨K cÁvcY© wel‡qi wm×vš †bqv nq | wbðq Avgiv B im~j †ciY K‡i _vwK|

ZvQvov, Zviv wKQz nv`xm I Dc¯vcb K‡i _v‡Kb| cvq †PŠÏwU †iIqvqvZ k‡e eiv‡Zi c‡ÿ Dc¯vcb Kiv nq| wKQz †jvK‡`i g‡Z, wØZxq wnRix‡Z wKejvi cwieZb nq| Avi †m w`bwU wQj 15 B kvevb| GRb¨ G-w`bwU D`hvcb Kiv nq| AvRKvj Av‡jgMY k‡e eivZ‡K mi~v `yLv‡bi Avqv‡Z eiYZÕ jvqjvZzb gyeviKvZzbÕ e‡j _v‡K|

KziAvb I nv`x‡mi Av‡jv‡K chv‡jvPbv Ki‡j G iv‡Zi †Kvb Aw¯Z LyR cvIqv hvq bv| Avi G-ivZ m¤ú‡K †h a¨vb-aviYv A‡bK gymjgvb‡`i g‡a¨ i‡q‡Q, Gi †Kvb cgvY KziAvb, mybœvn I nv`x‡m cvIqv hvq bv| nhiZ im‚‡j Kixg (mv.)-Gi hy‡M †Zv bqB, eis Zv‡eCb‡`i hy‡MI Gi †Kvb bvgMÜ cvIqv hvq bv|

k‡e eivZ Bivb †_‡K Ab¨vb¨ †`‡k Qwo‡q‡Q|_Ôk‡e eivZÕ dvwm kãwUI Gw`‡K m¤ú„³fv‡e BwO½Z K‡i| Avm‡j ÔjvqjvZzj K`iÕ Gi dvwm fvlvq Abyev` Ki‡j k‡e eivZ nq| Bmjvgx K¨v‡jÛv‡i kvevb n‡”Q Aóg gvm| G gv‡mi 15 ZvwiL, A_©r 15 B kvevb

Ôk‡e eivZÕ e‡j cwiwPZ| Avi‡e Ôjvqjv‡Zz wbm‡d wgb kvevbÕ A_©vr Ôkvevb gv‡mi A‡aKÕ e‡j cwiwPZ|

Ôke Õ dvwim kã| Gi A_ n‡jv ivZ I dvwm kã| Gi A_ n‡jv fvM¨| G kã¸wU Kziv‡b I nv`x‡mi †Kv\_vI e¨eüZ nq wb| Z‡e Gi wecix‡Z m‡n Ô K`iÕ G Ôjvqjv‡Zj Kv`iÕ kã cvIqv hvq, hv ighv‡bi mv‡_ m¤ú„³ , kvevb gv‡mi mv‡_ bq|

m‡n Ô`yv‡bÕi †h-AvqvZwU k‡e eivZ m¤ú‡K `jxj wn‡m‡c Dc¯vcb Kiv nq, Zv m¤ú‡K GK fzj e¨vL¨v I weåvwšKi m‡n `yv‡bi G-AvqvZ eiv n‡qQÑ

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ

A_©vr Avgiv G‡K wbðq G AvkxIe©v i‡Z AeZxY K‡iwQ| GLv‡b ÔûÔ A_©vr ÔG‡KÕ mebvgwU KziAv‡b e¨eüZ Kiv n‡q‡Q, Zv wbYq Ki‡Z n‡e| me gyd¨vmwmiMY G mebvgwU‡K KziAv‡bi Rb¨ e¨eüZ Kiv n‡q‡Q e‡j GKgZ| GLb ck n‡jv, KziAvb K‡e AeZxY nIqv ïiæ n‡q‡Q? kvevb gv‡m bv ighv‡b? cweÎ KziAv‡b Avjvn Zvjv e‡j w`‡q‡Qb,

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْءَانُ

A_©vr, ighvb n‡"Q †mB gvm, hv‡Z KziAvb AeZxY Kiv n‡q‡Q| (m‡n evKvivi:186) AZGe cweÎ KziAvb ighvb gv‡m AeZxY n‡q‡Q, G‡Z †Kvb m‡›`n †bB| D¤§‡Z †gvnv¤§`xqv GKgZ †h, KziAvb ighvb gv‡m AeZxY n‡q‡Q| G cwi‡cwÿ‡Z Ôjvqjv‡Zû gyeviKvÓ kvevb gv‡mi bq, Ôighvb gv‡mi ivZÕÑ e‡j Avjvn ZvÕjv wbYq Ki‡Qb| hv‡`i g‡Z Ôjvqjv‡Zû gyeviKvÓ kvevb gv‡mi 15 Zwi‡Li ivZ, ZvivI G K\_vwU gv‡bb †h, KziAvb ighvb gv‡m AeZxY n‡q‡Q| Zvn‡j ck KivB †h‡Z cv‡i Ggb fzj e¨vL¨v K‡i Zviv gymjgvb‡`i †Kb we`v‡Zi w`‡K †V‡j w`j? Gi DËi Avgiv GQvov Avi wK w`‡Z cvwi KviY, nvjyqv iæwUi m¤úK m‡n `yv‡bi G Avqv‡Zi mv‡\_ †bB| m‡n `yv‡bi AvqvZ¸wj‡Z Avjvn ZvAvjv e‡jb, G i‡Z cwZwU wel‡qi weÁZvc¨ I `p wm×vš Avjvni wb‡`‡k cKvk nq| nhiZ Be‡b AveŸvm (iv.) nhiZ Be‡b Igi (iv.) , gyRvwn`, KvZv`v I nvmvb emix g‡Zv cL¨vZ Zvdmxi KviKMY Ôjvqjv‡Zû gyeviKvÓ ej‡Z Ôjvqjv‡Zj K`iÕ-†K AvL¨wqZ K‡i‡Qb| m‡n ÔKv`iÕ co‡j G wel‡q wU Av‡iv cwi®vi n‡q hvq| Avjvn ZvÕjv ej‡Qb

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلَٰٓئِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

wbðq Avgiv G KziAvb K`‡ii iv‡Z AeZxY K‡iwQ| Avi †Zvgv‡K wK‡m eySv‡e †h K`‡ii ivZ Kx? K`‡ii ivZ nvRvi gv‡mi †P‡q DËg| G‡Z wdwi¯viv Gs cweÎ Zv me-wel‡q Zv‡`i cfz cwZcvj‡Ki Av‡`k wb‡q AeZxY n‡q \_v‡K| G GK Abwej kwš| Avi G Ae¯v †fvi chš weivR K‡i| AZGe Ôk‡e eivZÕ ev Ôjvqjv‡Zj gyeviKvÓ n‡jv jvqjv‡Zj K`i, Zv KziAvb †_‡KB cgvwYZ nq| Avi GwU I m¯úó †h, K`‡ii ivZ nvRvi gv‡mi †P‡q DËg| G †NvlYv ¯qs Avjvn ZvÕjvi| 15B kvevb‡bi iv‡Zi D‡jL KyiAv‡b †bB Zv cgvwYZ n‡jv| Zdmxi KviK‡`i bxwZ ÒKziAv‡bi GKvsk Av‡iKvs‡ki e¨vL¨v K‡i †`qÓ ZvI cgvY K‡i w`j Ôjvqjv‡Zj gyeviKvÓ Avm‡j Ôjvqjv‡Zj Kv`iÓ| GLb ck D‡V †h, G-iv‡Z gZz A\_ev fvM¨ wbaviZ nq A\_ev gZ- AvZ¥xq¯Rb‡`i AvZ¥v cy_ex‡Z Av‡m, Gme wK? Gi DËi n‡jv, KziAv‡b I nv`x‡m Gi †Kvb D‡jL †bB| Ôjvqjv‡Zj Kv`iÓ Gi m¤ú‡K KyiAv‡b eY©Z AvqvZ¸‡jv‡Z Gi †Kvb D‡jL †bB| GKUzLPšv Ki‡jB ejv hvq, G-me wKQz gbMov K_v| gZz m¤ú‡K cweÎ KyiAv‡b Avjvn ZvÕjv e‡jb,

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَن تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَٰبًا مُّؤَجَّلًا

A_©vr Avi Avjvni AbygwZ Qvov †KD gi‡Z cv‡i bv| †Kbbv, Gi Rb¨ GK †gqv` wbaviZ i‡q‡Q| (m‡n Av‡j Bgivb : 146)| wZwb AviI e‡jb,

إِنَّ اللَّهَ عِندَهُۥ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌۢ بِأَىِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌۢ

A_©vr wKqvg‡Zi Ávb GKgvÎ Avjvni Kv‡QB Av‡Q| wZwb eyó AeZxY K‡ib| Avi, MfvkÎ hv-B Av‡Q, wZwb Zv Rv‡bb| Avi †KD Rv‡b bv, AvMvgxKvj †m Kx DcvRb Ki‡e Ges (GUvI) †KD Rv‡b bv †Kvb ¯v‡b †m gviv hv‡e| (m‡n jyKgvb:35)

m‡n wnR‡ii 24 bs Avqv‡Z Avjvn ZvAvjv e‡jb, وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْىِۦ وَنُمِيتُ A_©vr, ÔAvi wbðqB AvgivB RxweZ Kwi I AvgivB gZz †`BÕ| wZwb e‡jb, إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ○ A\_©vr, wbðq Avjvn hv Pvb, ZvB K‡ib|Ó (m‡n nv¾ : 15) GQvov Av‡iv eû AvqvZ i‡q‡Q, hv †\_‡K Rvbv hvq, gZz m¤úwKZ wel‡q`x Avjvn ZvÕjv kvevb‡bi 15 Zwi‡L wbaviY K‡ib bv, eis GB ZK`xi ev cwigvc Avjvni nv‡Z Ges GUv wZwb jvqjv‡Zj Kv`‡ii iv‡ZI wbaviY K‡ib bv| G †gqv` Rb¥ n‡ZB wbawiZ nq| Avjvn ZvÕjv e‡jb,

إِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ○

وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍۭ بِالْبَصَرِ ○

A_©vr, wbðq Avgiv mewKQz GKwU cwigv‡c m„wó K‡iwQ| Avi Avgv‡`i Av‡`k †P‡Li-cjK †djvi b¨vq, GK wbwg‡lB (KvhKi nq)|

(m‡n Kvgvi: 50-51)

Z‡e gvbyl i Avgj, †`vqv I †Lv`vi ^bKU¨-cwßi Kvi‡Y G ZK`xi `xNvqZ n‡Z cv‡i| †hgb Avjvn ZvÕjv e‡jb,

وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْأَرْضِ

Avi, hv (ev †h) gvbyl i DcKvi K‡i, Zv (ev †m) cy_ex‡Z ¯vqx nq|

(mywv ivAv` 18)

cweÎ KziAv‡b Avjvn ZvÕjv e‡jb,

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ○

A_©vr, †n hviv Cgvb G‡bQ! †Zvgiv Avjvni ZvKIqv †mfv‡eB Aej¤b Ki, †hfv‡e ZvüZvKIqv Aej¤b Kiv DwPZ| Avi †Zvgiv KL‡bv AvZ¥mgcbKvix bv n‡q g‡iv bv|

(m‡n Av‡j Bgivb:103)

gZz hw` Ôjvqjv‡Zj gyeviKv‡ZÓ wbawiZ nq, Z‡e G Avqv‡Zi wK A_ Ki‡eb? Bmjvg †Zv K‡gi K_v e‡j, hv

cwZwbqZ Ki‡Z nq| G bq †h GKw`b ev GK iv‡Z Bev`Z Ki, Avi †Kvb Gev`‡Zi c‡qvRb †bB| †ZŠwn`, bvgvh, ‡ivhv, n¾, hvKvZ, ZvKIqv, `vbLqivZ GK iv‡Z ev GKw`‡bi e¨vcvi bq| G GK wbqwgZ-Kg| hw` GK iv‡ZB eQ‡ii me wKQzwbawiZ nq, Z‡e GK iv‡Zi ci mviveQi Bev`Z Avi Avg‡ji †Kvb c‡qvRb _v‡K bv| Avjvn ZvÔjv e‡jb,

قُلۡ يٰعِبَادِيَ الَّذِيۡنَ اَسۡرَفُوۡا عَلٰۤى اَنۡفُسِهِمۡ لَا تَقۡنَطُوۡا مِنۡ رَّحۡمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ جَمِيۡعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ○

A_©r Zzwg ej, Ô†n Avgvi ev›`viv, hviv wb‡R‡`i cÖv‡Yi Ici AwePvi K‡iQ! †Zvgiv Avjvni ingZ †_‡K wbivk n‡qv bv| wbðq Avjvn me cvc ÿgv K‡i w`‡Z cv‡ib| wbðq wZwbB AwZ ÿgvkxj (I) evi evi KiæYvKvix|Ô

(m~iv hygvi: 54)

G AvqvZ ‡Lv`vi ÿgvi Øvi GK iv‡Zi Rb¨ bq, eis cÖwZwU gyn~‡Z©i Rb¨ Lyj w`‡q‡Q| cÖKZ…Ie Ki‡j †h †Kvb w`b, †h-†Kvb iv‡Z, †h-†Kvb gyn~‡Z© †m ‡Lv`vi KiæYvi AwaKvix n‡Z cv‡i| ZvB †Lv`vi wm×vš—ev›`vi Avg‡ji Kvi‡Y nq| Avjvni G-wm×vš— Avgj Kivi c‡i nq, Avgj Kivi Av‡M bq| Avjvn ZvÔjv e‡jb,

مَاۤ اَصَابَكَ مِنۡ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنۡ سَيِّئَةٍ فَمِنۡ نَّفۡسِكَ ؕ

A_©r Zzwg †h Kj¨vYB jvf Ki, Zv Avjvni cÿ †_‡KB Av‡m Ges †Zvgvi †h AKj¨vY nq, Zv †Zvgvi wb‡Ri Kvi‡YB nq|

(m~iv wbmv:80)

D×Z…Kv‡bi-AvqvZ¸‡jv G wel‡qwU cwi®‹vi K‡i, mviv eQ‡ii Rb¨ ZK`xi wbawiZ nIqv Ôk‡e eivZÕ ev ÔjvqjvZzj K`‡iÕ-i mv‡_ m¤ú„³ bq| Bmjv‡g Kg n‡jv GK Pjgvb cwµqv, hv Rxe‡bi ‡kl-wbkvm chš— K‡i †h‡Z n‡e| nw`‡mi w`‡K `„wó w`‡j Avgiv †`L‡Z cvB nhiZ im‡~j Kwig (mv.) ÒAvBq¨vgyj exRÓ A_©r Av‡jwKZ w`b¸‡jv‡Z cwZgv‡m †ivhv ivL‡Zb|

Avi G w`b¸‡jv n‡jv cwZ gv‡mi 13, 14 I 15 ZvwiL| G m¤ú‡K© eY©bvix, bvmvC I gymbv` Avng` web nv¤^j mnxn †iIqvZ i‡q‡Q|

myZivs G welqwU —úó †h, nhiZ im‡~j Kixg (mv.) ïaygvÎ kvev‡bi 15 Zvwi‡L ‡ivhv iv‡Lb wb, eis cÖwZ gv‡mi 13, 14 I 15 ZvwiL †ivhv †i‡L‡Qb| ZvB cgwYZ n‡jv, 15 B kvevb A_©r k‡e eivZ e‡j hv Pvjv‡bv n‡”Q, we‡kl K‡i, Gi mv‡_ k‡e eivZ bvgK w`‡bi †ivhvi †Kvb m¤úK© †bB| Z‡e †iIqvZ n‡Z Rvbv hvq, kvevb gv‡m nhiZ bex Kixg (mv.) A‡bK †ewk †ivhv ivL‡Zb| Gi e¨vL¨vq A‡bK wKQz ejv hvq| Z‡e igRv‡bi cÖ¯‘wZ wnmv‡e †h G-†ivhv¸‡jv ivL‡Zb, G‡Z AwaKvsk gymwjg ÒHKgZ|

wØZxqZ, nhiZ bex Kixg (mv.) cvqkB Ô`vD`x †ivhvÕ ivL‡Zb| Avi G bdj †ivhv n‡jv GK w`b ci ci ivLv| eiYZ n‡q‡Q Avjvni `„wó‡Z nhiZ `vD` (Av.)-Gi †ivhv wQj DËg- whwb GKw`b ci ci †ivhv ivL‡Zb| Rvbv DwPZ, G n‡jv bdj †ivhv|

Z…ZxqZ k‡e eiv‡Zi c‡ÿ 14 wU nv`xm Dc¯'vcb Kiv n‡q _v‡K| gyn‡Ïmxb I ÔAvmgvDi †ihv‡jiÕ (A_©r eYbvKvix‡`i mZZv, —§iYkw³, BZ¨vw` wbYqKiY) cÖ`Kv`x‡Z Gme †iIqv‡qZ‡K ÒhqxdÓ (`ye©j) Ges ÒgvIhyÓ (ev‡bvqvU) e‡j AvL¨v ‡`qv n‡q‡Q| G me nv`x‡mi GK eYbvKvix ÒBe‡b Awe hvevivnÓ Gi Ici ÒgvIhyÓ nv`x‡mi Acev` i‡q‡Q|

nv`x‡mi ÔAvmgvDi †ihv‡jiÕ Ici nhiZ Bgvg Be‡b nvRvi AvmKvjvbx (in.)-Gi cÖ`K ÒZvKixeÓ-Gi 396 c"Ôvq Gi D‡jL Av‡Q| ÔAvmgvDi †ihv‡jiÕ Ici weL¨vZ cÖ`K ÒgxhvbyÕ BÔ‡Z`vjÓ-G‡Z nhiZ Bgvg eYbvixi eiv‡Z Ôk‡e eivZÕ m¤úwKZ nv`xm mg‡ni mb‡`i K‡qKRb eYbvKvix‡K ÒhqxdÓ `ye©j e‡j AvL¨v †`qv n‡q‡Q| myZivs 15 B kvevb m¤ú‡K© eiYZ AwaKvsk nv`xm MnY‡hvM¨ bq|

Z‡e gyn~K_v n‡jv, hvi D‡jL Kiv‡b †bB Ges mybœvn I Avmvi ‡_‡K mve¨— bq, Zv wK-fv‡e Bmjv‡gi Ask n‡Z

cv‡i? ejv n‡q _v‡K, 15 B kvev‡bi iv‡Z Avjvn ZvjÕjv cÖ_g e›i AvKv‡k AeZxY n‡q ev›`v‡`i ÿgv Kivi †NvlYv †`b, `vb Kivi †NvlYv †`b, BZ¨v`x| †R‡b ivLv DwPZ, Gi/c nv`xm ïaygvÎ 15 B kvev‡bi Rb¨ wbawiZ bq|

eis Avnv`x‡m eiYZ n‡q‡Q, c‡Z¨K iv‡Z hLb iv‡Zi GK-ZZxqvsk cvi n‡q hvq, ZLb Avjvn ZvÔjv cÖ_g e›i me‡P‡q wbKUZg AvKv‡k AeZiY K‡ib Ges †NvlYv †`b, †K Av‡Q †h Avgvi Kv‡Q PvB‡e, Avi Avwg Zv‡K w`e?......| GQvov Ôigvhv‡bi dwhjZÕ m¤ú‡K Avgiv mevB Rvwb| G gv‡m Rvnvbv‡gi `iRv eÜ K‡i †`qv nq Ges Rvbv‡Zi me `iRv Lyj †`Iqv nq| igvhv‡bi c_g 10 w`b Ôing‡Zi w`bÕ, wØZxq 10 w`b ÔgvM‡divZi w`bÕ Avi †kl 10 w`b ÔbvRv‡ZiÕ| Avevi Gi g‡a¨ †kl-`k‡Ki †e‡Rvo iv‡Z ÒjvqjvZzj K`iÓ I Av‡Q|

AZGe 15B kvev‡bi ivZ m¤ú‡K hv-wKQzejv nq, Zv nv`xm n‡Z cgwYZ, mZ¨ bq| eis Gi Zzjbvq igvhv‡bi cwZwU w`b I cwZwU ivZ Ges jvqjvZzj K`i, hv nvRvi gv‡mi †P‡q DËg-Gi ¸iæZ A‡bK †ekx Ges nhiZ bex Kixg (mv.)D¤§Zi `„wó †Rvi‡jvfv‡e Gw`‡K AvKlY K‡i‡Qb|

nvjyqv iæwU Ges AvZkevRxi mv‡_ nhiZ bex Kixg (mv.) Gi `~iZg m¤úK© †bB| GwU GK we`vZ| AvR hviv Bmjv‡gi bv‡g Gme Ki‡Q, KzAv‡bi G AvqvZ Zv‡`i Rb¨ mZKevYx D”PviY Ki‡Q Ges Avgv‡`i mevB‡K c_-c`kb Ki‡Q|

Avjvn e‡jb, ÒAvi wbðq Zv‡`i gv‡S GgbI GK`j Av‡Q, hviv wKZv‡ei ‡ejvq —i‡K (Ggbfv‡e) e`jvq, †hb †Zvgiv Zv wKZv‡ei Ask g‡b Ki, A_P Zv Ask bq| Avi Zviv e‡j, G n‡jv Avjvni cÿ †_‡K| A_P GUv Avjvni cÿ †_‡K bq| Avi Zviv †R‡bï‡b Avjvni weiæ‡× wg_¨v ewb‡q e‡j|Ó

(m~iv Av‡j Bgivb : 79)

Avjvn ZvÔjv Avgv‡`i me ai‡bi we`vZ †_‡K gy³ ivLyb| (Avgxb)

Kv‡ji hvÎvaŸwb ïwb‡Z wK cvI?

nvwg`yi ingvb

ivZ †cvnvevi KZ †`wi cv‡Äix ?
GL‡bv †Zvgvi Avmgvb fiv †g‡N,
†mZviv †nj‡j GL‡bv D‡Vwb †R‡M,
Zzwg gv¯‡j Avwg `vo Uvwb fz‡j;
Amxg Kzqvkv Rv‡M kb¨Zv †Nwi,
ivZ †cvnvevi KZ †`wi cv‡Äix ?
ïayMvdj‡Z, ïa~‡Lqv‡ji fz‡j,
`wiqv-A_B åwš wbqwQ Zz‡j,
Avgv‡`i fz‡ji wKbv‡i gywdi `j ewm
†`‡L‡Q mf‡q A¯wMqv‡Q Zv‡`i †mZviv kkx|
†gv‡`i †Ljv aywjvq jywU‡q cwo,
†Kvb `‡Q Zv‡`i `ªv‡M¨i kaix,
ivZ †cvnvevi KZ †`wi cv‡Äix?

Bmjvg †i‡bmvui Kwe diiyL Avn‡g` Zvi ÔcvÄixÕ KweZvq eZgvb-wek¦ gymjgvb‡`i `ykvi GK Kiæb-wPÎ A¼b K‡i‡Qb Ges Gi Rb¨ wb‡R‡`i †Lqv‡jb fyj-åvwš, MvdjwZ‡K `vex K‡i‡Qb| ÔïayMvdj‡Z, ïa~‡Lqv‡ji fz‡j `wiqv-A_B åwš wbqwQ Zz‡jÕÑ Kwei K_vq gymwjg-wek¦ AvR Zvi †mvbvjx-AZxZ fzyj Amxg- Kzqvkvq wbgw¾Z ivZ †cvnvevi Abš A‡c¶vq iZ| wKš GB nZvkv †_‡K gy³ ev cwiÎv‡Yi c_ Kwe LyuR cvb wb, Bmjv‡gi Agwbkvi Kv‡jv ivZ †cvnvevi A‡c¶v K‡i‡Qb| Gi cKZ. KviY GB †h, Kwe¨K fvevjyZvq Av”Qb Kwe gvbeZvi gy³ i w`kvix gnvbex (mv.)-Gi evYxi Av‡jv‡K Ges cweÎ- Kziv‡bi wb‡`kbvq Ôcv‡ÄixÕ‡K cwiPwjZ Ki‡Z cv‡ib wb| gnvbex ivmyj Kixg (mv.)-Gi wZ‡ivav‡bi ci gymwjg-RwZ †h wKQzKvj AÜKv‡i wbgw¾Z _vK‡e, GKwU nv`x‡m Zvi Bw½Z cvIqv hvq| nhiZ ivmyj Kixg (mv.) e‡j‡Qb ÔAvgvi kZvãx m‡evrKó,.Zvici Dnvi mwbwnZMY, (A_vr mvnvevMY) Zvici Dnvi mwbwnwZMY (A_vr Zv‡eZv‡eCbMY), AZci wg_¨vi cv`yfve nB‡e| (wbmvB I wgkKvZ)

eZgvb hyMUv †h Bgvg gvn`x (Av.)-Gi Awefv‡ei hyM Ges wZwb †h Awefz© n‡q‡Qb, Zv cweÎ-KziAvb I nv`x‡m ewYZ n‡q‡Q| nhiZ ivmyj Kixg (mv.) e‡j‡Qb, ÔAvgvi gvn`xi mZ¨Zvi Ggb `yU j¶Y A‡Q, hv AvKvk-gÛj I c„w_ex mó-Aewa AvR chš Kvil mZ¨Zvi-wb`kb ¯i¦c c`wkZ nq bvB | GKB ighvb gv‡m P›`-MÖn‡Yi c_g iwÎ‡Z P›` MnY n‡e Ges mh©-MÖn‡Yi ga¨g-Zwi‡L mh-MnY n‡eÕ| (`viKZzbx G j¶Y h_vmg‡q cÖy n‡q‡Q | MZ GKkZ eQ‡ii BwZnvm I eZgvb Bmjvgx we‡k wewfb wel‡q Av‡jvPbv Ki‡Z cPÛ gZwe‡iva wbi‡c¶-fv‡e chv‡jvPbv Ki‡j †h-†Kvb mZ¨ wccvmy gb Gi mZ¨Zv Dcjwä Ki‡Z cvi‡e| ZvB ‡Zv Avgv‡`i GK gigx Kwe wj‡L‡Qb :

Ô................GB‡Zv A‡Lix Rgvbv
GKB ighv‡b Pvu` I m‡h MnY jwMj †`‡Lv bv,
ce© MM‡b ag‡KZz G‡jv, Rwg NbNb Kuvcqv ewjj
Øx‡bi gvn`x Awmqv‡Q f‡e, Kvb Lyj †Kb †kvb bv |

eZgv‡b gymjgvb-RwZ †ZnvËi fv‡M wef³| iwóq-¶gZvi AwaKvix Ges m¤ú`kvjx nIqv m‡Zl GKZvi e‡j ejxqvb bq | Gi KviY wbbq Ki‡Z wM‡q Kwe e‡j‡Qb,

ïayMvdj‡Z, ïa~‡Lqv‡ji fz‡j,
`wiqv-A_B åwš wbqwQ Zz‡j|
Avgv‡`i fz‡ji wKbv‡i gywdi `j ewm,
†`‡L‡Q mf‡q A¯wMqv‡Q Zv‡`i †mZviv-kkx|
†gv‡`i †Ljv aywjvq jywU‡q cwo,
†Kvb `‡Q Zv‡`i `ªv‡M¨i keix|

KziAvb nv`x‡mi cKZ-mZ¨‡K D‡c¶v K‡i wb‡R‡`i ‡Lqvj-Lywk gZ e¨vL¨v K‡i RwZ AvR fzj‡i mvM‡i nveyWzey Lv‡”Q | GKK-†bZZ, hv wQj Bmjv‡gi †MŠi‡ev¾j HwZn¨ Ges wek-weR‡qi gy PwjKv-kw³, Zv †_‡K gymwjg RwZ AvR eû `‡i| GKK-†bZZ.Ges †bZvi ckvZxZ-AvbyMZ¨ GLb Ômy¨Õ-civnZ welqÕ | GK gymjgvb Av‡iK gymjgv‡bi fvBÕÑ nhiZ ivmyj Kixg (mv.)-Gi GB gnvb wb‡`k fz‡j wM‡q AvR gymjgvb RwZ fvZ-nZ¨vq wbgw¾Z| weagx‡`i Kv‡Q Bmjvg cPvi Kivi cwie‡Z GK wdiKvi gymjgvb Av‡iK wdiKvi gymjgvb‡K Kv‡di AvL¨v w`‡q wRnv‡`i bv‡g Ah_v †evgvevwR I bvbv-iKg mšvmx-KgKv‡Û wjß n‡q kwši-ag Bmjvg‡K Akvwš, mšvm I wnsmv-we‡Ø‡li Pv`‡i Rwo‡q Bmjv‡gi kvš-mŠ›`h¨ i¦c‡K K‡i‡Q KjywlZ Ges m¼xY©Z | Bmjv‡gi eZgvb `y©e¯vB Kwe diiæL Avn‡g` Zvi Ôcv‡ÄixÕ-KweZvq wPwÎZ K‡i‡Qb Ges G†_‡K gy³ i-c_ LyR‡Z wM‡q I nZvk n‡q‡Qb Ges Kv‡jv ewÎi Aemv‡bi A‡cÿvq KvjwZcvZ K‡i‡Qb |

wKš wb‡R‡`i fyj-åvwš I AvZ¥-Kjn fzyj wM‡q wbi‡c¶ mZ¨vbymÜvbx-`wó Ges KziAvb-nv`x‡mi Av‡jv‡K wPšv Ki‡j mn‡RB †evaMg¨ n‡e †h, eZgvb-Kv‡j Bmjv‡gi eû-AvKvw•LZ RqhvÎv ïiæ n‡q‡Q| Z‡e GB Kv‡ji hvÎvaŸbx ïb‡Z n‡j Kvb cvZ‡Z n‡e KziAvb-nv`x‡mi Av‡jv‡K AvMgbKvix cwZkæZ cyiæl Bgvg gvn`xi AvnŸv‡bi cwZ| cKZc‡¶ eZgvb KvjUv, hv PZz©k (1301 wnRix †_‡K 1400 wnRix chš) wnRix †_‡K ïiæ n‡q‡Q, G-hyMUv Bgvg gvn`xi AvMg‡bi hyM| eZgvb mgq e‡j w`‡”Q, GB mgqKv‡ji g‡a¨ ïayygvÎ GKRb Qvov mZ¨-gvn`xi `weKviK Ab¨ †Kn ‡bB| GUv GB `vex`v‡ii mZ¨Zv cgvY K‡i| GB `weKvi‡Ki bvg nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.)| wZwb fvi‡Zi ¸iæ`vmcyi wRjvi AšMZ Kvw`qvb bvgK Mv‡g 1350 wn: m‡b RbMnY K‡ib| 1290 wnRix

†_‡K wZwb GKvav‡i Bjnvg cvß nb Ges 40 ermi c¥© nIqvi ci Avjvni wbKU n‡Z Gjnvg cvß n‡q 1308 wnRix‡Z Bgvg gvn`x nIqvi `vex K‡ib| Zvui cwZwôZ Rvgv‡Zi bvg ÔAvng`xqv gymwjg RvgvZÕ| eZgvb Kv‡j G RvgvZB Bmjv‡gi Rqhvîvi AM-cw_K| Avng`xqv Rvgv‡Zi weke¨vcx-KgKv‡Ûi cwZ j¶¨ Ki‡j †`Lv hvq †h, weke¨vcx Bmjv‡gi AMhvîv Ges cKZ.weR‡qi hvÎv ïiæ n‡q †M‡Q |

Avng`xqv gymwjg Rvgv‡Zi cwZôvZv Bgvg gvn`x nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.)‡K D‡Ïk¨ K‡i Avjvn ZvAvjv Bjnvg K‡i‡Qb ÒÛqvjwR Avimvjv ivmj©vû wej û`v Iqv Øxwbj nv‡° ‡j BqRwnivû Avjv`Ïxb Kzjwn, Iqv jvI Kv‡invj gykwiKyb Ó| G QvovI ÔAwg †Zvgvi cPvi‡K c„w_exi cvš cv‡š †cŠQvB‡evÕÑGUv KzAvb Kix‡gi fwel¨ØvYx, hv Bgvg gvn`xi mZ¨Zvi-¯c‡ÿ c¥ n‡q‡Q| KviY, gnvbex nhiZ ‡gvnv¤§` (mv.) Gi mgq Bmjv‡gi we¯wZ.Avie fLÛ Ges Gi Avk-cv‡ki K‡qKwU †`‡ki g‡a¨ mxgve× wQj | c„w_exi GK eªr Ask ZLbI Abwe¯‹Z. wQ‡jv | Lªóvd‡q iv‡k`xb-Gi wLjvdZ-Kvj chš Bmjvg we¯Z.n‡qwQj wmwiqv chš| A_P Bmjvg-ag mviv c„w_exi Rb¨ Ges nhiZ gyn¤§` (mv.) mviv c„w_exi Rb¨ ÔingZzwjj AvjvgxbÕ n‡q G‡m‡Qb| c„w_exi GK-wekvj Ask Av‡gwiKv gnv‡`k ZL‡bv Awe¯‹Z.nqwb| †m Av‡jv‡K cwij¶Z nq †h, †m-mgq chš G Avqv‡Zi fwel¨ØvYx c¥Zv jvf K‡ewb| KviY, Gi c¥Zv-jvf Bgvg gvn`xi (Av.) Rb¨ wbawiZ wQj Ges Zvui (Av.) †LjvdZ-Kv‡j c¥Zv jvf K‡i‡Q| c„w_exi cv‡š cv‡š Bmjv‡gi kvwšÍi-evYx †cŠ‡Q †M‡Q, Zvui cwZwôZ Rvgv‡Zi kvwšÍ-c¥‡e¯wbô cPv‡ii Kj¨v‡Y| eZgv‡b GKgvÎ Avng`xqv RvgvZB we‡k 200 wUi AwaK-‡`‡k RvgvZ cwZôv K‡i Bmjv‡gi kvwšÍi-evYx cPvi Ki‡Q| Gi e¨wß c„w_exi DËi-†Mvjva †_‡K `w¶b-†Mvjva chš we¯Z| mviv we‡k 222wU gmwR`, 112wU nvmcvZvj, 55wU ¯‹zj , 122 fvlvq cweÎ-KzAv‡bi Abyev` K‡i Bmjv‡gi kvwšÍi-evZv †cŠQv‡"Q | Ggb wK, bvw¯KZvi Zx_-f‚wg ivwkqv Ges †Wbgv‡Ki Awaevmx‡`i‡K Bmjv‡gi kvwšÍ QvqvZ‡j Avb‡Z m¶g n‡q‡Q | Gi m`m¨MY AvšRvwZK A½‡b kvwšcq, †`kf³ I mybvMwiK wnmv‡e cwiwPZ | ‡Kvb Rv½-msMV‡b ev Rv½ ZrciZvq G Rvgv‡Zi †Kvb m`‡m¨i m¤ú„³ZZv †bB| KzAvb Kix‡gi AvqvZ-Òth Avgvi bv‡g wg_¨v iUbv K‡i, Awg Zvi Rxeb-wkiv †K‡U w`BÓ (mya nv°v)| cwZkæZ gnvcyiæl Bgvg gvn`x nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.) G `vexi mZ¨Zvi ¯c‡ÿ h‡_ó| KviY, nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.) Zvi `vexi ci GK `xNKvj RxweZ wQ‡jb Ges Zvi cwZwôZ RvgvZ 100 ermi eqm AwZµg K‡i‡Q| ZvQvov, gnvb Avjvn ZvÕjv Zvui †cwiZ-cyiæl bex-im~j‡`i mZ¨Zv hvPvB‡qi Rb¨ KzAvb Kix‡g Avil A‡bK gvcKvwV eYbv K‡i‡Qb | Zvi g‡a¨ Avi-GKwU gvcKvwV n‡jvÑ KzAv‡bi GB A‡gvN weavb ÔcKvivš‡i Avwg Ges Avgvi im~jB weRqx n‡eÕ (mya gRv‡`jv AvqvZ 22)| GB wm×v‡šÍi Av‡jv‡KB gvbe BwZn‡m mg¯ bex-im~j, Avlwjqv, gRv‡Ï`M‡Yi wgkbB memgq KZKvh n‡q‡Q| c„w_exi †Kvb kw³ ev ivR-kvmbB Zv‡`i weR‡qi c‡_ evav n‡q `uvov‡Z cv‡iwb| Avi GB weavb GL‡bv Avng`xqv gymwjg Rvgv‡Zi mg¯ KgKv‡Û meÎ KvhKi n‡"Q| weMZ GK kZ erm‡ei BwZnv‡m A‡bK eo eo evav-weN, mvgwRK I iwóq ÿgZvi kZ-we‡ivaxZv m‡ZI mviv-we‡k m¤¢vb I ghv`vi mv‡_ G RvgvZ wU‡K Av‡Q| KzAvb Kix‡gi GB weavb g‡Z nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.) Gi `vexi mZ¨Zv cZxqgvb n‡q‡Q| KviY, kZ erm‡ii kZ we‡ivaxZv. AZ¨vPvi, wbcxob m‡ZI Zvi cwZwôZ Rvgv‡Zi AMhvÎv wewNZ nq wb| Avng`xqv gymwjg RvgvZ AvR c„w_exi 200wUi †ekx †`‡k cwZwôZ| GgbwK c„w_exi GKcvš, ei‡di ivR¨ G›UvKwUKv gnv‡`‡ki gZ GKwU †`‡k-- Bmjv‡gi cZvKv †M‡o‡Q Avng`xqv gymwjg RvgvZ| c„w_ex‡Z GLb †Kv_vI Avng`xqvZ Z_v cKZ.Bmjv‡gi mn~A¯ hvq bv|

GLb cwZwU gyÕwgb-gymwjgvb, Av‡k‡K im~j, †Lv`vfxiæ-†jv‡Ki DwPr Rvgvbvi Cgv‡gi †LvR Kiv| Bmjv‡gi `yhvMc¥ iwÎ KLb Ges wK-fv‡e †cvnv‡e, Zvi w`Kwb‡`kbv gnvbex nhiZ †gvnv¤§` (mv.) Zvi wewfb nw`‡mi gva¨‡g w`‡q †M‡Qb | Bmjvg‡K cybRweZ Kivi Rb¨ Ges im~jyvni (mv.) D¤§Z‡K c_åóZv †_‡K D×v‡ii Rb¨ hyM hyM gby‡Ï` ev gnvcyiæl AvMg‡bi K_v nw`m I †KviAv‡bi weavb: Óibðq Avjvn ZvÕjv c‡Z¨K kZvãxi wk‡ivfv‡M GB D¤§‡Zi Rb¨ Ggb GKRb gnvcyiæl‡K Awef©yZ Ki‡eb, wbwb Zvnv‡`i Rb¨ ag‡K mÄxweZ Ki‡eb Ó (Avey`vD` I wgkKvZ kwid)| GB nvmx`wU G-K_vi mZ¨Zv cgvY K‡i †h, c‡Z¨K bex ivm~j, cqM¤i, †gvRv‡Ï` Zvi cieZxR‡bi AvMgbevZv Ges Zv‡K †Pbvi jÿY mgn~ eYbv K‡i gvbe RwZ‡K GKUv w`K-wb‡`kbv w`‡q hvb | GB nv`xm Abyhvqx Î‡qv`k kZvãx chš AvMZ †gvRv‡Ï‡`i mÜvb Bmjv‡gi BwZnv‡m cvIqv hvq| PZz`k kZvãxi †gvRv‡Ï`i mÜvb Kiv c‡qvRb, wKš Zv †KD g‡b Ki‡Qb bv |

c‡Z¨K bex ivm~j, cqM¤i, †gvRv‡Ï`MY Zvi cieZx R‡bi AvMgb evZv Ges Zv‡K †Pbvi jÿY mgn~ eYbv K‡i RwZ‡K GKUv w`K wb‡`kbv w`‡q hvb | a‡gi BwZnv‡m KL‡bv Gi e¨Z¨q N‡UwbÑ| a‡gi GB ixwZ Abyhvwq ‡Zi kZvãxi †gvRv‡Ï` %mh` Avng` †e‡ijex (ivn.)| nw`‡mi eYbv Abyhvqx, Bgvg gvn`xi AvMg‡bi mgq A‡bK Av‡MB AwZµvš n‡q †M‡Q| wnRix PZz`k kZvãxi wk‡ivfv‡M GKgvÎ nhiZ wghv †Mvjvg Avng` Kvw`qvbx (Av.) gRwÏ` nIqvi `vex K‡ib | G cm‡½ wZwb Ab¨Î e‡j‡QbÓ Iqv³ _v Iqv‡³ gmxnv, g¨vq bv AvZv †Zv AvlI †KvB AvZv †nvZvÓÑ mgqUv gmxn (Av.)-Gi AvMg‡bi, Awg bv Avm‡j Ab¨ †Kn Aek¨B Avm‡Zv | wKš D³ kZvãx‡Z Ab¨ †Kn gRwÏ` nIqvi `vex K‡ib bvB| wnRix PZz`k kZvãxi wbwb gRwÏ`, wZwbB cwZkæZ gmxn gvD` I Bgvg gvn`x (Av.)| e¯Z: Zvnvi gva¨‡gB mi~v bi~-Gi Avqv‡Z- B‡¯Ljvd (mi~v bi~ : 56) Ges ÔwLjvdZ Avjv wgbnvwRb beyqvZÕ (beyqv‡Zi avivq wLjvdZ) nv`xmwU cyZv jvf K‡i‡Q Ges †m-Abyhvqx Bmjv‡g cybivq wLjvdZ cwZwôZ n‡q‡Q | eZgv‡b Bgvg gvn`xi 5g wLjvdZ Pj‡Q| eZgvb-hyM gymwjgvbMY GK †Nvi åvwšÍi g‡a¨ wbcwZZ | Avng`xqv gymwjg RvgvZ e¨ZxZ mK‡jB G-A‡cÿvq Av‡Qb, `ywbqvi eQi c‡e gZ Cmv bex RxweZve¯vq AvKvk n‡Z KLb cybivq aivav‡g AvMgb Ki‡eb| A_P cweÎ KzAv‡bi 30wU AvqvZ Zv‡K gZ mve¨¯ K‡i‡Q| Bûw` RwZ †hgb GLb chš Cmv (Av.) Ges †gvnv¤§` (mv.) †K bex wnmv‡e gvb‡Z cv‡iwb, Ges Zv Zv‡`i G åvwšÍ-aviYvi Kvi‡Y †h, Cmv (Av.) Gi cye Zv‡`i agMš Abyhvwq Bwjqv bex AvKvk n‡Z ¯kix‡i c„w_ex‡Z Avm‡e| A_P Cmv (Av.)†KB i¨cK-fv‡e Bwjqv bex ejv

n‡q‡Q | Bûw` RwZ Avjvni bex Cmv (Av.) †K µzk †`qvi Kvi‡Y Avjvni Awfkvc Kzuia wb‡q GL‡bv BjvBqv bexi AvMg‡bi A‡cÿvq Av‡Q| Avi gymjgvbiv Cmv (Av.)-†K bex wnmv‡e gvbvi djkÖwZ‡Z bex-K‚j wk‡ivgwY, wekbex, †gvnv¤§` (mv.) †K †g‡b Avjvni Kiæ-jvf I wmivZzj gy÷vwK‡g Pjvi †mŠfvM¨ ARb K‡i‡Q, wKš' åvš—-avivYvi ekeZx n‡q Bgvg gvn`x‡K MnY Ki‡Z cvi‡Q bv| ZvivI A‡cÿv Ki‡Q, `yRvi eQi c‡e g„Z Cmv-bex RxweZve¯vq KLb AvKvk n‡Z cÖZ¨vq aivav‡g AvMgb Ki‡eb| Bû`x RwZi A‡cÿvi Kvj GL‡bv †kl nqwb, A_P Cmv (Av.) G‡m MZ n‡q †M‡Qb `yRvi eQi Av‡M| Bgvg gvn`x G‡m †M‡Qb GK kZvãx cvi n‡q †Mj, Bû`x‡`i gZ åvš— avivYvi Kvi‡Y gymjgvbMY GL‡bv Zv‡K MnY Ki‡Z cvi‡Q bv | G-†hb gnvbex nhiZ gyn¤§` (mv.) Gi GKwU nv`x‡m ewYZ fwel¨ØvYxi c~Y©Zv| nv`x‡m ewYZ n‡q‡Q ÒAv‡Lix Rvgvbvq Avgvi D¤§Z Bû`x‡`i Abyi“c n‡e, †hi“c c‡qi GKwU RyZv Ab¨ RyZvi Abyi“c nq| (mybvb wZiwgwR nv`xm bs 2565) G-cm‡½ AviI A‡bK nv`xm Av‡Q, GLv‡b ïay GKUvB D‡jL Kiv n‡jv| Kv‡ji hvÎvaŸbx eZgvbKv‡ji gymjgvbMY ïb‡Z cv‡"Qb bv, ZvB Zv‡`i AÜKv‡ii Ag‡bkv KvU‡Q bv| gymjgvbMY eZgvb-Kv‡ji cwZkÖæZ-gnvcyiæl Bgvg gvn`x nhiZ wghv †Mvjvg Avng`‡K MnY bv Kiv chš— Zv‡`i Av‡cÿvi Kvj I †kl n‡"Q bv|

eZgvb Kv‡ji cwZkÖæZ-gnvcyiæl Bgvg gvn`x nhiZ wghv †Mvjvg Avng`(Av.) gymjgvb RwZ‡K D‡Ïk¨ K‡i e‡j‡Qb : GUv Bgvg gvn`x(Av.) Gi AvMg‡bi hyM| Avjvn Avgv‡K Bjnvg gvidZ Rwb‡q‡Qb, Ôcyb_ex‡Z GKRb mZKKvix G‡m‡Qb, wKš' cyb_ex Zv‡K MnY K‡i wb, A_P †Lv`v ZuvK MnY Ki‡eb Ges cÖP‡Û AvµgbmgƒÛ Øviv Zvi mZ¨Zv cKvk Ki‡ebÓ (ZvRwjqv‡Z Bjwnqv)|

G-hy‡Mi cwZkÖæZ gnvcyiæl wekevmx‡K D‡Ïk¨ K‡i G mZK-evYx D"PviY K‡i‡Qb: †n BD‡ivc! ZzwgI wbivc` bn| †n Gwkqv, Zzwg wbivc` bn! †n Øxcevmx‡MY, †Kvb KwíZ-†Lv`v †Zvgv‡`i‡K iÿv Ki‡e bv| Avwg kni¸wj‡K weaŸ¯— n‡Z †`LwQ Ges Rbc`¸‡jv‡K Rbgvbekb¨ cvw"Q| †mB GK I AwØZxq †Lv`v `xNKvj hver bxie wQ‡jb| Zuvi m¤§y‡L eû Ab¨vq AbywôZ n‡q‡Q| GZw`b wZwb bxi‡e me mn¨ K‡i ‡M‡Qb| GLb wZwb iæ`gywZ©‡Z ¯^q-i~‡c cKvk Ki‡eb| hvi Kvb Av‡Q, †m keY KiæK, H mgq `‡i bq| Awg mKj‡K †Lv`vi Avkªq Qvqvq Z‡j GKwÎZ Ki‡Z †Póv K‡iwQ| wKš' fvM¨ZeZ c~‡e© nIqv Aek¨¤¢vex| Awg mZ¨ mZ¨B ejwQ, G‡`‡ki cvjvI Nwb‡q Avm‡Q| b~‡ni hy‡Mi Qwe †Zvgv‡`i †Pv‡Li m¤§y‡L fvm‡e, jy‡Zi hy‡Mi Qwe †Zvgiv ¯P‡ÿ `kb Ki‡e| (wKkwZ‡q b~n)....|

cwe‡Î Kziƒv‡b ejv n‡q‡Q- hZÿY chš— bv Avgiv ivm~j †ciY Kwi, ZZÿY chš— †Kvb RwZ‡K Avhve †`B bvÓ (17:15) | KziAvb Kix‡gi GB ggevYxi cwZdjb †`L‡Z cvIqv hvq nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.)-Gi Bgvg gvn`x-`vwei cv°v‡j msNwUZ Avhve ¯i~c cÖ_gwU fqsK‡¤úi| 1934 mv‡j wenv‡ii fqsK¤ú, 1935 mv‡j †Kv‡qUvi fqsK¤ú Ges 1914-1917 I 1939-1945 m‡b msNwUZ `ywU wekhy×, hvi Kv‡Q fqsK‡¤úi cPÛZvI nvi †g‡b‡Q| B`wbs-Kv‡j msNwUZ cÖ_gwU †`ke¨vcx ¯'iYvZxZ Kv‡ji mybvwg, B‡›`v‡bwkqvq fqsK¤ú, nvBwZ‡Z fqsK¤ú I K‡jiv gnvgvix, A‡óªwjqv I cvwK¯—v‡b bwRiwenxb fqven-eb¨v, BZ¨vw` welq wPšv Ki‡j KziAvb Kix‡gi GB evYx I cwZkÖæZ gnvcyiæ‡li mZKZv I fwel¨ØvYxi c~Y©Zv cwbavY Kiv hvq |

wPšv K‡i †`Lv DwPr, GKw`‡K gnvgvix‡Z †`k DRvi n‡q hv‡"Q Ges Ab¨ w`‡K fqsK‡¤úi ZvÛeYxjv G mg¯— wec`-Avc`, †ivM-e¨vai gnvgvwi, hy×-weMn, wcQz Qvo‡Q bv ‡Kb? Avgv‡`i g‡a¨ wbðq †Kv_vI †Lv`vi †cwiZ-cyiæ‡li Awefvi n‡q‡Q, hv‡K Avgiv A¯xKvi KiwQ, hvi djkÖwZ‡Z Avhve-¯i~c G mg¯— wec`-Avc`, †ivM-e¨va, gnvgvwi, hy×-weMn, RMrevmxi wcQz Qvo‡Q bv| cyb_ex w`b w`b aŸs‡mi w`‡K AMmigvb | ‡Kvb mveavbKvix AvMgb QvovB wK Gmg¯— wec`-Avc` Avgv‡`i Dci cwZZ n‡"Q ?

GLb cwZwU gyn~Ë©b-gymjgvb, Av‡k‡K im~j, †Lv`vfxiæ-†jv‡Ki DwPr, Rvgvbvi Cgv‡gi †LvR Kiv | Bmjv‡gi Awefve I ‡Lvjvdv‡q iv‡k`vi ci Gchš— wnRix m‡bi evivwU kZvãx‡Z ‡Zi Rb gyRv‡Ï‡`i mÜvb Avgiv cvB| †Zi wnRix mvj cvi n‡q †M‡Q, GLb †P$Ï wnRix mvj Pj‡Q| PZz`k wnRixi wk‡ivfv‡M Bgvg gvn`x Awef©Z nIqvi K_v meRbwe`Z| ingvZzjøvj Avjvgxb, nhiZ gyn¤§` (mv.) e‡j †M‡Qb ÒBgvg gvn`x hwni nIqvi msev` cvIqv gvÎB Zvi nv‡Z eqAvZ KwiI, hw` ei‡di Dci nvgv¸wi w`‡qI †h‡Z nq| wbðB wZwb Avjvni Lwjdv, Bgvg gvn`xÓ (Be‡b gvRv)| GB nv`xmwU †_‡K Bgvg gvn`x‡K gvbv Ges Zvi nv‡Z eqAvZ Kivi Avek¨KZv cwbavY Kiv hvq| Avgv‡`i KZe¨ n‡jv, †mB mg¯— nv`xm, †h¸wj‡Z Bgvg gvn`x Awefv‡ei K_v eYbv Kiv n‡q‡Q, †m¸wj KziAv‡bi Av‡jv‡K wePvi-we‡kølY K‡i Bgvg gvn`x †LvRv Ges ivm‡~ji Av‡`k Abyhvqx kZ evav-weN AwZµg K‡iI Zvi nv‡Z eqAvZ Kiv DwPZ|

wek gymwjg-mgvR Ges wekevmxi cwZ AvnŸvb: Kv‡ji hvÎvaŸbi cwZ KbcvZ Kiæb| Bmjv‡gi GB wei"q-i‡_i hvÎx †nvb Ges AÁZvi c_ cwiZ¨vM K‡i Áv‡bi c_ AbymiY Kiæb | KviY, nhiZ ivm~j Kixg (mv.) e‡j‡Qb Ó†h-e¨w³ hy‡Mi Bgv‡gi nv‡Z eqAvZ bv Kwiqv Bn‡jvK Z¨vM K‡i‡Q, †m Rv‡nwjqv‡Zi (AÁZvi) g„Zy¨ eiY K‡i‡QÓ (mwn gymwjg) | KziAvb-nv`x‡mi Av‡j‡K nhiZ wghv †Mvjvg Avng` (Av.) Gi `vwei mZ¨Zv hvPvB‡q Avgiv me`v mZ¨v‡šlx-gybyl mn‡hvMx | Avmyb hZ evav-weN, Pjyb hZB wbcxob AZ¨vPvi, _vg‡e bv weR‡qi i_, Bmjv‡gi GB mZ¨cPvi |

Kzqvkvi Pv`i we`xb K‡i
G‡jv bZzb cfvZ,
Rv‡M gymwjg RwZ gvn`xi AvnŸv‡b |
nvRvi eQ‡ii Avuavi KvwU‡q
†cvnv‡jv wZwgi ivZ,
Kv‡ji RqhvÎv n‡q‡Q ïiæ
Zgmvi Aemv‡b |
ïå wgbvi fz‡b K‡i‡Q Av‡jv,
w`KP‡µ‡Z ‡`L H EIvi Av‡jvK †iLv |
cv‡Äix Zzwg Áv‡bi gkvj Rv‡jv,
mwVK w`‡Ki †c‡q hv‡e Zzwg †`Lv |
Avjvni gvn`x G hy‡Mi KvÛvix,
åvšl I f‡j nvi‡ebv Avi w`kv |
cwZwbwaZvi mvi_x †Zvgvi, cv‡Äix,
†K‡U ‡M‡Q †Nvi åvš—i Agvbxkv,
Kvb †c‡Z ïb Kv‡ji hvÎvaŸb|
mZ¨ c‡_i mÜvb †`q gvn`xi AfqevYx |

†ivhvi wbq¨Z

gIjvbv iBm Avng`

Bmjvg K‡gi wfwË‡K wbq¨‡Zi Dci †i‡L‡Q| nhiZ †gvnv¤§` (mv.) e‡j‡Qb- Avj AvÔgvjy webwbqvZ A_©vr- gvbyli K‡gi dj wbq¨Z Ges B”Qvi Dci n‡q _v‡K| GB Rb¨ Bev`‡Z ïiæ Kivi I Bmjv‡g mwVK-wbq¨Z I †bK-B”Qvi kZ i‡q‡Q| hLb †Kvb gymjgvb †Kvb we‡kl-Bev`‡Zi wbq¨Z K‡i Zv‡K Av`vq K‡i, ZLb Zvi †mB-Bev`Z Av`vq n‡e| GB K_vB †ivhv m¤ú‡K©I ejv n‡q‡Q †h, GiRb¨ wbq¨Z Kiv Riæix| me‡P‡q fv‡jv, †ivhvi Rb¨ gvbyl iv‡Z Nygv‡bvi mgq B”Qv I wbq¨Z K‡i NygvK|

nv`x‡m Av‡Q- nhiZ ûhvqdv (iv.) eY©bv K‡ib, nhiZ bex Kixg (mv.) e‡jb, †h-e¨w³ dR‡ii c‡e †ivhv ivLvi wbq¨Z bv K‡i, Zvi †ivhv ivLv c~Y© nq bv| (wZiwgwh-AveIqvey mvIg) †ivhvi wbq¨‡Zi Rb¨ †Kvb A_©‡evaK kã cvV Kiv Riæix bq| wbq¨Z †mB B”QviB bvg, †hRb¨ †m †Kb Lv`¨ I cvbxq †Q‡o w`‡”Q|

‡ivhvi wbq¨‡Zi Rb¨ †Kvb †`vqv nv`xm kix‡d D‡jL †bB| GKwU evK¨ cPwjZ Av‡Q, hv cvV Kiv‡Z †Kvb Amyeav †bB| Avi Zv n‡”Q-Iqv we mvIg Mw`b bvIqvBZy wgb kvnwi ivghvbv A_©vr - Kvj mKv‡j ighvb gv‡mi †ivhv ivLvi wbq¨Z KiwQÓ| hw` wbR fvlvq ev k‡ã I wbq¨Z K‡i, Z‡e †Kvb Amyeav †bB| Bgvg gv‡jK (in.), Bgvg kvdx (in.) I Bgvg Avng` (in.) Gi g‡Z ighv‡bi †ivhvi wbq¨Z iv‡Z Kiv Riæix| wKš‘ Bgvg Avey nvwbdv (in.), mydqvb mvIix (in.), Bgvg AveyBDmyd I Bgvg †gvnv¤§` (in.) Gi g‡Z ighvb gv‡m iv‡Z †ivhvi wbq¨Z Riæix bq| †Kb bv, †ivhvi wbq¨Z Kivi D‡Ïk¨ GB †h, †hb wbaviY Kiv hvq, †Kvb †ivhv, bdj bv diR| Avi ighv‡bi †ivhv ivLvi ûKg w`‡q †Lv`v ZvAvjv Zv wbaviY K‡i w`‡q‡Qb, GB Rb¨ iv‡Z Zvi wbq¨Z Kiv Riæix bq|

Avgv‡`i Kv‡Q I †ivhv ivLvi mgq hw` gvbyl Ôgvmbyb wbq¨ZÕ ev wb‡Ri fvlvq bq¨Z K‡i Zv n‡j fv‡jv| wKš‘ †Kvb gvbyl hw` ighv‡bi †ivhvi wbq¨Z gy‡L bv e‡j, Avi B”Qv hw` †ivhvi nq, Zv-n‡j †ivhv n‡q hvq| Bgvg kvdx (in.) I Bgvg Avey nvwbdv (in.) Gi g‡Z hw` Aa©-w`e‡mi Av‡M chš— ighv‡bi †ivhvi wbq¨Z Kiv nq, Zvn‡j I n‡e| Avi Bgvg gv‡jK (in.), Bgvg Avng` web nv¤^j (in.) I BmnvK e‡jb, hw` ighv‡bi c_g iv‡Z mg¯— ighvb-gv‡mi Rb¨ wbq¨Z Kiv nq, Z‡e h‡_ó| †Kbbv, mg¯— †ivhvi-wbq¨Z I GKwU †ivhvi wbq¨Z GKB K_v|

nhiZ AvK`vm gmxn gvD` (Av.) Gi wbKU GK e¨w³i ck Dc¯'vcb n‡jv †h, Avwg N‡ii wfZ‡i e‡m wQjvg, Avi Avgvi avibv wQj, nq‡Zv †ivhv-ivLvi mgq GLbI Av‡Q| ZvB Avwg wKQzLvIqv-`vIqv K‡i †ivhvi wbq¨Z K‡i wbjvg wKš‘ c‡i Ab¨-GK e¨w³i gva¨‡g Rvbv †Mj, ZLb mv`v Av‡jv †`Lv w`‡q wQj| GLb Avwg wK Kie| ûhyi (Av.) ej‡jb-Ggb Ae¯'vq Zvi †ivhv n‡q wM‡q‡Q| wØZxqevi ivLvi c‡qvRb bvB| †Kbbv †m mveavbZv Aej¤^b K‡i‡Q Ges wbq¨‡Zi g‡a¨ †Kvb cv‡K¨ †bB| (e`i-14 †de«qvix 1907 wLóvã)

hw` †ivhvi wbq¨Z K‡i iv‡Z Nygv‡bv nq, Avi mKv‡j †m‡nixi mgq †PvL bv Lyjvi Kvi‡Y †m‡nix LvIqv bv nq, Z‡e †m‡nix bv †L‡q †ivhv ivLv hvq| Avi iv‡Zi-wbq¨ZB h‡_ó| wKš‘ mvaviY-fv‡e †m‡nix Qvov †ivhv ivLv Avi Zv‡K wbqg ewn©f~Z †bqv cQ›`bxq KvR bq|

nhiZ gym‡jn gvID` (iv.) †K ck Kiv n‡qwQj, ‡ivhvi wbq¨Z Riæix wK-bv? DË‡i wZwb (iv.) e‡jb-Ô‡ivhvi Rb¨ wbq¨Z Riæix| wbq¨Z Qvov mIqve bvB| wbq¨Z g‡bi-B”QviB bvg| (Avj dRj 28 RyjvB 1914 wLóvã)

Avjvn ZvAvjv Avgv‡`i mKj‡K mwVK-wbq¨Z Abyavqx KvR Kivi †ZŠwdK `vb Kiæb (Avgxb)|

(mÎt-‡ZvndvZzm wmqvg)

¯^vMZ cweÎ gv‡n ighvb

gvngỳ Avng` myRb

Avjvn ZvAvjv Avgv‡`i mevB‡K Av‡iKwU ighvb gvm jvf Kivi †mŠfvM¨ `vb Ki‡b, Avgxb| Avi gvÎ K‡qK`b c‡iB cweÎ Ôgv‡n ighvbÕ ïiæ n‡"Q| Bmjvgx cwÄKv †gvZv‡eK cwZ eQi cweÎ Ôgv‡n ighvbÕ Av‡m, Avevi P‡j hvq| gymwjg Rvnv‡bi cvß-eq¯‹, mye-mej, bi-bvix G-cweÎ gv‡m Bev`‡Zi wbq‡Z †Qve‡n Qv‡`K n‡Z mh¨v¯ chš— mecKvi cvbvnvi Ges ¯^vgx-¯¿xi ^`wnK wgjb n‡Z weiZ †_‡K †ivhv cvjb K‡i _v‡Kb| †ivhvi gyj D‡Ïk¨ e¨³ Ki‡Z wM‡q Avjvn ZvAvjv cweÎ KziAv‡b D‡jL K‡i‡QbÑ Ò‡n hviv Cgvb G‡bQ! †Zvgv‡`i Rb¨ †ivhv diR Kiv n‡jv, †hfv‡e Zv diR Kiv n‡qwQj †Zvgv‡`i ceeZx©‡`i Rb¨, †hb †Zvgiv ZvKIqv Aej¤^b Ki‡Z cviÓ (m~ivZzj evKvivt 184)|

cvß eq¯‹ mye-mej gymwjg bi-bvix, hv‡`i cweÎ ighvb jv‡fi †mŠfvM¨ AwRZ n‡e, Zv‡`i DwPZ AeÁv-Ae‡njv Avi †KvbcKvi evnvbvi Avkª bv wb‡q †ivRv ivL‡Z AvcvY †Póv-c‡Póv Pvwj‡q hvIqv| †Kbbv, G gvm nq‡Zv ev wØZxqevi Avgv‡`i Rxe‡b wd‡i bvI Avm‡Z cv‡i| ZvB GB gv‡mi mwVK gj¨vqb Kiv DwPr| Avi ighvb Ggb GKwU gvm, †h gv‡mi mv‡_ Ab¨ †Kvb gv‡mi Zzjbv P‡j bv|

†ivhv gvbe-ü`‡q Avjvni cwZ wekvm, fw³ I ZvKIqvi gvb evov‡Z jeY m`„k¨, GUv †ivhv`v‡ii hveZxq cvc †gvPb K‡i RvbvZ jv‡fi wbðqZv c`vb K‡i| †hfv‡e nv`x‡m D‡jL Av‡Q, ÔnhiZ Avey û‡ivqiv (iv.) eYbv K‡ib, nhiZ bex Kixg (mv.) e‡j‡Qb, †h-e¨w³ wekvv‡mi AvšwiKZv I DËg-dj jv‡fi evmbvq ighvb gv‡m †ivhv iv‡L, Zvi c‡ei mecKvi-cvc ¶gv Kiv n‡eÕ, (†evLvix, gymwjg)|

nv`x‡m cv‡V Rvbv hvq, Ô‡ivhv ^a‡hi A‡aK, Avi ^ah Cgv‡bi A‡aK| Bmjv‡gi cvPwU ¯—‡¤¢i g‡a¨ ighv‡bi †ivhv móvi mv‡_ ev›`vi mv¶vr jv‡fi gva¨g wn‡m‡e me‡kô ¯—¤¢|

Avi GRb¨B nhiZ ivm~‡j Kixg (mv.) nv`x‡m Kỳmx‡ gva¨‡g Gikv` K‡i‡Qb, Òm¤§vb I ghv`vi cfy Avjvn e‡jb, ÔgvbyI Ab¨-me KvR Zvi wb‡Ri Rb¨, wKš‘ †ivhv GKvšB Avgvi Rb¨ Ges Avwg GiRb¨ Zv‡K cÖ¯‹Z.Kie|Õ †ivhv ÔXvjÕ ¯^iƒc| Zzwg bv‡g ejwQ, hvwi nv‡Z gyn¤§‡`i Rxeb, †ivhv`v‡ii gy‡Li MÜ Avjvni wbKU †gk‡Ki M‡Üi †P‡qI cweÎ| GKRb †ivhv`vi `yÕwU Avb›` jvf K‡i, †m Avbw›`Z nq, hLb †m BdZvi K‡i Ges †ivhvi Kj¨v‡Y †m Avbw›`Z nq, hLb †m Zvi cfzi mv‡_ wgwjZ nq (eyLvix)|

KziAvb kixd n‡Z cZxqgvb nq, Avjvn ZvAvjv ^ahkxj‡`i‡K †ewnmve mIqve `vb Ki‡eb| †ivhv cvjb Kivi d‡j †ivhv`vi ^a‡hi Pivš— bgybv †ck K‡ib| Ônv`x‡m Kỳmx‡Õ n‡Z Av‡iv Rvbv hvq †h, nhiZ ivm~‡j cvK (mv.) e‡j‡Qb, Avjvn e‡jb, †ivhv`vi Zvi †fvM wejvm Ges cvbvnvi ïaygvÎ Avgvi Rb¨B eRb K‡i| myZivs †ivhv Avgvi D‡Ïk¨B, Avi AvwgB Gi cyi¯‹vi`vb (gymwjg)|

nhiZ Avey~û‡ivBiv (iv.) KZ…K ewYZ n‡q‡Q-nhiZ ivm~‡j Kixg (mv.) e‡j‡Qbt hLb ighvb gvm Av‡m, ZLb Rvbv‡Zi `iRv Lyj †`qv nq, Rvnvbv‡gi `iRv eÜ n‡q hvq, Avi kqZv‡bi cv‡q wkKjÄi civ‡bv nqÕ (eyLvix)|

c‡Z¨K †ivhv`vi‡K MfxifvBe g‡b ivL‡Z n‡e, †ivhv-Av`v‡qi A_, KZ¸‡jv weIq †_‡K †euP _vKv I KZ¸‡jv weIq‡K eRb Kiv| GiKg‡S ewn¨KZvi †Kvb gh¨ †bB| Ab¨ †h-†Kvb Bev`Z gvb‡ei `„ó‡Z aiv c‡o, wKš‘ †ivhv Ggb GK Bev`Z, hv ïay Avjvni †`L‡Z cvb, hvi gh©v-wkKKo †ivhv`vi-ev¨w³i ü`‡q jyKvwqZ-ZvKIqvi mv‡_ mshy³| nhiZ gynv¤§` (mv.) e‡j‡Qb, gvbyli ü`‡q hw` kqZv‡bi Avbv‡Mvbv bv _vK‡Zv, Z‡e gvbyl D×RMZ †`Lvi `„ó¤úbœ n‡q †hZ| kqZv‡bi Avbv‡Mvbv eÜ †ivhv n‡"Q Bev`Z-mg‡ni Xvj-¯^iƒcÓ| nhiZ Ave~mvC` Lỳix (iv.) †_‡K ewYZ, wZwb e‡jb, nhiZ ivm~‡j Kixg (mv.) e‡j‡Qbt †h-e¨w³ Avjvni c‡_ GKwU †ivhv iv‡L, Zvi GB GKwU w`‡bi wewbg‡q Avjvn ZvAvjv Zv‡K Rvnvbvg †_‡K mËi eQ‡ii `~‡i Z mwi‡q ivL‡ebÕ, (eyLvix, gymwjg)|

‡ivhvØvi gvbyl ¯^xq Kvgbv-evmbv‡K `gb K‡i wbR‡K wdwikZvM‡Yi †gvKvg AwZµg Ki‡Z m¶g nq, †m †cŠ‡Q hvq bvd‡m gyZgvBbvnÑA_vr ckwš—cvß AvZ¥vi chv‡q| †ivhv Øviv AvZ¥v‡K †R¨wZgq Kivi mybvM cvIqv hvq|

B‡Zvg‡a¨ Avgv‡`i Rxe‡bi `xNZg Ask AeÁv-Ae‡njvq AwZZ n‡q‡Q| †KD Rwb bv, Avi KZUv mgq Avgv‡`i Rb¨ Aewkó i‡q‡Q, nqZev cieZx ighvb Avi wd‡i cve wK-bv, ZvI Avgiv †KD ej‡Z cvwi bv, Avi GUv ejv Kv‡iv c‡¶ m¤¢e I bq| ZvB Avmyb, Avgiv mevB GB ighv‡b hv‡`i‡K Avjvn ZvAvjv †mŠfvM¨ w`‡eb, Zviv †hb †ivhvi mvabv Øviv wbR‡K Keyjq‡Z-†`vqvi †gvKv‡g DbxZ Ki‡Z AvcvY †Póv-c‡Póvq wb‡qwRZ Kwi, Avi wb‡R‡`i †`vI-Î"wU¸‡jvi Rb¨ †Lv`vi `ievi †ewk †ewk cYZ nB|

Avjvn ZvAvjv Avgv‡`i mevB‡K AvMZ Ôgv‡n-ighvbÕ †_‡K cwic~Y-fv‡e Kj¨vYjvf Kivi †ZŠwdK `vb Ki‡b, Avgxb|

masumon83@yahoo.com

evsjvi wKse`wš

Rvgvbxi c_g wgkbvix

Lvb mv‡ne †gŠjfx †gveviK Avjx

†gvnv¤§` Rvnv½xi eveyj

(17Zg wKw¯Í)

Lvb mv‡ne †gŠjfx †gveviK Avjx, Rvgvbxi c_g wgkbvix| Rb¥ : 1881, g„Zz¨: 1jv b‡f¤^i 1969|

nhiZ gvIjvbv †Mvjvg dwi` mv‡ne evBk w`b mgy› c_ cwo w`‡q Rvgvbx G‡mwQ‡jb| cwe¿ KziAv‡bi Bs‡iwR Abyev` I msw¶ß †bvU BwbB wj‡L‡Qb| wZwb GKRb D"PwkwÿZ gvbyl wQ‡jb| hvi Bs‡iwR‡Z h‡_ó eyrcwË wQj| wZwb nhiZ gmxn gvIDÕ (Av.) Gi mvnvex wQ‡jb|

Abyi"cfv‡e, †gŠjfx †gveviK Avjx mv‡n‡ei K_v ej‡Z nq †h, wZwbI cv_wgK hy‡Mi GKRb †gvev‡jM wQ‡jb| wZwb 1909 mv‡j nhiZ Ljxdv‡Zi gmxn AvDqvj (iv.)i nv‡Z eqAvZ K‡ib| wZwb GKRb evOvwj wQ‡jb| 1917 mv‡j nhiZ Lj‡dvZz gmxn mvbx (iv.) hLb Rxeb Drm‡Mi ZvniixK K‡ib ZLb me c_g †h †ZiwÆ Rb hyeK wb‡R‡`i‡K IqvKd K‡iwQ‡jb, Zv‡`i g‡a¨ †gŠjfx †gveviK Avjx mv‡neI wQ‡jb| wZwb 1969 mv‡j evsjv‡`‡k g„Zz¨ eiY K‡ib Ges e¸ovq wbR GjvKv‡Z mgvwnZ Av‡Qb| †gvUK\_v GB `yRb wQ‡jb Rvgvbxi c_g †gvev‡jM| Avcbviv ï‡b‡Qb †h, Rvgv‡Zi mxwgZ mvg_ m‡ZI Zv‡`i †hvMv‡hvM KZ e¨vcK wQj| eZgvb †gvev‡jM‡`i DwPZ Zv‡`i BwZnvm m¤ú‡K ÁvZ nIqv Ges wb‡R‡`i Ae¯'vb‡K we‡kIY K‡i KvR‡K †eMevb Kivi AvcvY †Póv Kiv|

ûhi- e‡jb, †h Av‡eM, AvšwiKZv, Z¨vM I †e`bvfiv †`vqvi Af¨vm †m hy‡Mi Avng`x bvix‡`i g‡a¨ wQj AvRI †mB wbôv I AvšwiKZvq Avng`x gv-†evbiv mg„× e‡j Avwg wekvm Kwi| Avwg GwUI g‡b Kwi †h, †mme Avng`x bvixi †`vqvB wQj hv Zv‡`i AvIjv‡`i g‡a¨ a‡gi Rb¨ Z¨v‡Mi mgy›vb †ciYv m„ó Ki‡Z †c‡i‡Q|

AvR Avjvn Zv'jv kZ eivv-wecwË Ges Pig we‡ivwaZv m‡ZI RvgvZ‡K evwj‡b cvq m‡Zi jÿ BD‡iv Ges Dwbk †KvwU cwK¯vbx i"cx e¨q ÔLwb`RvnÕ gmwR`Õ wbgv‡Yi mvg_ w`‡q‡Qb| G A‡\_i wmsnfvM †hvMvb w`‡q‡Qb Rvgvbxi jvRbviv, Pvi jÿ BD‡iv G‡m‡Q ewnwe‡ki jvRbv‡`i KvQ †\_‡K, hvi †ewki fvM w`‡q‡Q hy³iv‡R¨i jvRbviv| G gmwR` m¤ú‡K Av‡iv wKQz Z\_¨ Rwb‡q w`"Q| gmwR‡`i Rb¨ †m hyM `yGKi Rwg µq Kiv n‡jI eZgvb gmwR‡`i †gvU Rwgi cwigvY GK GK‡ii wKQz †ewk|| gmwR‡`i AvqZb GK nvRvi AvUkZ K‡qK eM wgUvi| wewfb wewawb‡la m‡ZI †Zi wgUvi D"P wgbvi wbwgZ n‡q‡Q| G‡Z GKkZ AvUIwÆ eM wgUvi ck¯— `yU nj i‡q‡Q| Pvi Kÿ wewkó GKwU evm Mn, †Mó nvDm, PviwU Awdm Kÿ QvovI GKwU ck¯— m‡¤§jb Kÿ i‡q‡Q| fwel¨‡Z wkï‡`i Rb¨ GKwU cvK wbgv‡Yi cwiKíbv i‡q‡Q| Avcbviv Rv‡bb! GLv‡b gmwR` wbgv‡Yi wei"‡× Pig we‡ivwaZv n‡q‡Q| wKš mg‡qi mv‡\_ mv‡\_ Zv K‡g hv‡"Q| hLb GLvb †\_‡K kwš I fv‡jvevmvi cqMvg gvbyl jvf Ki‡e ZLb BbkvAvjvn AwP‡iB we‡ivwaZv cyivcywi †\_‡g hv‡e e‡j Avwg Avkvev`x|

ûhi- e‡jb, KvKZvjxq wel q n‡jv; †mhyM hLb gmwR` wbgv‡Yi D‡`¨vM †bqv nq ZLb AvKw¯§Kfv‡e A_%bwZK g›`vfve †`Lv †`q Ges GLbI GKB cwiw¯wZ weivR Ki‡Q| wKš †Lv`v ZvÔjv Ki"Yv K‡i‡Qb| d‡j Ggb cwiw¯wZ ïi" nevi Av‡MB Avgv‡`i gmwR` wbgvY KvR mgvß n‡q‡Q| Gici ûhi- LyZevi ïi"‡Z cwVZ `yÕU Avqv‡Zi Av‡jv‡K gmwR` wbgv‡Yi mv‡_ msw'kó‡`i `wqZ I KZ‡e¨i cwZ wek Avng`xqv Rvgv‡Zi g‡bv‡hvM AvKlY K‡i e‡jb, †Kej gmwR` wbgvY KivB h‡_ó bq, Avgv‡`i‡K gmwR‡`i AwaKvi c`vb Ki‡Z n‡e| me`v gmwR‡` G‡m h\_vmg‡q evRvgvZ bvgvh Av`vq Ki‡jB Avgiv gmwR‡`i nK c`v‡b mÿg n‡ev| Avgv‡`i Cgvb‡K m‡ZR I kw³kvjx ivLvi Rb¨ me`v gmwR‡`i mv‡\_ GKwU AwZ¸K m¤úK M‡o Zzj‡Z n‡e| G hyM Avjvn ZvÔjv Avgv‡`i‡K hyM Bgvg nhiZ gmxn gvIDÕ (Av.)†K MnY Kivi †ZŠwdK w`‡q‡Qb| wZwb Avgv‡`i Cgvbx Ae¯v‡K `p Kivi Rb¨ c‡` c‡` wb‡`kbv w`‡q‡Qb| gmwR` wbgvY K‡i Avgv‡`i Aw\_K Kievbxi `wqZ †kI n‡q hvqwb| eis Av‡iv †e‡o‡Q| Avcbviv hviv N‡ii e¨q ms‡KvPb K‡i gmwR` d‡Û Pv`v w`‡q‡Qb, Zv‡`i GB †PZbv ev †ciYv KLbI gi‡e bv| Avi Zviv MeI K‡i bv| †Lv`vi fv‡jvevmvq hviv Aw\_K Z¨vM ¯xKvi K‡ib wZwb Zv‡`i ab I Rb m¤ú‡` A‡kl eiKZ †`b| ZvB Avgv‡`i

Av‡iv AwaK Kiæevbx Kivi †ciYv wb‡R‡`i gv‡S RvMiæK ivLvi †Póv Kiv DwPr| Avcbviv ¯^qs GB gmwR‡`i cvc¨ nK Av`vq Kiæb Ges mšÍvb‡`i ZiweqZ Kiæb hv‡Z gmwR‡`i mv‡_ Zv‡`i GKwU wbweo m¤úK© M‡o D‡V| Avgv‡`i jvRbv‡`i Z¨vM I Kiæevbx ZLbB djc`ª n‡e hLb Avcbviv Ges Avcbv‡`i cieZ©x cRb¥ gmwR‡`i mv‡_ IZ‡cÖvZfv‡e hy³ n‡q hv‡eb|

ûhyi e‡jb, Avwg Rvgv‡Zi cÖ‡Z¨K m`m¨‡`i‡K ejwQ, Avcbviv ZLbB gwnjv‡`i GB Z¨v‡Mi cwZ`vb w`‡Z mÿg n‡eb hLb Zv‡`i AvKvsLv cyiY K‡i mwZ¨Kvi A‡_© bvgvhx n‡eb| g‡b ivL‡eb, gmwR‡` Avmv cÖ‡Z¨K‡`i Rb¨ Avek¨K gwnjv‡`i Rb¨ bq| Zviv B‡”Q n‡j Avm‡Z cv‡ib Avevi bvI cv‡ib| ZvB gwnjv‡`i gmwR` wbgvY Kiv cgvY K‡i †h, Zviv †Kej †Lv`vi Rb¨ Avš—wiKfv‡e Kiæevbx K‡ib| Zv‡`i ¯^vgx-mšÍvb †hb gmwR‡`i mv‡_ hy³ _v‡K| GwU Zv‡`i cig PvIqv|

ûhyi e‡jb, Avwg LyZevi ïiæ‡Z †h AvqvZØq †ZjvIqvZ K‡iwQ Zv‡Z Avjvn ZvAvjv e‡jb,

ÔGes †m e¨w³B Avjvni gmwR`mg~n iÿYv‡eÿY Ki‡Z cv‡i †h Avjvn I ciKv‡ji Dci Cgvb Av‡b Ges bvgvh Kv‡qg K‡i Avi hvKvZ †`q Ges Avjvn Qvov Ab¨ KvD‡K fq K‡i bv, Ges AwP‡iB Giv †n`vqvZ cvß‡`i Aš—fy³ n‡e| gy'wgb bvix Ges gy'wgb cyiyl ci¯úi eÜz Zviv mrKv‡Ri Av‡`k †`q Ges Amr KvR n‡Z weiZ iv‡L Ges bvgvh Kv‡qg K‡i, hvKvZ †`q Ges Avjvn I ivm‡ji AvbyMZ¨ K‡i| Giv Ggb hv‡`i cwZ Avjvn Aek¨B `qvciek n‡eb| wbðq Avjvn gnvcivµgkvjx, cig cÁvgqÕ| (m~iv AvZZvIev : 18 I71)|

G AvqvZ¸‡jvi cwZ `„wó w`b Ges wb‡R‡`i Cgvb I Avg‡ji Ae¯’v hvPvB Kiæb| gy'wgb nevi Rb¨ nhiZ gmxn gvIK` (Av.) evisevi wewfb ¯’v‡b Avgv‡`i g‡bv‡hvM AvKIY K‡i‡Qb Ges w`Kwb‡`kbv w`‡q‡Qb| GK¯’v‡b wZwb (Av.) e‡jb,

Ôgy'wgb Zviv hv‡`i Kg Zv‡`i Cgv‡bi mvÿ¨ enb K‡i| Zv‡`i ü`‡q Cgvb wj‡L †`qv n‡q‡Q| Zviv †Lv`v Ges Zvui im‡~ji wb‡`k‡K me wKQzi Dci cÖvavb¨ w`‡q _v‡Kb| ZvKIqvi m~²wZm~² I msKxY© c_mg~n Zviv †Lv`vi LwZ‡i Aej¤^b K‡ib Ges †Lv`vi fv‡jvevmvq Zvui wejxb nb| Avi c‡Z¨K e¯‘ hv gvbyl Ges Zvui ‡fZi ev Avjvni c‡_ evav m„wó K‡i Zv AvLjv‡Ki mv‡_ m¤úK© hy³ †nvK ev g›` Kg A_ev D`vmxbZvB †nvK bv †Kb Gme wKQz†_‡K Zviv wb‡R‡`i‡K gy³ iv‡Lb| mZ¨ivs G n‡”Q †mB Cgvb hv Avgv‡`i‡K me`v ciKv‡ji cwZ wek¯ ivL‡e| ciKvj m¤ú‡K nhiZ gmxn gvIK` (Av.) GK¯’v‡b e‡jb,

ÔAwLivZ m¤ú‡K AvR‡K Avgvi g‡b G aviYvi m„wó n‡jv †h, cweÎ KziAv‡bi Inx Ges c‡ei Inxi Dci Cgvb Avbvi K_v‡Zv KziAv‡b ewbZ n‡q‡Q, wKš' Avgvi Dci bv‡hjKZ.Inxi Dci Cgvb Avbvi K_v †Kb KziAv‡b ejv nqwb| hLb G welqwU wb‡q Avwg fvewQjvg ZLb Avjvn ZvAvjvi cÿ †_‡K BjKvi gva¨‡g Avgv‡K Rvbv‡bv nq †h, ÔIqvjvhxbv BDÔwgbybv wegv Dbwhjv BjvBKv Iqvgv Dbwhjv wgb Kvewj‡Kv Iqvwej Av‡LivwZ ûg BDwKbybÕ G AvqvZ wZbwUi K_vB D‡jL i‡q‡Q| Dbwhjv BjvBKv ej‡Z KziAv‡bi Inx Ges Iqvgv Dbwhjv wgb Kvewj‡K Øviv ceeZx bex‡`i Inx Avi wej Av‡Liv‡Z ej‡Z nhiZ gmxn gvIK` (Av.) Gi Dci bv‡hjKZ.Inx‡K eySvq| AwLivÔZ A_ n‡”Q hv c‡i Avm‡e| c‡i wK Avm‡e? c‡i Avmv ej‡Z eySvq †mB Inx hv KziAv‡bi c‡i bv‡hj n‡e|Õ

ûhyi e‡jb, G‡Z †Kvb m‡›`n †bB †h, AwLiv‡Zi GKwU A_ n‡”Q, kwi¯ I cÿ¯vi w`em, wKš' gmxn gvIK` (Av.) AwLiv‡Zi GB A_I K‡i‡Qb|

ûhyi e‡jb, G hyM A‡bK gmwR` wbwgZ n‡”Q| wKš' hviv hyM gmxn‡K gvb‡e Zviv ‡B mwZ¨Kvi A‡_© gmwR` Avev` Kivi †hvM¨| Avi gmwR‡`i gva¨‡gB g~Z: Avjvni mv‡_ m¤úK© mÿg n‡e| G hyM †Lv`v †cwiZ gnvcyiæl‡K gvbvi d‡j Avgv‡`i Rb¨ wbðqZv i‡q‡Q|| †Lv`vi KiæYvq Avgiv gmwR` Avev` Kivi †hvM¨Zv ARb K‡iwQ| GLb Avgv‡`i DwPZ `vexi cvkvcvwk DbZ ˆbwZK ¸Yvejx c`kb Kiv Ges mg‡qvc‡hvMx mrK‡gi gva¨‡g GB ¯Zš ˆewkó¨‡K a‡i ivLv|

ûhyi e‡jb, GLv‡b gmwR‡`i wbgvY KvR Avi¤¢ n‡j ¯’vbxq gvbyl G e‡j we‡ivwaZv K‡iwQj †h, GLv‡b Avng`x‡`i msL¨v Lye GKUv †bB, gmwR` evbv‡bvi `iKvi wK? AvR gmwR` wbwgZ nevi ci hw` Zviv †`‡L †h, Avng`xiv h_vixwZ bvgv‡h Avm‡Q, gmwR` Avev` Ki‡Q, G gmwR` †_‡K kvwš— I †mŠnv‡`i wkÿv cPwiZ n‡”Q Zvn‡j Zviv we‡ivwaZv †Q‡o kvwš— A‡šlY Avgv‡`i Rvgv‡Zi Avkq wb‡e| AvR Avgv‡`i ˆbwZK gvb GZ DbZ nIqv cÖ‡qvRb hv‡Z wekevmx †PvL eyR Avgv‡`i Dci wekvm ivL‡Z cv‡i, Avgv‡`i‡K fv‡jvev‡m Ges mgv‡Ri mKj †kYx †hb Avgv‡`i‡K Zv‡`i ïfvKvsLx g‡b K‡i|

hyM Bgvg nhiZ gmxn gvIK` (Av.)-Gi wewfb D×wZ.i Av‡jv‡K ûhyi Rvgv‡Zi Avcvgi m`m¨‡`i Cgvbx †PZbvq mgx× n‡q Bev`‡Zi DbZgvb cwZôvi Rb¨ J`vË AvnŸvb Rvbvb| Avi †Lv`v I ev›`vi cvc¨ AwaKvi c`v‡bi †ÿ‡Î hZevb n‡q RvZxi gvj¨evb As‡k cwiYZ nevi wb‡`k †`b|

Avjvn ZvAvjv Avgv‡`i mevB‡K KziAvb-nv`x‡mi wkÿv I hyM Bgv‡gi wb‡`kbv Abyhvqx‡i cweÎ Rxeb hvc‡bi †ZŠwdK w`b Ges †Lv`vi Kcv. jv‡f ab¨ Kiæb| (cvß m~: †K›`xq evsjv †W¯‹ jÛb)|

D‡jL¨, Rvgvb †`‡ki nvgeyM kn‡i 1957 mv‡j c_g gmwR` wbgvY Kiv nq| dR‡j Dgi bv‡g GB gmwR` nhiZ LjxdvZzj gmxn mvbx (iv.) D‡Øvab K‡ib| ZLb ûhyi (iv.) e‡jb-Avjvn ZvAvjv Rvgvbevmx RvwZ‡K Zwir BmjvgMnY Kivi †mŠfvM¨ `vb Kiæb| †hfv‡e Zviv Ro RM‡Zi †bZZ.w`‡”Qb †mfv‡e Zviv †hb Ava¨wZ¥K RM‡Zi †bZZ.I w`‡Z cv‡ib| *(Pj‡e)*

KwZ.QvÎx

weMZ Gm, Gm, wm cixÿv‡Z Avgvi fvMx †ivKmbv Avng` mPbv wRwcG 5 †c‡q DËxY n‡q‡Q, Avjnvg`wjjvn| †m weMZ 5g Aóg Aa¨qbiZ _vKvKvjxb ewË cixÿv‡Z mvaviY I 2q †M‡W ewË †c‡qwQj| ZvB mKj Avng`x fvB †evb eÜzevÜe Gi wbKU Lvmfv‡e †`vqvi Av‡e`b KiwQ| Avjvn ZvAvjv †hb Avgvi fwM‡K me‡ÿ‡Î mdj¨ agkw³, ¯§iYkw³, c‡Z¨K Ae¯’vq AwZ DËg fv‡e Avjvn KZKvh I mvdj¨gwÛZ K‡ib, Avgxb|

ˆmq` †Zvdv‡qj Avng`

KweZvt-

Dwbk kZ‡K Ag‡„Zi mÜvb

\ Rvdi Avng` \

gnvgwZ ey× Zuvg ï× AeZvi
Hkx †Zvgvi evYx
wngvj‡qi cv`‡`‡k i‡× †Kb AvRI
Avm‡e Zuvg Rwb|
Kgj‡jvPb †MvjKauvavq hw` Avm †b‡g
ï× Ki m‡e
Av‡iv fv‡jv hw` bv‡gv Avgv‡`i G AwPb Mu‡q
ab¨ ab¨ i‡e|
Kò.hxï Avcb RwZi gnvb AeZvi
w-`‡jb fv‡jvevmv
†Zgwb avivi Lyj‡Q gvbyl, RMr I msmvi
Adzi›š Avkv|
Kò.Av‡mb hyM hyM mvaývi cwiÎv‡Y
weMwjZ cv‡Y
Cmv gmxni Ak¤avivi cÖyivMg‡bi
Hkx digv‡b|
ï×Zg evYx wb‡q G‡jb gnvb bex
mKj gvbe ‡miv
gvbyl gvbyl bvB †f`v‡f` mKj gvbyl fvB
mevi Z‡i fv‡jvevmv
†Kvb we‡Øl bvB|

GKwU ms‡hvRbx

[weMZ 30 Ryb 2012 cwÿK Avng`xi msL¨vq ÔD_jx Rvgv‡Zi Aw` K_vÕ kxl©K wbe‡Üi †jLK wb‡gv³ ms‡hvRb c`vb K‡i‡Qb]

†h eyhM© e¨w³i ms¯ú‡k, hvi K_v KvR †ciYv I Drmv‡n Rbve Avgxi †nv‡mb mv‡ne cweÎ Avng`xqv wmjwmjvq `wLj n‡q †mŠfvM¨kvjx nb, fzj µ‡g †mB eyhM© e¨w³i bvgwU D‡jL Kiv nqwb| Avi GKUz Mfxi `„wóf½x wb‡q wPšv fvebv M‡elYv Ges wePvi we‡kølY Ki‡j †`Lv hvq †h Rbve Awgi †nv‡mb mv‡n‡ei eqAv‡Zi mb 1935 b‡n eis 1938|

Rbve Avgxi †nv‡mb mv‡ne hLb KòbMi K‡j‡Ri QvÎ wQ‡jb, ZLb KòbMi wbevmx gyiwjg ewi bvgK R‰bK e¨w³i mv‡_ Zvi eÜzZi m¤úK M‡o I‡V| Zv‡`i Df‡qi g‡a¨ wQj cMvp eÜzZi Pig eÜb| ZLb Zviv Df‡q wQ‡jb hyeK| DVv-emv, Pjv-wdiv, †Ljv-aŕv Zviv Df‡q GK mv‡_ Ki‡Zb| Rbve gyiwjg ewi mv‡ne wQ‡jb agcivqY mr mvaybg f`, webqx m`vjvcx mr Pwiθ GKRb eyhM© e¨w³| Zvi mv‡_ Avgvi cwiPq N‡U 1957 mv‡ji w`‡K PzqvWv½vq| †`k wefv‡Mi ci ¯‡`k fywgi gvqv KwU‡q wnRiZ KiZ wZwb PzqvWv½v kn‡i G‡m emevm ¯vcb K‡ib| wZwb wQ‡jb GKRb e¨emvqx| wZwb wQ‡jb GKRb mr mvnmx wbfxK e¨w³| Zejx‡Mi Kv‡R wZwb wQ‡jb Lye B Drmvnx| G m¤ú‡K Zvi g‡b †Kvb cKvi fqfxwZ wQj bv| †hLv‡bB †h‡Zb ZejxM Ki‡Zb| wZwb 1936 mv‡j eqAvZ MnY KiZ: cweÎ Avng`xqv wmjwmjvq `wLj nb| ZuiB KvQ †_‡K Rbve Avgxi †nv‡mb mv‡ne Rvb‡Z cv‡ib Av‡Lix Rvgvbvi cwZk"Z gnvcyi"l nhiZ Bgvg gvn`x I gmxn gvIDy` (Av.) Gi AvMgb evZv I nhiZ Cmv (Av.) Gi gZz¨-msev`| Lye m¤¢e wZwbB Rbve Awgi †nv‡mb mv‡ne‡K mv‡_ K‡i gIjvbv wRjøy ingvb mv‡n‡ei Kv‡Q wb‡q wM‡qwQ‡jb| meKQz †R‡b ey‡S I Rbve Avgxi †nv‡mb mv‡ne eqAvZ Mn‡Yi cieZx‡Z DwÌZ m¼Uve¯v Av¯v Ki‡Z †c‡i wØav-Ø‡›Ø cvq `ye ermi AwZewnZ K‡ib| AZ:ci Rbve gyiwjg ewi mv‡n‡ei K_vq †ciYv I Drmv‡n wZwb 1938 mv‡j eqAvZ MnY KiZ cweÎ Avng`xqv wmjwmjvq `wLj nb| Rbve gyiwjg ewi mv‡n‡ei mynvM¨cÎ Rbve Wv: iweDj nK mv‡ne eZgv‡b XvKvq emevm K‡ib| wZwb Avng`xqv gyiwjg RvgvZ, evsjv‡`‡ki `vZe¨ wPwKrmvj‡q wbqwgZ †nvwgI wPwKrmK I mnKvix †m‡µUvix wimZvbvZvi `wqZ cvjb Ki‡Qb|

* wkÿv Rxe‡b QvÎxiv c`v Ges †cvkvK m¤ú‡K KzAvb ki‡di wb‡`kbvejx K‡Vvi fv‡e †g‡b Pj‡e| hLb Avng`x †g‡q‡`i we‡qi eqm n‡q hvq, ZLb Zv‡`i we‡q w`‡q †`qv c‡qvRb| Zvici I cov‡kvbv Pvjv‡Z cvi‡e|

* QvÎ-QvÎxiv cwZw`b Kv‡m hv cov‡bv n‡q‡Q Zv ewo G‡m fvj K‡i c‡o wb‡e| `kg †kYxi QvÎ-QvÎxiv M‡„n wd‡i Kgc‡ÿ Pvi N›Uv cov‡kvbv Ki‡e| K‡jR wekwe`¨vj‡qi QvÎ-QvÎxiv N‡i Kgc‡ÿ Qq N›Uv cov‡kvbv Ki‡e| Av‡gwiKv‡Z wekwe`¨vj‡qi QvÎiv M‡o cwZw`b †PŠÏ N›Uv cov‡kvbv K‡i| wm‡jevm‡i evB‡ii eBI c‡o| BD‡iv‡c M‡o †Zi N›Uv Ges iwkqv‡Z M‡o cwZw`b evi N›Uv cov‡kvbv K‡i|

nhiZ Ljxdv‡Zzj gmxn Avj Lv‡gm (AvB.)

bexb‡`i cvZvt-

ighv‡b †ivhv ivLvi ¸iæZ I Zvrch

Gm, Gg, iwk`y Bmjvg

Bmjvg gyZ 5wU ¯‡¤¢i Dci cÖwZwôZ| Avi Gi g‡a¨ ¸iæZc~Y© †ivKb ev ¯¤¢ n‡jv wmqvg ev †ivhv| Pv›`ª-eQ‡ii beg gv‡mi bvg ÔighvbÕ| ighvb gv‡mi cÖ-bvg wQj Ôbv‡ZKÕ (Kv`xi)| ÔighvbÕ-kã‡U ÔighÕ gyj-avZz n‡Z G‡m‡Q| Gi A_© n‡jv wcÖcvmvq DËß nIqv| nhiZ gmxn gvIÕ` (Av.) e‡jb, Aviex fvIvq m‡ghi Zvc‡K ÔighÕ ejv nq| †ivhv Ggb GKwU eiKZgq gvm, †h-gv‡m gnvb Avjvn ZvAvjv kqZvb‡K wkKj-e× K‡i iv‡Lb| Avgiv †ivhvi gva¨‡g Avjvni ˆbKU¨ jvf Ki‡Z cvwi| GB cweÎ-gv‡m Ggb GKwU ivZ cvIqv hvq, †h ivZ nvRvi ivZ n‡Z †kô ivZ| hw` †Kn GB iv‡Zi eiKZ jvf K‡i, †m Avjvni ˆbKU¨ jvf Ki‡e, (BbkvAvjvn)|

nhiZ gyn¤§` (mv.) g°v †_‡K g`xbvq wnRi‡Zi wØZxq eQi gynvjvb‡`i Dci †ivhv diR Kiv nq|

gnvb Avjvn ZvAvjv KziAv‡b e‡j‡Qb, †n hviv Cgvb G‡bQ! †Zvgv‡`i Rb¨ †ivhv ivLv wewae× Kiv n‡jv, †hfv‡e †Zvgv‡`i c~e©eZx‡`i Rb¨ wewae× Kiv n‡qwQj, †hb †Zvgiv gyËvKx n‡Z cvi| (myiv evKviv : 184)

Avjvn ZvAvjv Cgvb`vi‡`i Rb¨ †ivhv ivLv wewae× K‡i‡Qb| GLv‡b, wb‡`©k-†gvZv‡eK c‡Z¨K Cgvb`vi-e¨w³i DwPZ, †ivhvi gv‡m †ivhv ivLv| †h-e¨w³ Avjvni GB wb‡`©k †gvZv‡eK †ivhv iv‡L bv †m Avjvni ˆbKU¨ jvf Ki‡Z cv‡i bv|

gnvb Avjvn ZvAvjv `qv ciek n‡q GB ing‡Zi-gvm Avgv‡`i‡K `vb K‡i‡Qb, †hb Avgiv Avgv‡`i mviv eQ‡ii cvc n‡Z gy³ cvB Ges AwaK cyY¨ ARb Ki‡Z cvwi| cyY¨ I †bwK AR©‡bi mKj DcKiY GB gnvb gv‡mi g‡a¨ wbwnZ| ZvB gyÕwgb-e¨w³i DwPZ, hZ †ewk m¤¢e GB gv‡m cyY¨ ev †bwK ARb Kiv|

†ivhvi ¸iæZ m¤ú‡K© nv`x‡m D‡jL Av‡Q, nhiZ Aveyûivqiv (iv.) eY©bv K‡i‡Qb, nhiZ im~jy Kixg (mv.) e‡j‡Qb, †h e¨w³ wekvm, AvšÍwiKZv I DËg mdjZvi Avkvq ighvb gv‡m †ivhv iv‡L Zvi c~‡e©i mKj cvc ÿgv Kiv n‡e (eyLvix, gymwjg) nhiZ Aveyûivqiv (iv.) eY©bv K‡i‡Qb, nhiZ ivm~‡j Kixg (mv.) e‡j‡Qb, m¤§vb I ghv©`vi-cfy Avjvn e‡jb, gvbyl©i Ab¨-me KvR Zvi wb‡Ri Rb¨, wKš‘ †ivhv GKvšÍB Avgvi Rb¨, Ges AvwgB Zv‡K cyi¯‹Z.Kie| †ivhv Xvj¯^iƒc †mB Avjvni bv‡g ejwQ, hvi nv‡Z gyn¤§‡`i Rxeb, †ivhv`vi‡`i gy‡Li MÜ Avjvni wbKU †gk‡Ki M‡Üi †P‡qI cweÎ| GKRb †ivhv`vi `yÕU-Avb›` jvf K‡i, †m Avbw›`Z nq, hLb †m †ivhv iv‡L Ges †ivhvi Kj¨v‡Y †m Avbw›`Z nq, hLb †m Zvi cfzi mv‡_ wgwjZ nqÓ (eyLvix, gymwjg)|

Dc‡i ewY©Z nv`xm Øviv eySv hvq †h, gvbyl©i wfZi mviv eQ‡ii cvc¸‡jv †ivhvi gv‡m †ivhv †i‡L Ges Avjvni Bev`Z K‡i cvc n‡Z euvPv hvq Ges Avjvni ˆbKU¨ jvf Kiv hvq|

nhiZ LjxdvZzj gmxn mvbx (iv.) †ivhvi D‡Ïk¨-m¤ú‡K© e‡j‡Qb, ÒAvgv‡`i †`‡n ˆ`wbK †h iƒnvbx-wel myó nq, Zv `~i Kivi Rb¨ Avjvn ZvAvjv GKwU e¨e¯'v K‡i‡Qb Ges mviv eQi †h-wel Rgv nq, Zv `~i Kivi Rb¨ Av‡iKwU e¨e¯'v K‡i‡Qb, A_©vr ˆ`wbK cuvP ev‡ii bvgv‡hi e¨e¯'v Ges ighv‡b GKgvm †ivhvi e¨e¯'v K‡i‡Qb| (Aj-dRj-1965)

nhiZ LjxdvZzj gmxn mv‡jm (iv‡n.) ighvb m¤ú‡K© e‡j‡Qb, Ôgv‡n ighvb cuvPwU Bev`‡Zi mgwó| c_gwU n‡jv †ivhv-ivLv, wØZxqwU diR-bvgvh Qvovl iw³ RvMiY K‡i bdj Bev`Z mgn-Av`vq Kiv| ZZxqwU, †ewk †ewk KziAvb †ZjvIqvZ Kiv, PZz_©wU, `vb LqivZ Kiv Ges cÂgwU n‡”QÑ ceÎ Ëi Kzi c‡ivPbv n‡Z cwiÎvY jv‡fi †Póv Kiv|

Dc‡ii Av‡jvPbv n‡Z GUv eySv hvq †h, Avjvn Zvui ev›`v‡K A‡bK †ekx fvjev‡mb| ZvB wZwb gvbyl‡i cwZ `qv ekZ GB gvm Avgv‡`i‡K `vb K‡i‡Qb, †hb gvbyl Zvi c‡ei cvc n‡Z †eu‡P bZzbfv‡e Avjvni Bev`Z K‡i| c‡Z¨K myš' I cvß eq¯‹ e¨w³i DwPZ GB cweÎ gv‡m †ivhv ivLv Ges †ewk †ewk cyY¨ ARb Kiv| Avjvn ZvAvjv Avgv‡`i mKj‡K GB cweÎ gv‡m †ewk †ewk Bev`Z Kivi mysh¨vM `vb Kiæb|

ms ev `

jvRbv BgvBjvn dZ‡qvi mxivZzb bex (mv.) Rjmv

MZ 01/06/2012 jvRbv BgvBjvn dZ‡qvi Av‡qvR‡b mxivZzb bex (mv.) Rjmv cvjb Kiv nq| c_‡g cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib gvngỳ Av³vi Ges nv`xm cvV K‡ib gwb gvgỳb| Avnv`bvgv cv‡Vi ci e³viv nhiZ gyn¤§` (mv.)-Gi Rxe‡bi wewfb w`K Zz‡j a‡ib| me‡k‡l mfv‡bÎxi mgvcbx e³Zv. I †`vqvi gva¨‡g Abyôvb †kl Kiv nq| G‡Z 19 Rb Dcw¯'Z wQ‡jb|

Zwjg ZiweqZx Kvm Abyôvb

jvRbv BgvBjvn dZ‡qvi Av‡qvR‡b MZ 19/05/2012 Zwi‡L wZb w`b e¨vcx Zwjg ZiweqZx Kv‡mi Av‡qvRb Kiv nq| G‡Z †gvU 22 Rb jvRbv I 11 Rb bv‡mivZ AskMnY K‡ib| G‡Z wewfb wel‡q Kvk I cixÿv †bqv nq| †kl w`b jvRbv I bv‡miv‡Z‡`i cyi¯‹Z.Kiv nq| cyi¯‹vi weZiY †k‡l †`vqvi ga¨ w`‡q Abyôvb mgvß Kiv nq|

^Zq¨ev iwdK

†ZiMvZx Rvgv‡Z wLjvdZ w`em cvjZ

MZ 27/05/2012 ZwiL iweevi ev` gvMwie n‡Z Avng`xqv gymwjg RvgvZ †ZiMvZxi D‡`¨v‡M wLjvdZ w`em Abyôvb nq| ¯'vbxq Rvgv‡Zi †cwm‡W›U Rbve ^mq` Av‡bvqvi Avjxi mfvcwZ‡Z Abyôv‡bi Kvhµg ïiæ nq| ïiæ‡Z cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib Avãyi ie L›`Kvi| bhg cwi‡ekb K‡ib Avkivdz AwkK †QvUb| nhiZ gmxn gvIDˆ` (Av.) Gi wZ‡ivav‡bi ci 27 †g D³ w`‡bi gvnvZ¥ I †mŠ›`h, wLjvd‡Zi ¸iæZ I Kj¨vY, eqAvZ Kivi ¸iæZ I Kj¨vY BZ¨w` wel‡q ¯'vbxq e³vMY AZ¨š— ÁvbMf e³e¨ c`vb K‡ib| e³vMY n‡jb meRbve gvngỳỳ nvQvb mvbx, G,we, wmwÏK, bvi¤j Bmjvg, bRiæj Bmjvg, †gŠ. ewki Avng`| D³ mfvi mgwß I †`vqv cwi‡ekb K‡ib ¯'vbxq Rvgv‡Zi †cwm‡W›U| G‡Z †gngvbmn †gvU 82 Rb Dcw¯'Z wQ‡jb|

^mq` †Zvdv‡qj Avng`

jvRbv BgvBjvn †ZiMvZxi 2q ewlK BR‡Zgv Abyôvb

jvRbv BgvBjvn †ZiMvZxi D‡`¨v‡M MZ 20 Ryb 2012 2q ewlK BR‡Zgv Abyôvb nq| D³ BR‡Zgvq wjwLZ cixÿv, KziAvb †ZjvIqvZ, bhg Ges e³Zv.i cwZ‡hvwMZv ‡bqv nq| ¯'vbxq jvRbv †cwm‡W›U Gi mfvcwZ‡Z BR‡Zgvi Kvhµg ïiæ nq| we‡K‡j cyi¯‹vi weZiY Kiv nq Ges †`vqvi gva¨‡g BR‡Zgvi mgwß †NvlYv Kiv nq| BR‡Zgvq 63 Rb jvRbv Ges 11 Rb bv‡mivZ Dcw¯'Z wQ‡jb|

kvwnbv Av³vi

†n‡jÂvKzo Rvgv‡Z wLjvdZ w`em cvjZ

Avjvn ZvAvjvi dR‡j †n‡jÂvKzo Rvgv‡Z MZ 8 Ryb 2012 ev` RygAv Rbve Avjgvm †nv‡mb Lvb Gi mfvcwZ‡Z wLjvdZ w`e‡mi Av‡jvPbv mfv Kiv nq| ïiæ‡Z cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib bv‡mi Avng` iv‡mj| bhg cwi‡ekb K‡ib gmxDj Avjg Lvb †kvfb| Bmjv‡g wLjvd‡Zi ¸iæZ I Kj¨vY Ges GgwUG GKwU fwel¨ØvYxi cY©Zv Gme wel‡qi Dci e³Zv. K‡ib meRbve AwkKzi ingvb, †g‡n`x nvmvb, †gŠ. kvnAvjg Lvb Ges Avãym mvgv` gvóvi| †k‡l ¯'vbxq †cwm‡W›U Gi mviMf e³Zv.i ci †`vqvi gva¨‡g mfv †kl nq|

kvnAvjg Lvb

jvRbv BgvBjvn MvRxcyi gmxn gvIDˆ` (Av.) w`em cvjb

MZ 30/03/2012 Zwi‡L MvRxcyi gmxn gvIDˆ` (Av.) w`em cvjb Kiv nq| Abyôv‡bi ïiæ‡Z cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib gvngỳ nK, †`vqv cwiPvjbv K‡ib jvRbvi †cwm‡W›U †mwjbv gvngỳ, nv`xm cvV K‡ib Avd‡ivRv Av³vi wgwj, gvjdzwZ c‡o ïbvb Bjv, bhg cvV K‡ib dv‡Zgv nK| G‡Z nhiZ gmxn gvIDˆ` (Av.)-Gi Rxe‡bi wewfb w`K wb‡q chvqµ‡g e³e¨ iv‡Lb ggZvR †eMg, dv‡Zgv nK Ges mv‡jnv †eMg| †`vqvi gva¨‡g Abyôv‡bi mgwß nq|

Zvjxg ZiweqZx Kvm Abyôvb

MZ 18 I 19 †g 2 w`b e¨vcx Zwjg I ZiweqZx Kvm Abyôvb nq| c_g w`b Kv‡mi Kvhµg ïiæ nq ïµevi weKvj 3 n‡Z 5Uv chš—| G‡Z bv‡miv‡Zi wm‡jevm m¤ú‡K avibY I Av‡jvPbv Kiv nq| 2q w`b ïiæ nq mKvj 10Uv †_‡K weKvj 5Uv chš— Abyôvb nq| †`vqvi gva¨‡g Kv‡mi Kvhµg †kl nq|

dv‡Zgv nK

jvRbv BgvBjvn Lyjbvi 24Zg ewlK BR‡Zgv Abyôvb

MZ 8 I 9 Ryb 2012 Zwi‡L jvRbv BgvBjvn Lyjbvi 24Zg ewlK BR‡Zgv evqZzi ingvb gmwR‡` Abyôvb nq| BR‡Zgvi mfv‡bÎx wQ‡jb AvÄygvbviv iv¾vK, †cwm‡W›U, jvRbv BgvBjvn Lyjbv| cavb AwZw_ wQ‡jb `xbv bvmwib, gyiwËm Lyjbv AÂj| BR‡Zgvi ïiæ‡Z cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib Avqkv †Kvgj †mZz nv`xm cvV K‡ib †Kvi‡qkv gv‡R`, †`vqv cwiPvjbv K‡ib cavb AwZw_| Gici jvRbv †evb‡`i D‡Ï‡k¨ bmxnZg~jK e³Zv. c`vb Kiv nq| BR‡Zgvq KziAvb †ZjvIqvZ, bhg, e³Zv, Øxwb gvjygvZ wjwLZ I †gŠwLK, KzBR I †LjvaywjvÕ cwZ‡hvwMZv †bIqv nq| †k‡l cyi¯‹vi weZiY I †`vqvi gva¨‡g Abyôv‡bi mgwß †NvlYv Kiv nq| BR‡Zgvq 58 Rb Dcw¯'Z wQ‡jb|

†ivKmvbv gÄyi

13Zg IqvK‡d bI Zvjxg ZiweqZx Kvm I m‡¤§jb AbywôZ

Avng`xqv gymwjg RvgvZ bvivqYM‡Äi 13 Zg IqvK‡d bI Zvjxg ZiweqZx Kvm h_vh_ fv‡e Avjvn ZvAvjvi dR‡j m¤úb nq| MZ 5/5/2012 †ivR kwbevi Kv‡mi D‡Øvab K‡ib b¨vkbvj †m‡µUvix Rbve nvjxg Avng` nvRvix| Kv‡mi wkÿKZv K‡ib dZzjv Rvgv‡Zi †gvqv‡jg †gš. gymvwn¤§` Avgxi †nv‡mb I Ab¨vb¨iv|

11/5/2012 m‡¤§jb AbywôZ nq| D³ m‡¤§j‡bi mgvwß Awa‡ek‡bi mfvcwZZ K‡ib †gvnZig gxi †gvev‡ki Avjx, bv‡qe b¨vkbvj Avgxi-1, Avng`xqv gymwjg RvgvZ evsjv‡`k| G‡Z KzAvb †Zjv‡qvZ K‡ib MvRvjv KvIm vi, bhg cvV K‡ib iængv Avng`| G‡Z e³e¨ iv‡Lb b¨vkbvj †m‡µUvix IqvK‡d bI, ¯vbxq Avgxi Ges ¯vbxq †m‡µUvix IqvK‡d bI| cwZ‡hvMx‡`i g‡a¨ cyi¯‹vi weZiY I †`vqvi gva¨‡g mfvi mgvwß N‡U| D‡jL¨ †h, D³ m‡¤§j‡b †gvU 60 Rb IqvK‡d bI mšÍvb, Awffve K, †gngvb I mswkó Ab¨vb¨ m`m¨ Dcw¯'Z nb|

gmxn gvIDd` (Av.) w`em I ZewjMx †mwgbvi

nhiZ gmxn gvIDd` (Av.) w`em I ZewjMx †mwgbvi, Avjvn ZvAvjvi Acvi Abyl‡n h_v‡hvM¨ gh©v`vi mv‡_ AbywôZ nq| GB Abyôv‡b cweÎ KzAvb †_‡K †Zjv‡qvZ K‡ib Rbve Av³vi †nv‡mb, D`ybhg cwi‡ekb K‡ib myiZvb gvngy` Av‡bvqvi| e³vMY weweb ¸iæZc~Y© wel‡q e³e¨ iv‡Lb| e³vMY n‡jb †gš. nv‡dR Aveyj Lv‡qi, gIjvbv RwniDwÏb Avng`, Rbve AveyRwwKi, gIjvbv †mv‡jgvb myjb Ges mfvcwZ gCb DwÏb Avng`| mfvi †kl‡c‡k †h‡i ZejxM fvB-†evb‡`i wb‡q ck-DËi ce AbywôZ nq| D³ Abyôv‡b 24 Rb †h‡i ZejxM fvB I 12 Rb †evb mn me‡gvU 121 Rb Dcw¯'Z wQ‡jb| †`vqvi gva¨‡g mfvi KvR mgvß nq|

†gvnv¤§` †gv¯dv cv‡UvIqvix

9g ¯vbxq BR‡Zgv AbywôZ

MZ 29 Ryb 2012 †ivR ïµevi gRwjm Avbmvi"æjvn ôD_jx evqZzi ingvb gmwR`- cv½‡b Zvnv¾y`i gva¨‡g 9g ewlK ¯vbxq BR‡Zgvi Kvhµg ïiæ nq| mKvj 9 NwUKvi mgq m`i mv‡n‡ei cwZwbwa Rbve †gvnv¤§` Avãyi Mdzi wiwRIbvj bv‡hg Lyjbv wiwRI‡bi mfvcwZ‡Z BR‡Zgvi D‡Øvabx Abyôvb ïiæ nq| cweÎ KzAvb †Zjv‡qvZ K‡ib Rbve †gvnv¤§` i¯cPù wgqv, ¯iwPZ bhg cwi‡ekb K‡ib Rbve †gvnv¤§` m`i Avjx| BR‡Zgvq †hvM`vbKvix‡`i D‡Ï‡k¨ ¯vMZ e³Zv. c`vb K‡ib Rbve kvnxbyi ingvb| BR‡Zgvi ¸iæZ I D‡Ïk¨ wb‡q we¯wiZ e³Zv c`vb K‡ib †gš. †gvRvddi Avng` ivRy bwmnZg~jK e³e¨ c`vb K‡ib Rbve mvjvn DwÏb| 13 Rb Avbmvi m`m¨ BR‡Zgvq AskMnY K‡ib| Abyôv‡bi †k‡l mfvcwZi e³e¨, Avnv` cvV Ges †`vqv cwiPvjbvi gva¨‡g BR‡Zgvi Abyôvb mgvß nq|

†gvnv¤§` kvnxbyi ingvb

PÆMvg Rvgv‡Z mdjZvi mv‡_ ZejxM Avkvivi cvjb I RvKRgKc~Y© fv‡e wLjvdZ w`em cvjb

†K›`ªxq mvKzvi †gvZv‡eK MZ 12 †g n‡Z 20 †g 2012 chš— †gvU `k w`b ZejxM Avkviv w`em AZ¨š— mdjZvi mv‡_ PUMvg Rvgv‡Z e¨¯evqb Kiv nq| GB ZejxM Avkvivq PÆMvg RvgvZ 1405 Rb †gngvb‡K ZejxM K‡i| GQvov 1050wU Rvgv‡Zi cwiwPwZ m¤^wjZ wbawiZ †dvìvi weZiY Kiv nq| D‡jL¨ †h, D³ ZejxM Avkviv PjvKvjxb 4 Rb eqAvZ n‡q‡Q|

MZ 15 Ryb n‡Z 24 Ryb 2012 chš— 2q Avkvivq †`vqv, m`Kv, cwiKíbv gva¨‡g ïiæ nq| GB Avkvivq PÆMv‡g cvnvo am I Uvbv eyóc‡Zi Kvi‡Y cwb e›`x `kvq eyó ev`j nIqvq ZejxM KvR K‡g wKQzUv axi MwZ G‡m‡Q| GQvov 534wU †dvìvi Ges 25wU Ab¨vb¨ †dvìvi I eB cyÜK weZiY Kiv n‡q‡Q|

Avjvn ZvAvjvi dR‡j MZ †g gv‡m Òm‡Z¨i mÜv‡bÓ Abyôvb›U mdjfv‡e m¤úb n‡q‡Q| PÆMv‡g 74wU ms‡hvM †_‡K `kK †kvZvMY D³ Abyôvb›U Dc‡fvM Kivi my‡hvM †c‡q‡Q| cvq 228 Rb Rvgv‡Zi m`m¨ Ges 22 Rb †gngvb mn †gvU 250 Rb D³ Abyôvb †`Lvi my‡hvM †c‡q‡Q|

MZ 27 †g wLjvdZ w`em RvKRgKc~Y© (Av‡jvKm¾vmn) fv‡e h_vixwZ cvjZ n‡q‡Q| GB Abyôv‡b 26 Rb †gngvb Dcw¯'Z wQ‡jb| D‡jL¨ †h, PÆMvg Rvgv‡Zi cvnvoZjx nvjKvq †Kej †bU IqvK Gi gva¨‡g GgwUG Gi ms‡hvM Kivq cvq 3500wU ms‡hvM myó n‡q‡Q Ges Av‡kcv‡ki GjvKvq AviI 5000ms‡hvM myó Kivi my‡hvM n‡q‡Q| GB e¨vcv‡i hviv KvR K‡i‡Qb Zv‡`i‡K Avjvn ZvAvjv cyi¯‹Z. Kiæb| Av‡iv D‡jL¨ †h, PKevRvi nvjKvi wewe invU GjvKvq weivU GKwU As‡k GKRb K¨vej Acv‡iU‡ii gva¨‡g Avgv‡`i GgwUG m¤úPwiZ n‡"Q|

gymvwn¤§` nvmvb

wdZivbv I wdw`qv wbaviY

Gev‡i wdZivbv avh¨ Kiv n‡q‡Q 100/- (GKkZ) UvKv Avi AcviM‡`i Rb¨ 50/- (cÂvk) UvKv|

wdw`qv kni AÂ‡ji Rb¨ 1500/- (GK nvRvi cuvPkZ) UvKv| Avi Mvg AÂ‡ji Rb¨ 1200/- (GK nvRvi `yBkZ) UvKv|

jvRbv BgvBjvn Avng`bM‡i ZejxwM mfv Abyôvb

MZ 23/06/2012 jvRbv BgvBjvn Avng`bM‡ii D‡`¨v‡M AZ¨š— mdjZvi mv‡_ ZewjMx Abyôvb Abyôvb nq, Avjnvg`ywjjvn| ïiæ‡Z cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib ZvQwjgv †eMg, bhg cvV K‡ib AvgvZzb mvgx| G‡Z wewfbœ wel‡q e³e¨ iv‡Lb Avd‡ivRv gwZb, wejwKm Zv‡ni, ZvQwjgv IqvwReyjvn| cwi‡k‡l ck DËi ce Ges †`vqvi gva¨‡g D³ ZejxwM Abyôv‡bi mgvwß nq| D³ Abyôv‡b 21 Rb A-Avng`x, 37 jvRbv m`m¨v I 14 Rb bv‡mivZ Dcw¯Z wQ‡jb| GQvov MZ 15 Ryb n‡Z 24 Ryb chš— 10 w`b †K‡›`ªi wb‡`©k Abyhvqx jvRbv BgvBjvn Avng`bM‡i we‡kl ZewjMx Avkvi cvjb Kiv n‡q‡Q, Avjnvg`yjjvn| D³ mg‡q me‡gvU 229 Rb‡K Avng`xqv gymwjg Rvgv‡Zi evYx †cŠu‡Q‡bv nq Ges 40wU wjd‡jU weZiY Kiv nq|

wgjv cvUIqvix

KZ©e¨ QvÎx

kvš—v ingvb 2012 mv‡ji Gm, Gm, wm cixÿvq DËiv nvB ¯‹zj GÛ K‡jR XvKv-1230 n‡Z wRwcGÑ5 †c‡q DËxY© n‡q‡Q, Avjnvg`yjjvn| gnvb Avjvn ZvAvjv Zvi co‡jLvi G avivevwnKZv Rvwi ivLyb, †m †gvnv¤§` †gvRwn`yi ingvb f‚Tv Ges mvjgv LvZzb Gi eo †g‡q| †m evmv`ªe wbevmx giûg †gvnv¤§` Lwjjyi ingvb f‚Tvi bvZbx| †m mK‡ji †`vqvcÖv_x©|

ZewjMx mfv Abyôvb

MZ 30/06/2012 Zvwi‡L `vC Bjvjvn KZ…©K Av‡qvwRZ ZewjMx mfv XvKv eKkx evRvi `viæZ ZejxM Kg‡c· ev` Avmi Abyôvb nq| kiæ‡Z cweÎ KziAvb †Z‡jvIqvZ K‡ib Rbve wgbnvRyi ingvb| AvMZ †gngvb‡`i wewfbœ c‡ki DËi c`vb K‡ib gIjvbv Avãyj AvDqvj Lvb †PŠayix Ges gIjvbv kvn †gvnv¤§` bywiæj Avgxb| mfvq Av‡iv Dcw¯Z wQ‡jb b¨vkbvj †m‡µUvix ZewjM Rbve Zvmv‡Ïv K †nv‡mb| G‡Z 23 Rb †gngvb Dcw¯Z wQ‡jb| †`vqvi gva¨‡g ZewjMx mfvi Kvhµg mgvß nq|

mvjvDÏxb gvngy` Avng`

ZvnixK-B-Rv`x` Gi Pùv Av`vq cm‡½

mvivwe‡k¦ Bmjv‡gi cPv‡ii j‡ÿ¨ 1934 m‡b nhiZ LjxdvZzj gmxn mvbx (iv.) KZ…©K GB ZvnixK-B-Rv`x` †NvlYvi ci A‡jŠwKK fv‡e Gi we¯—vi N‡U P‡j‡Q| †`‡k †`‡k weagxiv Bmjvg Mnb‡Yi mybvM cv‡”Q| G Zvnix‡K Pùv w`‡Z †c‡i Avgiv Avjvni gnvb D‡Ïk¨ (mKj a‡gi Dci Bmjv‡gi weRq) ev¯—evq‡b AskMnY Kivi †mŠfvM¨ cvw”Q| GB Pùvq cvq 200wU †`‡k gmwR`, wgkb, ¯‹zj, K‡jR, gv`vmv, nvmcvZvj, 100wUiI †ewk fvlvq KziAvb ZiRgv, MTA Gi gva¨‡g Bmjv‡gi eвb:we‡k¦ cPv‡ii KvR Pj‡Q|

GB ZvnixK m¤ú‡K© nhiZ Lj×dvZzj gmxn mvbx (iv.) e‡jb, Ò.....Avwg Avjvn ZvAvjvi Kv‡Q GB ZvnixK‡K cwic~Y©Zvi Rb¨ †mvc` K‡iwQ| G KvR ZviB, Avwg †Kej GK bMY¨ Lv‡`g| K_v Avgvi wKš' Av‡`k Zuvi|Ó (LZev Ryg&Av 15 b‡f¤^i, 1935)

wZwb Avi I e‡jb, Òwbm‡›`‡n Avjvn ZvAvjv G ¯‹xg Avgvi ü`‡q bvwhj K‡i‡Qb, Avi Avwg G‡K Rvgv‡Zi mvg‡b Dc¯vcb K‡iwQ| mÜvi‡s GUv †Lv`v ZvAvjvi bvwhjKZ… ZvnixK|Ó (Avj dhj, 2 †m‡Þ¤^i, 1942)

ZvnixK-B-Rv`x` Gi Pùvi ¸iæZ Dcjwäi Rb¨ Dc‡iv³ `yÕ D×³ Dc¯vcb Kiv nj|

Avng`xqv gymwjg RvgvZ, evsjv‡`‡ki ZvnixK-B-Rv`x` Pùv `vZv hviv ighvb gv‡mi 20 Zvwi‡Li g‡a¨ (20 ighvb) m¤ú~Y© cwi‡kva Ki‡eb Zv‡`i bv‡gi ZvwjKv nhiZ Lj×dvZzj gmxn Avj L‡gm (AvB.) Gi wbKU †`vqvi Rb¨ †ciY Kiv n‡eÑBbkvAvjvn| cwZ erm‡ii b¨vq Gevi I mK‡ji wbKU GB L‡Z †ek †ekx Pùv c`v‡bi Rb¨ webxZ Abyiva iBj|

g‡b ivL‡eb, beRvZK †_‡K e„× KvD‡KB Gi dwRjZ †_‡K ewÂZ Ki‡eb bv| †h †Kvb cwigvY †nvK bv †Kb c‡Z¨‡Ki AsMnY wbwðZ Kivi Rb¨ wb‡`©kbv i‡q‡Q| bI‡gvevCb‡`i I GKB fv‡e kixK Kiæb| g„Z wcZv-gvZv, `v`v-`v`x ev wbKU AvZ¥xq-¯R‡bi bv‡g GB Pùv w`‡q Zv‡`i‡K I RxweZ ivLvi wb‡`©k i‡q‡Q|

c‡Z¨K ¯vbxq Rvgv‡Zi Avgxi/‡cwm‡W›U Gi Kv‡Q Abyiva-msMÖnxZ Pùvi wnmve d¨· †hv‡M ev B-†gB‡j ev †Uwj‡dv‡b Pùv `vZvi msL¨v I †gvU Pùv D‡jL K‡i AvMvgx 21 ighv‡bi g‡a¨ †K‡›`ª †ciY Kiæb|

gwmn Di ingvb
†m‡µUvix ZvnixK-B-Rv`x`
Avng`xqv gymwjg RvgvZ, evsjv‡`k|
†gvevBj bs-01914-010969, 01917-550239, †d· bs- 0088-02-7300925

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

বাংলাদেশে আহমদীয়া মুসলিম জামা'ত প্রতিষ্ঠার শতবার্ষিকী জুবিলী ২০১৩ পালনের জন্যে দোয়া ও ইবাদতের আধ্যাত্মিক কর্মসূচী

১ প্রত্যেক মাসে একটি নফল রোযা রাখুন। এজন্যে প্রত্যেক জামাতে স্থানীয়ভাবে মাসের শেষ সপ্তাহে একদিন নির্ধারিত করে নিন।

২ প্রত্যেকদিন দু' রাকাআত নফল নামায (ইশার পর থেকে ফজরের আগ পর্যন্ত অথবা যুহরের নামাজের পর) আদায় করুন।

৩ সূরা ফাতিহা কমপক্ষে প্রত্যহ সাতবার পাঠ করুন।

৪ রাব্বানা আফ্‌রিগ আলাইনা সাব্‌রাওঁ ওয়াসাব্বিত আক্বদামানা ওয়ানসুরনা আলাল ক্বাওমিল কাফিরীন [সূরা বাকারা ঃ ২৫১] প্রত্যহ কমপক্ষে ১১ বার পাঠ করুন।

অর্থ ঃ হে আমাদের প্রভু-প্রতিপালক! তুমি আমাদেরকে অগাধ ধৈর্য দান কর এবং আমাদেরকে দৃঢ়তা প্রদান কর এবং কাফির জাতির বিরুদ্ধে আমাদেরকে সাহায্য কর।

৫ রাব্বানা লা তুযিগ কুলূবানা বা'দা ইয্ হাদাইতানা ওয়া হাবলানা মিল্লাদুনকা রাহমাতান ইন্নাকা আনতাল ওয়াহ্‌'হাব [সূরা আলে ইমরান- ৯] প্রত্যহ কমপক্ষে ৩৩ বার পাঠ করুন।

অর্থ ঃ হে আমাদের প্রভু-প্রতিপালক! তুমি আমাদেরকে হেদায়াত দেয়ার পর আমাদের হৃদয়কে বক্র হতে দিও না এবং তোমার নিজ সন্নিধান থেকে আমাদেরকে রহমত দান কর; নিশ্চয় তুমিই মহান দাতা।

৬ আল্লাহুম্মা ইন্না নাজআলুকা ফি নুহূরিহিম ওয়া না'উযুবিকা মিন শুরূরিহিম [আবূ দাউদ ঃ কিতাবুস সালাত] প্রত্যহ কমপক্ষে ১১ বার পাঠ করুন।

অর্থ ঃ হে আল্লাহ! নিশ্চয় আমরা [অবিশ্বাসীদের মোকাবেলায়] তোমাকে তাদের অন্তরে [ঢালস্বরূপ] রাখছি আর তাদের অনিষ্ট থেকে তোমার আশ্রয় প্রার্থনা করছি।

৭ আস্‌তাগফিরুল্লাহা রব্বি মিন কুল্লি যাম্বিওঁ ওয়াআতুবু ইলায়হে। প্রত্যহ কমপক্ষে ৩৩ বার পাঠ করুন।

অর্থ ঃ আমি আমার প্রভু-প্রতিপালক আল্লাহতাআলার নিকট আমার সমুদয় পাপ হতে ক্ষমা প্রার্থনা করি এবং তারই সমীপে প্রত্যাবর্তন করি।

৮ সুবহানাল্লাহি ওয়া বিহামদিহী সুবহানাল্লাহিল আযীম আল্লাহুম্মা সল্লি 'আলা মুহাম্মদিওঁ ওয়া আলি মুহাম্মদ। (প্রত্যহ কমপক্ষে ৩৩ বার পাঠ করুন)

অর্থ ঃ আল্লাহ্‌তাআলা তাঁর প্রশংসাসহ অতি পবিত্র। তিনি অতি পবিত্র অতি মহান। হে আল্লাহ্‌! মুহাম্মদ (সঃ)-এর প্রতি ও তাঁর অনুসারীদের প্রতি আশিস বর্ষণ কর।

৯ দুরূদ শরীফ। (প্রত্যহ কমপক্ষে ৩৩ বার পাঠ করুন)

ûhi- (আইঃ)-এর এই আহ্বান বাস্তবায়ন করার জন্য স্থানীয় জামাত ও জামাতের সমস্ত অঙ্গ সংগঠনকে বিশেষ ভাবে অনুরোধ করা যাচ্ছে।

বাংলাদেশে আহমদীয়া মুসলিম জামা'ত প্রতিষ্ঠার শতবার্ষীকি জুবিলী ২০১৩ ন্যাশনাল কমিটি কর্তৃক প্রকাশিত
আহমদীয়া মুসলিম জামা'ত, বাংলাদেশ, ৪ বকশী বাজার রোড, ঢাকা-১২১১।